ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

आश्विन-कार्तिक, संवत् नानकशाही ५४२
अक्तूबर 2010   वर्ष ४ अंक २

संपादक   *सहायक संपादक*
सिमरजीत सिंघ   सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए., एम. एम. सी.   *एम. ए. (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-57-58-59-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै ॥
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥ (पन्ना ३०५-०६)

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी महाराज गउड़ी की वार म: ४ में अंकित इस पावन सलोक के माध्यम से एक आदर्श सिक्ख के नित्य-प्रतिदिन के सद्‌गुणों भरे कार-विहार का वर्णन करते हुए समस्त सिक्ख समुदाय को सिक्खी मार्ग को अमल अथवा व्यवहार में अपना कर मनुष्य-जीवन सफल करने का रास्ता दर्शाते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जो भी अपने आप को गुरु का सिक्ख कहलवाता है अथवा वह सिक्ख पंथ का स्वयं को एक अंग मानता है, उसका सर्वप्रथम गुण अथवा इच्छित व्यवहार यही है कि वह नित्य-प्रतिदिन उठकर प्रभु-नाम को स्मरण करे। गुरु का सिक्ख प्रतिदिन उद्यम करता है। वह शारीरिक स्नान करता है और तत्पश्चात प्रभु-नाम के अमृत-सरोवर में मन-आत्मा को भी पवित्र करता है। दूसरे शब्दों में एक सिक्ख के लिए प्रात: उठना और उठ कर मालिक को याद करना परम आवश्यक है। मालिक को याद करने से अमृत वेला को सही अर्थों में उपयोगी बनाया जा सकता है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि गुरु की शिक्षा को लेना और जुबान से मालिक के नाम को दोहराना जरूरी है। यही सुकर्म है जिससे विकार और बुरे विचार, भाव तथा ख्याल दूर हो जाते हैं। एक आदर्श सिक्ख की यह विशेषता होती है कि जब दिन पूर्णत: निकल आये वह तब भी गुरबाणी का ही गायन करे और अपने दिन के कार-विहार अथवा व्यवसाय या किरत को करते हुए भी प्रभु-नाम को स्मरण करे। सारा दिन ही जो प्रभु-नाम को श्वास और हरेक निवाले के साथ अथवा कुछ भी खाने से पूर्व अथवा खाते हुए अपनी वृत्ति में टिकाये रखता है, ऐसा ही सिक्ख 'गुरसिक्ख' कहा जाता है और गुरु को अच्छा लगता है अथवा गुरु की कृपा का पात्र होता है।

अंत में गुरु पातशाह जी फरमान करते हैं कि जिस सिक्ख पर मालिक की कृपा होती है उसको ही गुरु अपनी निर्मल सीख बख्शिश करता है अथवा उपर्युक्त व्यवहार गुरु-उपदेश के अनुरूप उसी का हो सकता है। दूसरे शब्दों में हमारा आत्मिक कल्याण प्रभु-कृपा और सच्चे गुरु के साथ साक्षात्कार होने पर ही संभव है। ऐसे आदर्श सिक्ख को इतना सराहा गया है कि गुरु जी कहते हैं कि उपर्युक्त व्यवहार वाले सिक्ख की चरण-धूलि मांगनी चाहिए जो स्वयं प्रभु-नाम स्मरण करता हुआ दूसरों को भी यह स्मरण क़राता है अथवा उस गुरसिक्ख को देखकर दूसरे सिक्ख भी इस निर्मल नित्य-प्रक्रिया की ओर प्रेरित होते हैं और इस प्रकार निर्मल गुरसिक्खी का प्रसार होता है।
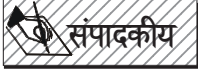
आओ! श्री गुरु रामदास जी के जीवन तथा व्यक्तित्व से 'नम्रता' का गुण लें!

सदा सुहावी नगरी श्री अमृतसर को बसाने वाले चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी महाराज का सारा जीवन बेहद आश्चर्य से भरा है। गुरु पातशाह जी की बाल्यावस्था, किशोर अवस्था और युवावस्था के ऐतिहासिक वृत्तांत पढ़-सुन कर पाठक-श्रोता का आश्चर्य के मनोभाव में पहुंचना अथवा भाव-विभोर हो जाना स्वाभाविक है। आपका व्यक्तित्व मानवी गुणों के एक असीम भंडार के रूप में दृष्टव्य होता है। अन्य अनेकों गुणों के साथ-साथ गुरु पातशाह जी के व्यक्तित्व एवं प्रकृति में नम्रता का गुण अपने असीम दर्जे पर दिखाई देता हुआ हमें ऊंचा विस्माद प्रदान करता है।

व्यक्तित्व, चरित्र एवं प्रकृति में किसी विशेष गुण का संचार जहां उस परमात्मा की बख्शिश होता है वहां इसके पीछे संबंधित व्यक्ति की जीवन-परिस्थितियां भी कार्य करती हैं। सतिगुरु पातशाह जी के जीवन की परिस्थितियां अत्यंत विकट थीं, परंतु इनमें से उभर कर भी आप चौथे गुरु के रूप में गुरगद्दी पर विराजमान हुए। आपके गुरगद्दी-काल में सिक्ख धर्म का अत्यधिक फैलाव हुआ।

माता-पिता की पहली संतान होने के नाते आपका नाम 'जेठा जी' प्रचलित हुआ। यह स्मरण रहे कि आपका जन्म आपके माता-पिता के विवाह के १२ वर्ष पश्चात हुआ था, अत: आप माता-पिता के विशेष मातृ-पितृ-प्यार-स्नेह के पात्र बने। आपके जन्म के बाद आपके एक छोटे भाई हरिदयाल और उनसे छोटी बहन रमदासी का जन्म हुआ। पहले माता जी और फिर पिता जी का साया सिर से उठ जाने के कारण ये तीनों बाल अनाथ हो गए। पैतृक खानदान ने इन अनाथ बच्चों को कोई संरक्षण न दिया। बहन-भाई से आयु में बड़े होने के नाते भाई जेठा जी पर दोनों के संरक्षण तथा पालन-पोषण की भारी जिम्मेदारी आ पड़ी। इस सूरतेहाल में बच्चों की नानी-मां बच्चों को अपने साथ बासरके गांव में ले आयीं। ननिहाल की आर्थिक स्थिति अधिक अच्छी न होने के कारण तीनों बच्चों के लिए परिस्थितियां काफी विकट बन गईं।

चूंकि ननिहाल में पहले ही निर्धनता थी इसलिए संवेदनशील और सूझ-बूझ के धारक भाई जेठा जी ने ननिहाल पर बोझ बनना ठीक न समझते हुए छोटी आयु में ही किरत-कमाई करने की रुचि एवं रुझान दर्शाया। नानी-मां रात को चने भिगो कर प्रात: उठकर उबाल देतीं और भाई जेठा जी गांव-गांव घूम कर इन्हें बेच आते। ऐतिहासिक साखियां हमें कई विस्तृत विवरण इस प्रसंग में देती हैं कि कैसे भाई जेठा जी घुंगनियां बेचते वक्त, साधुओं, संतों तथा भूख से बेहाल निर्धन लोगों को कई बार बिना पैसे लिये घुंगनियां दे देते। आपको अपने इस परोपकारी स्वभाव तथा व्यवहार के कारण निर्धनता से अधीर अपने नाना जी के गुस्से को भी सहन् करना पड़ा। इस प्रकार आपके व्यक्तित्व तथा प्रकृति में सहन्शीलता, संयम, नम्रता के गुणों का अत्यधिक विकास होता चला गया।

यह वो समय था जब तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी महाराज गोइंदवाल में गुरगद्दी पर विराजमान थे और सिक्ख धर्म का दायरा बढ़ रहा था। श्री गुरु अमरदास जी का पैतृक गांव बासरके होने के, कारण भाई जेठा जी के आपकी दयालु दृष्टि के विशेष पात्र बनने का

आधार बना। श्री गुरु अमरदास जी ने देखा कि भाई जेठा जी कई वर्षों से निर्मल किरत-कार करते आ रहे हैं। गुरु जी ने इनके गुणों और गुरु-घर के प्रति इनकी सेवा, इनकी समर्पण-भावना को देखते हुए इनको गुरगद्दी पर विराजमान करके इनको 'चौथे गुरु' के रूप में स्थापित कर दिया। गुरु-घर की सेवा में इनको रत देखकर जब वही शरीक, जिन्होंने अनाथ होने पर खबर तक न ली, गोइंदवाल आए और कहा कि ससुराल-घर में टोकरी ढोकर इसने हमारे खानदान की नाक कटवा दी है। उस समय जो मनोभाव आपने प्रकट किये वे आपके गहरे ज्ञान-अनुभव तथा नम्रता की शिखरता को तो व्यक्त करते ही हैं इसके साथ-साथ वे गुरु तथा गुरु-घर के प्रति सांसारिक रिश्तों से ऊपर उठी हुई आपकी श्रद्धा और निर्मल भावना को भी उजागर करते हैं कि "ऐ भोले लोगो! आप असलियत को नहीं समझे। यह मेरा ससुराल-घर नहीं बल्कि मेरा मुक्ति-दर है। मैं तो अपने मुक्ति-दाता सतिगुरु की सेवा करके उनकी खुशियों को प्राप्त करने का यत्न कर रहा हूं। आप लोकाचारी तथा समधीगिरी की बातें करते हो। यह आपकी भूल है।" भाई जेठा जी की नम्रता तथा आज्ञाकारिता की वास्तविकता का ज्ञान सिक्ख संगत को कराने हेतु तीसरे गुरु जी ने जब भाई रामा जी और भाई जेठा जी, दोनों को चबूतरे बनाने का हुक्म किया तो जिस प्रकार आपने हुक्म सिर-माथे पर माना वो आपकी नम्रता, क्षमाशीलता और गुरु-हुक्मों के अनुरूप आपके पूर्ण समर्पण को उजागर करता है।

सभी गुणों के आधार-रूप-गुण 'नम्रता' को आप निरंतर अपने गुरगद्दी-काल में भी समय-समय पर उजागर करते रहे। गुरु नानक पातशाह जी के बड़े सपुत्र बाबा श्रीचंद जी ने जब गुरु जी की नम्रता की शिखर देखी तो उन्होंने माना कि सचमुच आप ही गुरगद्दी के असल अधिकारी हो। गुरगद्दी पर विराजमान होने के उपरांत जो पावन बाणी श्री गुरु रामदास जी ने मुखारबिंद से उच्चारण की उससे आपकी प्रकृति का अटूट अंग 'नम्रता' स्वत: प्रकट होता है और पाठकों-श्रोताओं को आनंद-विभोर करता है। आप यहां तक कथन करते हैं कि "यदि कोई गुलाम मंडी में से खरीदा गया हो तो उसकी अपने मालिक के समक्ष क्या कोई चतुराई चल सकती है? मेरे मालिक, हम पापी हैं और आपकी शरण में आ गये हैं। हम अपराधी हैं। हे सतिगुरु, हमें आप रख सकते हो। हे गुरु! तुम ही हमारे पिता हो, तुम्हीं माता हो, तुम्हीं बंधु हो और तुम्हीं मित्र! हे मेरे सतिगरु! मेरी जो स्थिति थी उसको तुम जानते ही हो। मैं तो रुलता-फिरता था। कोई मेरी बात तक न पूछता था। मुझ 'कीड़े' को आपने चरणों के साथ लगाया और ऊंचे स्थान पर स्थापित कर दिया।"

श्री गुरु रामदास जी महाराज का पावन प्रकाश पर्व मनाते हुए हमें गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों को आपके आदर्श जीवन तथा गुणों के गुलदस्ते रूप आपके व्यक्तित्व से ये गुण ग्रहण करके, इनका अत्यधिक संचार और विकास करके सिक्खी की सुगंध को विश्व भर में फैलाने हेतु हर संभव रूप में यत्नशील होना चाहिए। हमें अपने जीवन में विद्यमान संघर्ष अथवा जद्दोजहद को सब्र, सिदक और धैर्य के साथ करते हुए, अपने घर-परिवार, समाज, समुदाय, कौम तथा पंथ के प्रति कर्त्तव्यों को निष्ठा के साथ निभाते हुए नम्रता का पल्लू कदापि नहीं छोड़ना चाहिए। नम्रता को कायम रखते हुए ही हम आत्मिक विकास को सुनिश्चित कर सकते हैं। सच्ची हार्दिक नम्रता को धारण करना गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों की श्री गुरु रामदास जी के प्रति सच्ची श्रद्धा का प्रतीक हो सकता है।

श्री गुरु रामदास जी

*-श्रीमती शैल वर्मा**

सिक्ख धर्म के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी का जन्म २५ आश्विन, १५९१ वि. तदनुसार २४ सितंबर, १५३४ ई. को चूना मंडी लाहौर में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री हरिदास और माता का नाम दया कौर था। आपका जन्म परिवार में बड़े पुत्र के रूप में हुआ, इसलिये आपको 'जेठा जी' के नाम से जाना जाता था। भाई जेठा जी उबले हुये चने बेचने का काम करते आ रहे थे। शेष समय सतसंग में बैठने और लंगर की सेवा में व्यतीत करने लगे। श्री गुरु अमरदास जी भाई जेठा जी की गुरु-भक्ति, गुणों और आचरण से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी सपुत्री बीबी भानी जी की शादी भाई जेठा जी से कर दी।

उस समय गोइंदवाल में बाउली बनाई जा रही थी। भाई जेठा जी को श्री गुरु अमरदास जी का जामाता होने का जरा भी अभिमान नहीं था। सेवा-भाव के वशीभूत भाई जेठा जी अपने शीश पर मिट्टी की टोकरियां उठा-उठा कर फेंकते रहे। अन्य तमाम गुणों को देखते हुये श्री गुरु अमरदास जी ने गुरगद्दी भाई जेठा जी को सौंप दी यद्यपि उनके पुत्र भी हक जता रहे थे।

अब भाई जेठा जी श्री गुरु रामदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुये। श्री गुरु रामदास जी ने पहला काम यह किया कि उन्होंने "गुरु का चक्क" नाम से छोटी-सी बस्ती बसाई। श्री गुरु रामदास जी के प्रयत्न से यहां छोटे-छोटे व्यापारी, कुम्हार, लोहार, कामगार लोग बसने लगे। धीरे-धीरे "गुरु के चक्क" का विकास होने लगा और यह बस्ती भारत का बहुत बड़ा व्यापार केन्द्र बनी और गुरु द्वारा बसाया यह नगर 'अमृतसर' के नाम से संसार भर में प्रसिद्ध हुआ। श्री गुरु रामदास जी ने धर्म-प्रचार के साथ-साथ यह भी प्रचार किया कि हरेक सिक्ख ने अपनी कमाई का दसवां हिस्सा गुरु-घर के लिये भेंट देना है। यह धन लंगर तथा अतिथियों के रहने की व्यवस्था आदि पर खर्च होता था।

श्री गुरु रामदास जी के तीन सपुत्र थे- प्रिथीचंद, महादेव और श्री (गुरु) अरजन देव जी।

श्री गुरु रामदास जी के विचार से मनुष्य को अमृत वेला (सुबह) उठकर स्नान आदि करके प्रभु का ध्यान-मग्न कीर्तन तथा गुरु के आदेश का पालन करना चाहिये। जप करने से मनुष्य के सारे दुख दूर होते हैं। मनुष्य के सारे कार्य अपने आप पूरे होते रहते हैं। हर क्षण प्रभु का नाम-स्मरण करना चाहिये। ब्रह्मांड की रचना करने वाले प्रभु को भूलना नहीं चाहिये। गुरु जी ने बताया कि नाम-स्मरण से सभी प्रकार के पापों तथा दुखों का नाश होता है तथा काम, क्रोध आदि विषय-विकारों से छुटकारा मिलता है। समय आनंदपूर्वक व्यतीत होता है। आपने समस्त जीवों को 'पत्नी' और भगवान को 'पति' मान कर संयोग-वियोग संबंधी निर्मल बाणियां उच्चारण की हैं। श्री गुरु रामदास जी ने गुरु की पहचान बताते हुये कहा है कि जिसके पास बैठने से मन आनंदित होता है, मन का

***४८/८, सागर सदन, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पीछे, बस्ती-२७२००१, फोन : ०५५४२-२८७५८१*

भ्रम निवारण होता है। वह व्यक्ति परमात्मा का स्वरूप होता है। गुरु, शिष्य को माया-जाल से मुक्ति दिलाता है। गुरु, परमात्मा का स्वरूप होता है। अत: गुरु की शरण में जाना चाहिये:

जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥
मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥
हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥ (पन्ना १६८)

विनम्रता, सेवा, सद्भावना से ही प्रभु को पाया जा सकता है। अहंकार का नाम-स्मरण से विरोध है। जब तक मनुष्य अहंकार का परित्याग नहीं करता वह प्रभु को नहीं पहचान सकता। सतिगुरु की कृपा द्वारा ही अहंकार से बचा जा सकता है। एकाग्रचित्त होकर उसका स्मरण करने वाले अहंकार से बच जाते हैं, शेष तप-तपस्या, व्रत आदि बेकार हैं:

जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥
अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ॥
बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥
हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥ (पन्ना ७३२)

श्री गुरु रामदास जी कहते हैं--"कोई काम आरंभ करने से पहले, कार्य की सफलता के लिये प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिये।" गुरु जी कहते हैं--"सच्चे मन से की गयी अरदास व्यर्थ नहीं जाती। गुरबाणी-कीर्तन तथा अरदास के द्वारा शांति प्राप्त होती है।"

श्री गुरु रामदास जी ने तत्कालीन पंजाबी भाषा में बाणी उच्चारण की है। गुरु जी की भाषा में संत-भाषा के अतिरिक्त हिंदी, ब्रज भाषा, मुलतानी, मिश्रित पंजाबी भी मिलती है और अनेक शब्द सिंधी, गुजराती आदि के मिलते हैं।

श्री गुरु रामदास जी के संदेश सम्पूर्ण संसार के लिये उपयोगी एवं सारस्वत हैं। सारस्वत से तात्पर्य यह है कि इन सत्य विचारों की आवश्यकता अनंत काल तक उपयोगी रहेगी तथा लोगों को सहजता से सरल रास्ता मिलता रहेगा। सिक्ख धर्म के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी के कुल छंद ६७९ हैं और आप जी ने तीस रागों में बाणी उच्चारण की है।

श्री गुरु रामदास जी का सारा जीवन श्री अमृतसर के साथ जुड़ा रहा। आपने समर्पित-भाव से गुरु-घर की सेवा की।

कविता

यह धरती मेरी . . .

यह धरती मेरी है महान।
उपजाती मेवे, फूल, पान।
खेतों में लहरे फसल धान।
मेरा तन, मन, धन यही प्राण।
यह पुन्य प्रकृति मन भाई।
घर-घर में खुशियां छाईं।
हम अंतरिक्ष में खेलें,
चंदा को जाकर छू लें।
सूरज मेरी मुठ्टी में,
सोलर पंखा में सो लें।
विज्ञान समझ में आई।
घर-घर में खुशियां छाईं।
इतिहास हमारा स्वर्णिम,
यह धरा हमें बतलाती।
वन, पर्वत, नदियां निर्भर,
हैं बार-बार दोहराती।
मै मस्ती में हूं भाई।
घर-घर में खुशियां छाईं।

-श्रीमती शैल वर्मा, ४८/८, सागर सदन (पुलिस चौकी के पीछे), गांधी नगर, बस्ती (उ. प्र.)-२७२००१

श्री गुरु रामदास जी का अद्वितीय जीवन

*-डॉ. बलबीर सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी की पावन ज्योति उनसे चलती हुई श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी और फिर श्री गुरु रामदास जी में प्रकाश बिखेरने लगी। सन् १५३४ में इस जगत में श्री गुरु रामदास जी का प्रकाश हुआ। इनके पिता का नाम श्री हरिदास जी और माता का नाम माता दया कौर जी था। चूना मंडी लाहौर की गलियों में यह दीपक जला। घर में पहला बच्चा होने के कारण इन्हें 'जेठा जी' कहने लगे और बाद में इनका नाम 'श्री गुरु रामदास जी' हुआ।

माता-पिता का साया बचपन में ही सिर से उठ गया। भाई जेठा जी घुंघनियां (उबले चने) बेचकर अपना गुजारा करने लगे, क्योंकि वे मानते थे कि अपने हाथों को फैलाने के बजाये किरत करना ही उत्तम है। फिर ननिहाल के लोग अपने साथ ले गये। वहां भी उन्होंने अपना कर्म नहीं छोड़ा। उनके नम्र और सहज व्यवहार के कारण सभी उन्हें प्यार करते।

श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरगद्दी पर श्री गुरु अमरदास जी को विराजमान किया। श्री गुरु अमरदास जी से भाई जेठा जी का पहले से ही आत्मिक सम्बंध था। गुरु जी ने अपनी बड़ी बेटी बीबी भानी जी से भाई जेठा जी का अनंद कारज कर दिया।

भाई जेठा जी गुरु-घर की सेवा लगन, उत्साह, श्रद्धा और समर्पण की भावना से करते रहे। इस नि:स्वार्थ सेवा और अनथक प्रयत्न के कारण ही आप जी श्री गुरु अमरदास जी से ईश्वर-प्राप्ति और भक्ति के सभी रहस्यों को ग्रहण कर पाये। जहां एक ओर वे गुरु जी के प्रिय पात्र होते जा रहे थे वहीं अन्य सेवक और समाज के लोग भी उनका मान-सम्मान करने लगे।

जब श्री गुरु अमरदास जी ने यह आज्ञा जारी की कि हरेक दर्शन-अभिलाषी स्नान करके, गुरु का लंगर छककर ही दरबार में जायेगा तो तथाकथित उच्च वर्ग के लोगों ने इसका विरोध किया कि एक ही पंगत अथवा पंक्ति में बैठ कर तथाकथित निचली जाति के लोगों के साथ वे लोग भोजन नहीं कर सकते। बादशाह अकबर के पास शिकायत की कि श्री गुरु अमरदास जी ने लंगर की प्रथा चलाकर जाति-भेद, वर्ण-भेद, वर्ग-भेद मिटाने की खातिर समाज के नियमों के विरुद्ध काम किया है। श्री गुरु अमरदास जी ने अपने स्थान पर (गुरु) रामदास जी को भेजा।

श्री (गुरु) रामदास जी ने सिक्खी सिद्धांतों, मानवतावादी सिद्धांतों का हवाला देते हुये बादशाह को बाताया कि श्री गुरु नानक देव जी के "एक पिता एकस के हम बारिक" के संदेश के अनुसार लंगर की प्रथा न तो किसी धर्म के विरुद्ध है और न ही समाज के नियमों का उल्लंघन। श्री गुरु रामदास जी ने बादशाह से कहा कि तीर्थ-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

**212, Dhudial Apartment, Madhuban Chowk, Pitampura, Delhi-110034. Ph: 011-27032897*

धंन धंन श्री गुरु रामदास जी

*-श्री सुरजीत दुखी**

जेठा था बचपन का नाम, श्री हरिदास पिता का नाम था।
माता दया कौर की आंखों का तारा, वो बच्चा महान था।
सात साल की आयु में, माता-पिता का देहावसान हुआ,
चारों तरफ से घेरा मुसीबत, पर वो धैर्यवान था।
बासरके ननिहाल थे उसके, लेने सहारा चला गया।
गुरबत की हर कठिनाई को, करने गवारा चला गया।
पास के गांव जा घुंगनियां बेचीं, परिवार का निर्वाह किया।
इस तरह भाई जेठा जी को, मेहनत ने ही जवान किया।
सुनी महिमा गुरु अमरदास की, हुई दर्शनों की अभिलाषा।
घुंगनियां बेचते गोइंदवाल पहुंच गए, हुई पूर्ण दिल की आशा।
गुरु-घर ही रह बसे, दिन दूसरे-तीसरे घर आते थे।
पैसा-टका बच जाता जो, वो घर में दे जाते थे।
गुरु-महिल माता राम कौर ने, गुरु जी संग विचार किया।
जवान हो गई बीबी भानी, शादी का प्रस्ताव दिया।
योग्य वर ढूंढने की खातिर, गुरु जी से प्रार्थना दोहराई।
गुरु अमरदास की कृपा-दृष्टि हुई, थी जेठा जी की भी नेक कमाई।
वर निश्चित हो गया, शादी का कार्यक्रम बनवाया।
बीबी भानी का विवाह जेठा से, गुरु-मर्यादा से करवाया।
सांसारिक विहार को छोड़ दिया, गुरु-सेवा में शीश निवाया था।
निर-अभिमानी भाई जेठा ने, त्याग का कर्म कमाया था।
ननिहाल वालों को फिर जेठा, गुरु-घर में ले आया था।
निर्माण-कार्य में फिर उसने, ईंटों का टोकरा उठाया था।
लाहौर से कबीला जेठा जी का, गुरु-दरबार में आया था।
सेवा करते देखा उनको, उन्होंने बुरा मनाया था।
"इन लोगों को क्षमा कर देना", जेठा जी ने फरमाया था।
सेवा कभी न छीननी मुझसे, यह मनोभाव प्रगटाया था।
एक दिन गुरु अमरदास जी, परीक्षा लेने पे उतर आए।
भाई जेठा जी और भाई रामा जी से, थड़े उन्होंने बनवाए।
बनकर थड़े तैयार हुए, गुरु जी ने गिराने को कहा।
ठीक नहीं बन पाये ये, फिर से बनाने को कहा।
कई बार बनवाए गुरु जी ने और कई बार तुड़वाए।
अंत में भाई रामा जी ने, छोड़ दिया और फरमाए।

**३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर।*

"हम नहीं बना सकते ठीक, जो बनाता है उससे बनवाएं।"
परन्तु भाई जेठा जी ने, हुक्म गुरु के ही बजाए।
गुरु अमरदास ने भाई जेठा को, भेजा नगर बसाने को।
सिक्खी को और फैलाने को, सेवा का मान बढ़ाने को।
आज्ञा पाकर गुरुदेव की, साथी बाबा बुड्ढा को बनाया।
नक्शा बनवाया सबसे पहले, 'संतोखसर' को खुदवाया।
इस नगर का नाम तब, 'गुरु का चक्क' पड़ गया।
आठ मशहूर गांवों के बीच, एक नगर था बस गया।
सूचना पहुंची जब गांवों में, नया नगर बस जाने को।
लोगों का बड़ा समूह आ गया, नये नगर में रहने को।
रौनक बहुत बड़ी शहर में, 'रामदासपुर' नाम हुआ।
'हरिमंदर' जब बन गया, इससे 'अमृतसर' तब नाम हुआ।
दूर-दूर से कारीगर बुलवाए, महानता इसकी बढ़ाने को।
व्यापारी भी चले आये, इस जगह बस जाने को।
नाम दिया गुरु 'रामदास', संगतों में यह वचन किया।
इस तरह भाई जेठा जी को, चौथे गुरु नियुक्त किया।
अमृतसर में हरिमंदर की, उसारी के लिए धन जुटाने को,
गुरु रामदास ने हर जगह, मसंदों को मुकर्रर किया।
गउड़ी राग के चौथे महले में, उचरी आपने जो बाणी।
गुरसिक्खों के लिए है वह, निरोग जीवन की दानी।
कवि तो अपनी अल्प बुद्धि से, उस बाणी को गाता है।
चलने की कोशिश करता है, उपदेशों को अपनाता है।
'हरिमंदर' के दर्शन कर, मन शांत हो जाता है।
मानो तो बैकुंठ धाम के, दर्शन वो पा जाता है।
गुरबाणी-कीर्तन सुन कर 'दुखी',
अति सुखी बन जाता है।

श्री गुरु रामदास जी का अद्वितीय जीवन

(पृष्ठ ७ का शेष)

यात्रियों से जो 'यात्रा कर' लिया जाता है वह माफ कर दिया जाये। बादशाह ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

इसके बाद गुरतागद्दी पर आसीन होने के बाद एक बार फिर जब अकबर अफगानिस्तान से लौट रहा था तो दोनों का मिलाप हुआ। अकबर ने एक सौ अशरफियां गुरु जी को भेंट कीं परन्तु गुरु जी ने कहा कि जिस प्रकार पावस ऋतु मच्छर आदि को पैदा करती है, जो अनेक तरह की बीमारियां फैलाते हैं, वैसे ही यह दौलत और जागीर काम, क्रोध, झूठ, निंदा, भेदभाव और अन्य हीन भावनायें पैदा करती है। उन्होंने ये अशरफियां जरूरतमंदों में बांट दीं।

अकबर ने अपने मुसाहिब से कहा, "यह नेकदिल फकीर बेमिसाल है और अद्वितीय इंसान है, जिसकी बातों में नेकी और सबकी भलाई की झलक मिलती है। आफरीन है इन पर।"

श्री गुरु तेग बहादर जी

*-डॉ. हरमहेन्द्र सिंघ**

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी की लासानी शहादत ने भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। इसी प्रभाव के कारण उन्हें 'हिंद की चादर' कहा गया। श्री गुरु तेग बहादर जी ब्रज भाषा के महान रचनाकार थे। उनके श्लोकों में भारतीय फलसफा नए संदर्भों से जुड़ा। ये संदर्भ भारतीय फलसफे का सरलीकरण करते हैं। गुरु जी की बाणी के सरोकार जिन्दगी के उन तमाम पहलुओं से जुड़े हुए थे जो उत्तर-मध्य काल की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक सोच को सशक्त करने में गतिशील थे। यही कारण है कि उनकी बाणी में उत्तर-मध्य काल का नैतिक शास्त्र विकसित होता दिखाई देता है।

उत्तर-मध्य काल में श्री गुरु तेग बहादर जी उत्तरी भारत की संत-परंपरा के प्रेरणास्रोत थे। कश्मीरी पंडित श्री गुरु तेग बहादर जी से इस कदर प्रभावित थे कि उन्हें यकीन था कि 'तिलक-जंञू' के रक्षक गुरु जी ही हो सकते हैं। जीवन के नए सृजन-मूल्यों को वे कश्मीरी पंडितों को अभयदान देकर नए सिरे से उद्घाटित करते हैं। जीवन के उत्सव को वे गहराई से पहचानते थे। यही कारण है कि वे न भय देने के हक में थे और न ही किसी तरह का भय स्वीकार करने की मानसिकता को समर्थन देते थे।

श्री गुरु तेग बहादर जी उस विलक्षण व्यक्तित्व के स्वामी थे जिनसे प्रेरित होकर अनेक जीव-आत्माओं ने राग-अनुराग, सत्य, अहिंसा, भाईचारा, समन्वय, त्याग और सेवा का पहला पाठ पढ़ा। गुरमति विचारधारा को फैलाने के लिए वे देश के कोने-कोने में गए। आसाम, बंगाल, बिहार, बंगलादेश इत्यादि स्थानों की यात्रा कर गुरमति जीवन-दृष्टि के गूढ़ रहस्यों को आम जनता तक पहुंचाया। ऐतिहासिक तथ्य यह भी है कि गुरु जी जहां भी गए उनसे प्रेरित होकर लोगों ने न केवल नशों का त्याग किया बल्कि तम्बाकू की खेती करनी भी छोड़ दी। आज जिस दौर में युवा पीढ़ी नशों की मार तले दबती जा रही है ऐसे महागुरु के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर नशाविहीन समाज का निर्माण करना चाहिए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी के ५९ शबद १५ रागों में संकलित हैं। गुरु जी के ५७ श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंतिम भाग में अंकित हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पावन शबदों एवं श्लोकों को 'महला नौवां' के शीर्षक के अन्तर्गत रखा गया है। गुरु जी ने अपनी बाणी में उस आभा-मंडल की ज्योति जलाई है जिसकी सच्चाई में संसार नश्वर है, आत्मा अमर है, मान-अपमान बराबर हैं। नाम-सिमरन की महिमा की उपलब्धि में जीव जिन्दगी के सही रास्ते को सहज ही अपना लेता है। जीवन-मृत्यु की कला को भी गुरु जी ने उन नए सरोकारों में समझाने का आयोजन किया जिसमें देह और आत्मा का वह रिश्ता उजागर हो जाता है जिसके कारण संसार

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर।

की नश्वरता और आत्मा की महानता उन अंधेरों को रोशन कर देती है, जिसकी ज्योति शाश्वत सत्ता की ओर केवल संकेत ही नहीं करती बल्कि उसकी पहचान में सांसारिक जीव उस निरन्तर यात्रा में चल पड़ता है जिसकी अनुभूति उसे उस उदात्त शक्ति से जोड़ देती है जिसकी जिज्ञासा लेकर उसने मानव देह धारण की थी। गुरु जी ने अपनी बाणी में जिस अध्यात्म सौंदर्य का चित्रण किया है उसकी पृष्ठभूमि में अहिंसा, त्याग, सेवा एवं सह-अस्तित्व की सभी इकाइयां मौजूद हैं, जिनकी जरूरत आज भूमंडलीकरण के दौर में पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को याद करना इतिहास के उस दौर को याद करना है जिसके कारण आधुनिक भारत में धर्म-निरपेक्षता एवं धार्मिक स्वतन्त्रता का माहौल बना।

गुरु जी की संबोधन शैली में साधारण-जन का मनोविज्ञान झलकता है। पौराणिक संदर्भों को उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के प्रसंग में नई सांस्कृतिक चेतना से जोड़कर प्रस्तुत किया। गुरु जी का जीवन-दर्शन आज भी भूले-भटके प्राणियों को सही मार्ग दिखलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, क्योंकि आज भी हम सब उस महान गुरु के सम्मुख नतमस्तक होकर अभयदान का पाठ सीख सकते हैं। ❁

गुरु ग्रंथ साहिब का दिव्य-प्रकाश

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

अकाल पुरख के दिव्य-प्रकाश का है जो प्रकाश।
वही तो है गुरु ग्रंथ साहिब जी का दिव्य-प्रकाश।
आ जाएं वे प्राणी इसकी शरण में जो हों निराश।
मिटा देता है निराशाओं के अंधेरे इसका प्रकाश।
क्यों कोई होता है दुखों-कष्टों के कारण हताश?
असंख्य सुख देता है गुरु ग्रंथ जी का दिव्य प्रकाश।
मन की सच्ची भावना से करता है जो पूर्ण विश्वास।
उसके सब कष्टों का हो इसकी कृपा से विनाश।
जो प्राणी गाएं या सुनें पवित्र गुरबाणी श्वास-श्वास।
तन-मन उनके दमक उठें, हों जैसे फूल-पलाश।
कभी नहीं करते गुरु ग्रंथ साहिब जी उनको निराश।
परम-संतोष, परम-आनंद, प्रभु की जिन्हें तलाश।
तोड़ दे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के पाश।
उज्जवल कर दे हृदय-दीप इसका आलौकिक प्रकाश।
गुरु अरजन देव जी इसके प्रथम संपादक खास।
हरिमंदर साहिब गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम पवित्र निवास।
गुरुओं, भट्टों, संतों-भक्तों की बाणी का इसमें प्रकाश।
शक्ति और भक्ति के साथ दे यह प्रभु-कृपा का प्रसादि।
भेद-भाव, ऊंच-नीच, जात-पात का इसमें खंडन खास।
शोक, चिंता, भ्रांति, भ्रम, अज्ञानता का करे यह विनाश।
अकाल पुरख के दिव्य प्रकाश का है जो प्रकाश।
वही तो है गुरु ग्रंथ साहिब जी का दिव्य प्रकाश।

**बी-एक्स ९२५, संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो : ९८७२२-५४९९०*

संक्षिप्त जीवन बाबा बुड्ढा जी

-कवीशर सवरन सिंघ भौर*

संसार में कुछ ऐसी शख्सियतें आती हैं जो अपने मार्गदर्शन से आने वाली सलतनत को अमर करती हैं। बाबे सुग्घे रंधावे के घर माता गोरां जी के उदर से ७ कार्तिक संवत् १५६३ को गांव कत्थूनंगल, जिला अमृतसर में एक बालक के जन्म लिया। मां-बाप ने चावों-मलारों के साथ अपने बच्चे का नाम 'बूड़ा' रखा। वे जिमींदारी का काम बड़ी लगन से करते। 'बूड़ा' जी अपने पिता के साथ खेती के काम में हाथ बंटाते और गऊओं तथा भैंसों को चराने के लिए ले जाते और अपने साथियों से भी बड़ा प्यार करते। जब कोई चीज घर से खाने के लिए आती तो साथ में अपने साथियों को आवाज लगाकर सब कुछ बांट कर खाते और उनके साथ गंभीरता के वचन-विलास करते।

यह परिवार कत्थूनंगल से गांव रमदास आ गया। बूड़ा जी खेती की किरत उसी तरह बड़ी लगन से करते रहे। रमदास में ही गुरु नानक पातशाह जी से मुलाकात हुई। सतिगुरु नानक देव जी के दर्शन करके बालक बूड़ा जी के मन में ऐसा वैराग्य पैदा हो गया कि दूध का कटोरा भर कर गुरु जी की सेवा में हाजिर हो गये और प्यार से गुरु को दूध छकाने की विनती की। सतिगुरु नानक देव जी दूध छकाने की बालक बूड़े की लगन देखकर बहुत प्रसन्न हुए और कहा, "बेटा! तुम्हारा क्या नाम है?" बालक ने उत्तर दिया, "बाबा जी! मेरा नाम मेरे मां-बाप ने 'बूड़ा' रखा है।" सतिगुरु दूध छक कर बोले, "हम तृप्त हो गए हैं।" बूड़ा जी कहने लगे, "दूध पीकर शरीर तो तृप्त हो ही जाता है, मगर मन कैसे तृप्त होगा?" सतिगुरु ने कहा, "बेटा! तुम उम्र में बच्चे हो मगर तुम्हारी बातें बुड्ढों (बुजुर्गों) जैसी हैं। तुम्हें दिव्य ज्ञान की सोझी है।" उस दिन 'बूड़ा' से 'बुड्ढा' नाम प्रसिद्ध हो गया।

बाबा बुड्ढा जी रमदास से चलकर करतारपुर जाकर गुरु नानक साहिब जी की शैली से प्रभावित होकर गुरमति का प्रचार करते। बाबा बुड्ढा जी और माता गोरां जी के मन में उमंग थी कि उनके पुत्र का विवाह हो जाए और यह गृहस्थ धर्म में प्रवेश करे, मगर बाबा बुड्ढा जी का विचार विवाह करने का नहीं था। माता-पिता जी ने सतिगुरु नानक साहिब जी से विनती की कि "हमारा बेटा विवाह के लिए हां नहीं करता, कृपा करके इसको समझाएं।" इस पर गुरु नानक साहिब ने बाबा बुड्ढा जी को समझाया और गृहस्थ जीवन में आने के लिए कहा। बाबा बुड्ढा जी हुक्म मान गए। बीबी मरोआ के साथ १५ फाल्गुन, १५८० को नगर अचल में बड़ी धूमधाम से विवाह हुआ। श्री गुरु नानक देव जी की ओर से उनके महिल माता सुलक्खणी जी और गुरु जी के सपुत्र बाबा सिरीचंद जी और बाबा लखमी चंद जी बाबा बुड्ढा जी के विवाह समारोह में रमदास आए।

बाबा बुड्ढा जी जहां खेती का काम बड़ी

*गांव और डाक : सरली कलां, जिला तरनतारन। मो: ९४१७८-५३६४३

लगन से करते वहां प्रभु की भक्ति में भी रत रहते और बांटकर छकने वाली रीति को कभी न भुलाते। आप जी के घर चार पुत्र हुए। उनके नाम थे--भाई सुधारी जी, भाई भिखारी जी, भाई महिमू जी, भाई भाना जी। बाबा बुड्ढा जी ने १२५ साल आयु भोगी। गुरु नानक साहिब जी से लेकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी तक आप जी ने गुरग्ददी की रीति को गुरमति रीति के अनुसार निभाया। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपूर्णता कर उसे श्री हरिमंदर साहिब में गुरमति के प्रचार के लिए स्थापित करके बाबा बुड्ढा जी को ग्रंथी नियुक्त किया। आप जी के वचनों के साथ माता गंगा जी को योद्धा सपूत की दात प्राप्त हुई।

बाबा बुड्ढा जी जहां सिक्खी का प्रचार बड़ी लगन से करते वहां साहिबजादा गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को अक्षरी-विद्या के साथ-साथ शस्त्र-विद्या का प्रशिक्षण भी कराते। श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में बेरी है जिसको 'बेर बाबा बुड्ढा साहिब जी' नाम से याद किया जाता है। बाबा जी बेर के नीचे बैठ कर सिक्खों से योग्य ढंग से कार-सेवा करवाते और आवश्यकतानुसार सामान देते; मजदूरों और मिस्त्रियों को तनखाह बांटते।

उस समय वजीर खान नाम का शख्स लाहौर का सूबेदार था और गुरु-घर में बड़ी श्रद्धा रखता था। कई बार श्री गुरु रामदास जी के दर्शन करके गुरु-घर की खुशियों का पात्र बना। इसको जलोधर की बीमारी ने लाचार कर दिया। इस पीड़ा भरी स्थिति में वो श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शन करने अमृतसर आया। उस समय श्री गुरु अरजन देव जी दुखभंजनी बेरी के नीचे बैठ कर सिक्ख संगत को पवित्र वचनों से निहाल कर रहे थे। वजीर खां के वारिस उसकी मंजी उठाकर हजूर के पास ले गए। विनती की, "महाराज! इसका रोग दूर करो।" महाराज ने उसको धरती पर लेटाने का हुक्म किया। बाबा बुड्ढा जी सरोवर से मिट्टी की टोकरी लेकर आ रहे थे। श्री गुरु अरजन देव जी ने कहा, "बाबा जी! इसका पेट बहुत बढ़ गया है, यह बेचारा जलोधर की बीमारी से पीड़ित है। इसका दुख दूर करने के लिए कोई उपाय करो।" बाबा जी ने कार-सेवा वाली टोकरी उसके पेट पर उठा मारी। पेट का सारा पानी बाहर निकल गया और वह निरोग होकर सतिगुरु का शुक्राना करता हुआ परिवार समेत खुशी का पात्र बनकर वापस लाहौर चला गया और सदा गुरु नानक साहिब जी के घर का श्रद्धालु बना रहा। यह साखी ज्ञानी गिआन सिंघ ने 'तवारीख गुरु खालसा' में अंकित की है।

श्री अकाल तख्त साहिब पंथक जत्थेबंदी का सिरमौर केंद्र है। पंथ यहां पर गुरमते करता आया है। इस स्थान पर गुरु साहिब और धर्म-वीर शहीदों के शस्त्र हैं। बाबा बुड्ढा जी की सिरी साहिब श्री अकाल तख्त साहिब में शोभायमान है। बाबा बुड्ढा जी की पवित्र याद में गुरुद्वारे, स्कूल, अस्पताल, सभा-सोसायटियों का निर्माण हुआ है जो बहुत ही उत्तम कार्य है।

गुरु-घर को समर्पित होकर सेवा की जो आदर्श मिसाल बाबा बुड्ढा जी ने पेश की है उसे हम सबको अपनाने की आज परम आवश्यकता है।

शहीद भाई मतीदास जी, भाई दिआला जी और भाई सतीदास जी

*-डॉ. निर्मल कौशिक**

प्रमाणिकता के आधार पर श्री गुरु तेग बहादर जी के समक्ष शहीद होने वाले उनके शिष्यों अथवा सिक्खों के नाम भाई मतीदास जी, भाई दिआला जी और भाई सतीदास जी हैं। उस समय की रचना 'भट्ट बही मुलतानी सिंधी' में इन शहीदों का वर्णन इस प्रकार दर्ज किया गया है--"दिआल दास बेटा माई दास का, पोता बालू का, पड़पोता मूले का, गुरु गैल मग्घर सुदी पंचमी संवत् १७३२ (१६७५) है। दिल्ली चांदनी चौक में शाही हुकम गैल मारा गया। गैले मतीदास, सतीदास बेटे हीरा नंद के, पोते लखीदास के, पड़पोते पराग के, बंस गौतम का, सरसवती (सारस्वत) भार्गव गोत्र ब्राह्मण छिब्बर मारे गए।"

प्रसिद्ध इतिहासकार कनिंघम और डॉ. फौजा सिंघ के अनुसार शहादत का गौरव अर्जित करने वाले तथा धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले गुरु-घर के अनन्य सेवक सबसे पहले भाई मतीदास जी को, फिर भाई दिआला जी को और फिर भाई सतीदास जी को गुरु जी के समक्ष शहीद किया गया। इन तीनों सिक्खों के पूर्वज श्री गुरु अरजन देव जी के समय से ही गुरु-घर से जुड़े हुए थे। संतोष, संयम और सेवक के गुणों से सुशोभित गुरु-घर की आत्मभाव से सेवा करते आ रहे थे। उनकी कुल और वंश की सेवा-भावना से प्रसन्न होकर ही भाई मतीदास जी को गुरु-घर के दीवान, भाई दिआला जी को भाई जी तथा भाई सतीदास जी को दरबारी लेखक के रूप में सम्मान प्राप्त था। गुरु-घर के सेवक हीरा नंद के पुत्र भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी छिब्बर वंश के थे जो जिला जेहलम के नगर कड़ियाला के निवासी थे। आपके पूर्वज भाई गौतम गुरु-घर के अनन्य सेवक थे। उनका बेटा भाई पराग दास श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सेना का नामी शूरवीर हुआ जिसने सं. १६७८ विक्रमी (१६२१ ई.) में युद्ध में वीरगति प्राप्त की। भाई पराग दास का सपुत्र लक्खीदास तथा लक्खीदास का सुपुत्र दुरगा मल था, जो श्री गुरु हरिराय साहिब और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के समय में गुरु-घर के दीवान की सेवा निभाता रहा। भाई दुरगा मल ही दिल्ली से श्री गुरु तेग बहादर जी के लिए गुरिआई का तिलक और नारियल लेकर बाबा बकाला आये थे। वृद्धावस्था के कारण उन्होंने गुरु-घर से गुरु-आज्ञा से विदा ले ली। इसके पश्चात् इनके भतीजे तथा भाई हीरा नंद के सुपुत्र भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी ने गुरु-घर की सेवा का संकल्प लिया और आजीवन निभाया। भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी ने गुरु-घर की जी-जान से सेवा की और श्री गुरु तेग बहादर जी के पावन चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया। यही कारण है कि उन्होंने गुरु जी से पहले शहीदी प्राप्त की। भाई सतीदास जी और भाई मतीदास जी ने भ्रम और भयमुक्त होकर गुरु जी के साथ ही दिल्ली प्रस्थान किया और अपने

**अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सरकारी बृजेन्द्र कालेज, फरीदकोट (पंजाब)-१५१२०४*

संकल्प को पूरी ईमानदारी के साथ निभाया। कहते हैं कि गुरु जी की कृपा से भाई मतीदास जी महाशक्तिशाली थे। उन्होंने एक बार गुरु जी से दिल्ली सल्तनत की ईंट से ईंट बजाने की अनुमति भी मांगी लेकिन गुरु जी ने ऐसा करने से साफ मना कर दिया। गुरु जी ने समझाया कि हमें तो उस ईश्वर की इच्छा में रहना है, उसके भाणे को मीठा करके स्वीकार करना है। शहीद किये जाने से पूर्व काजी ने भाई मतीदास जी से उनकी अंतिम इच्छा के बारे में पूछा तो उन्होंने अत्यंत नम्रता से कहा कि मेरे सिर पर आरा चलाते समय मेरा मुंह गुरु जी की ओर ही रखा जाए तथा लहू से लथ-पथ मेरा मुंह साफ न किया जाए। उन्होंने गुरु-आदेश के अनुसार जपु जी साहिब का पाठ करते-करते अपना तन चिरवाया लेकिन सिक्खी सिदक को आंच नहीं आने दी। कवि भाई संतोख सिंघ ने 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है:

मतीदास को कीनि बुलावनि।
दुइ तखते महिं करयो बंधावनि।
हुकम जलादनि तबहि उचारा।
लै आरा सिर पर तिस धारा ॥४५॥
अरधो अरध चिराइ सु डारा।
परयो प्रिथी पर ह्वै दो फारा।
दोनहुं तन ते जपुजी पढै।
हेरति सभि के अचरज बढै ॥४६॥
होइ दुखंड न जीवति कोई।
इह तो पठति जियति जिम होई।
भोग पाइ करि दोनहुं तनते।
गुरपुरि पहुंचयो प्रेमी मन ते ॥४७॥
(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रासि १२, अंसू ५४)

भाई मतीदास जी के तीन सपुत्र थे-- साहिब चंद, मुकंद राय तथा चरण दास। साहिब चंद दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का घरबारी दीवान रहा जो ७ कार्तिक १७५७ वि: को निरमोहगढ़ के युद्ध में शहीद हुआ। भाई मुकंद राय ने चमकौर की गढ़ी में शहीदी प्राप्त की। भाई चरण दास ने साधु वेश धारण कर भदौड़ नामक स्थान पर गुरमति का प्रचार किया।

दिल्ली में श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ शहादत पाने वाले गुरु-घर के अनन्य सेवक भाई दयाल दास जी को प्यार और सत्कार सहित भाई दिआला जी के नाम से जाना जाता है। इनके पूर्वज भी कई पीढ़ियों से गुरु-घर की सेवा में तल्लीन थे। गुरु-घर की सेवा करने वाले इस श्रद्धालु परिवार पर गुरु-जनों की अपार कृपा रही। आप भाई मूलचंद के पड़पोते, भाई बालू के पौत्र तथा भाई माईदास के सपुत्र थे। आप के दादा भाई बालू सिक्ख इतिहास (सन् १६२८) के प्रथम युद्ध में शहीद हुए। इनके साथ ही भाई मतीदास जी के पड़दादा भाई पराग दास भी शहीद हुए थे। आपके पिता भाई माईदास अलीपुर (मुलतान) के निवासी थे। सन् १६५७ में आप परिवार सहित कीरतपुर साहिब आ गए। आपका परिवार गुरु-सेवा में अग्रणी था। भाई माईदास के ग्यारह सपुत्र थे। पहले तीनों बेटों को आप ने गुरु-चरणों में अर्पित कर दिया था। इनमें भाई दिआला जी दूसरे क्रम पर थे।

उस समय भाई दिआला जी की आयु १५ वर्ष की थी। आपकी सेवा से प्रसन्न होकर आपको गुरु जी ने कुछ विशेष कार्य सौंप दिए थे। बाबा बकाला में जब धीरमल के व्यक्तियों द्वारा गुरगद्दी पर अपना अधिकार बताते हुए सीहे मसंद ने गोली चलाई तो भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के साथ मिल कर भाई

दिआला दास भी श्री गुरु तेग बहादर जी की सुरक्षा के लिए डट गए। इनका धैर्य और बल देखकर धीरमल के मसंद भाग खड़े हुए। सन् १६६५ में पूर्वी प्रांतों में गुरु जी ने गुरमति प्रचार हेतु भाई मतीदास जी को नियुक्त किया तथा भाई सतीदास जी को द्विभाषिया नियुक्त किया। जब गुरु जी पटना पहुंचे तो घर और गुरु-परिवार की सारी जिम्मेदारी भाई दिआला जी को सौंप दी।

जब श्री गुरु तेग बहादर जी को कैद करके सरहिंद और दिल्ली के कैदखाने में रखा गया तो गुरु जी के अन्य सिक्खों सहित भाई दिआला जी भी गुरु जी के साथ कैदखाने में रहे। भट्ट बही में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है : "गुरु तेग बहादर महल नामा को नूर मुहम्मद खान मिर्जा चौकी रोपड़ वाले ने साल सत्रह सौ बत्तीस सावन प्रविष्टा बारां मलकपुर परगना धनौली से पकड़ कर सरहिंद पहुंचाया। साथ सतीदास, मतीदास बेटे हीरा मल छिब्बड़ के साथ दआल दास बेटा माई दास बलाउत का पकड़ा गया।"

भाई मतीदास जी गुरु-घर के दरबारी दीवान थे तो भाई सतीदास जी घरबारी दीवान थे। भाई सतीदास जीफारसी के अच्छे विद्वान थे, लिखने-पढ़ने का काम करते थे। हुकमनामा लिखना, खाता तैयार करना, पत्राचार करना आपके कार्य-क्षेत्र में था। गुरु जी की बाणी का लेखन-कार्य भी आप ही करते थे, जैसा कि भाई केसर सिंघ छिब्बर *बंसावलीनामा* में लिखते हैं :

बाणी जो साहिब करन उचार।
सो सतीदास नित करे
फारसी अखरां विच उतार।
नित साहिब बाणी उचारदे जाण।
अते सतीदास लिख-लिख रखन अमान।
बाणी बहुत आही सतीदास पास लिखी होई।
तुरकां ने खोह लिती सोई ॥९॥

आप भी अपने भ्राता भाई मतीदास जी के साथ ही गुरु-चरणों में लगभग दस वर्ष तक रहे। भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी के पिता भाई हीरा नंद श्री गुरु हरिराय साहिब के प्रिय सिक्ख और वीर योद्धा थे, जिन्हें गुरु जी ने अपना आशीर्वाद देकर कुछ विशेष कार्य सौंपे थे।

भाई हीरा नंद के भ्राता भाई दुरगा मल सातवें और आठवें गुरु जी के काल में गुरु-घर के मुख्य दीवान थे। जब नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी ने इन्हें सिरोपा भेंट कर सम्मानित किया तो भाई दुरगा मल ने गुरु जी के चरणों में निवेदन किया कि मेरे इन भतीजों--भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी को भी अपने पावन चरणों में सेवा का अवसर प्रदान करें। गुरु जी ने दोनों--भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी को अपने गले से लगा लिया और गुरु-घर की सेवा का कार्यभार संभाल कर निश्चिंत हो गए। समय के साथ-साथ दोनों सिक्ख गुरु-घर और गुरु-दरबार में अपनी सेवा से गुरु जी के चहेते सिक्ख बन गए। उन्होंने अंत तक गुरु जी का साथ ही नहीं निभाया अपितु गुरु जी से पहले शहीदी भी प्राप्त की। भाई केसर सिंघ छिब्बर लिखते हैं :

दीवान दुरगा मल ब्रहमण छिब्बर।
सो चरनी आई लगा, तजि मन का किबरु।
सिरोपाह दीवानी दा, गुरु तेग बहादर तिस नूं दिता।
इसदा सरीर हैसी वड्डा
उसने कम विच दोनों भतीजे खडे कीता।
सती दास, मती दास इह दोनों भाई।
गुरु के घरि की कम टहिल एनां सब उठाई।

जब भाई मतीदास जी को कोतवाली से निकाल कर चांदनी चौक लाया गया तो काजी ने धड़ चीरने अथवा धर्म-परिवर्तन में से अंतिम बार अपनी इच्छा बताने के लिए कहा तो भाई मतीदास जी ने उत्तर दिया :

टुकड़े ऐस सरीर दे, करो जो लख करोड़।
तां वी धरम न छोड़सां, दीन तेरा नहीं लोड़।
आरा पिआरा लगत है, कारा करो बनाय।
सीस जाए ता जाणे दे, सिखी सिदक न जाए।

आखिर धर्म की खातिर भाई मतीदास जी शहीद हो गए। उन्हें सरे बाजार लकड़ी के दो तख्तों में कस कर दोफाड़ कर शहीद कर दिया गया। भाई साहिब निरंतर बाणी उच्चारते रहे और गुरु-चरणों का ध्यान करते-करते गुरु-चरणों में ही विलीन हो गए। भाई मतीदास जी ने एक बार भी कोई घबराहट या कष्ट का आभास नहीं होने दिया। उनके सिक्खी सिदक की झलक उनके तेजमयी चेहरे से साफ नजर आ रही थी। दुनिया ने ऐसा बलिदान न देखा न सुना था। इस बलिदान को देखकर भाई दिआला जी ने कहा था, "आपने आज केवल एक बेगुनाह सिक्ख को ही नहीं चीरा है बल्कि बाबर की तैश और बादशाही चिरवा दी है।" किसी ने सच ही कहा है, "विनाशकाले विपरीत बुद्धि।" यह सुनते ही काजी और अन्य कर्मचारी क्रोधित हो उठे। उन्होंने भाई दिआला जी के हाथ-पांव अच्छी तरह बांध कर उन्हें खौलते पानी की देग में बिठा दिया और वे शहीद हो गए। सतिगुरु के प्रिय संगी और अनन्य सेवकों के मुख से एक बार भी 'सी' तक नहीं निकली। अंत में भाई सतीदास जी के शरीर पर रुई लपेट कर उन्हें जिंदा जला कर शहीद कर दिया गया।

इस प्रकार गुरु-घर के तीनों सेवक अपने धर्म, कौम, संस्कृति की सुरक्षा के लिए अडिग रह कर आत्म-बलिदान की बलिवेदी पर न्यौछावर हो गए। यह घटना १० नवंबर, १६७५ ई की है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समक्ष उनके अत्यंत प्रिय सिक्खों को शहीद कर दिया गया। शासकों का विचार था कि गुरु जी के सिक्खों का इतनी निर्दयता से अंत किया जाए कि श्री गुरु तेग बहादर जी का मन विचलित हो जाए और वे मृत्यु से भयभीत होकर अपना निर्णय बदल कर धर्म-परिवर्तन कर लें, लेकिन यह उनका मात्र भ्रम था। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और इच्छा-शक्ति से शहीद होना स्वीकार किया।

११ नवंबर, १६७५ ई को सच्चे पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर जी को चांदनी चौक में शहीद कर दिया गया। उनके इस बलिदान की गाथा को 'बचित्र नाटक' में इस प्रकार चित्रित किया गया है :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥५॥

श्री गुरु तेग बहादर जी तथा उनके सिक्खों की कुर्बानी को सृष्टि के रहते कोई भी भुला नहीं सकेगा। यही कारण है कि शहीदी के पश्चात आज भी उनकी पावन स्मृति को अरदास में सम्मिलित कर हम उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा . . .

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

समस्त कालखंड को चारों भागों में विभाजित किया गया है और इन्हें चार युगों का नाम दिया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग का उल्लेख आता है। इनमें सतयुग को सर्वश्रेष्ठ काल कहा गया है जब घर-घर में भक्ति का वास हो और ज्ञान भली-भांति स्थापित हो। त्रेता युग में धर्म-कर्म में पाखंड व्याप्त हो जाने से ज्ञान की सत्ता अस्थिर हो उठती है। द्वापर युग में पाखंड के साथ ही दुविधा भी अपने पैर पसार लेती है जिससे आदि सच को शंका से देखा जाने लगता है और परमात्मा के अस्तित्व पर तर्क किये जाने लगते हैं। कलयुग अर्थात् वह कालखंड जिसमें हम आज जी रहे हैं, अस्थिरता और अज्ञानता का काल है:

कलजुगि धरम कला इक रहाए ॥
इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥
माइआ मोहु अति गुबारु ॥
सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥ (पन्ना ८८०)

ज्ञान का जो सिंहासन सतयुग में चार पैरों पर स्थापित और स्थिर था वह त्रेता और द्वापर से गुजरता हुआ, अपना स्थापित्व खोता हुआ कलयुग में मात्र एक पैर के सहारे टिका हुआ है। चारों ओर माया-मोह का अंधकार फैला हुआ है। इस युग में मनुष्य के लिये यह निर्णय करना कठिन हो गया है कि सुकर्म क्या है और कुकर्म क्या है। वह आवागमन के फेर में पड़कर दुख भोग रहा है :

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥रहाउ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥
गुर ते प्रीति बढ़ी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥ (पन्ना ४८७)

इस युग में मनुष्य को वही कर्म भले लग रहे हैं जो दुष्फल देने वाले हैं। दुष्कर्मों में वह इस तरह लिप्त हो गया है कि परमात्मा उसे याद ही नहीं रहा। इसका परिणाम यह हो रहा है कि मनुष्य तन, मन और धन तीनों से ही दुखी है। तन व्यर्थ के कार्य-व्यवहार से रोगी हो गया है, मन सदैव बढ़ती लालसाओं से चिंता में घिरा हुआ है और धन, क्योंकि स्वभाव से ही चंचल है, इसलिये आ रहा है, जा रहा है, जबकि मनुष्य उसे अपना समझ बैठा है। मनुष्य परमात्मा से दूर है, सच को जान नहीं पा रहा है, इसी लिये वो फल मीठे समझकर खाये जा रहा है जो विष से भरे हुए हैं।

मनुष्य को सच से दूर रखने के लिये संसार में बहुत कुछ है। वह धन-सम्पत्ति की ओर सरलता से आकर्षित हो जाता है :

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९६०५३३*

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

शानदार, सुशोभित महल, सुख-सुविधाएं परमेश्वर को भुला देने में समर्थ हैं :

धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

राग-रंग का आकर्षण भी मनुष्य को ईश्वर से दूर ले जाने वाला है :

सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

यह भी हो सकता है कि मनुष्य आत्मिक शक्तियां विकसित कर ले और रिद्धियां-सिद्धियां उसके वश में हो जायें, उसमें चमत्कार करने की शक्ति आ जाये और लोग उसे आदर-सत्कार देने लगें। किन्तु यह भी परमात्मा से सम्बंध तोड़ने वाली स्थिति है अर्थात् उस साधना का कोई अर्थ नहीं जो भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिये हो और परमात्मा के न्याय-कार्य को अवरुद्ध करने वाली हो।

इसी गुरु-वचन में शासन-सत्ता को भी भ्रम बताया गया है:

सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

उक्त वचन वर्तमान अवस्था को समझने में सहायक और अनमोल हैं। पारस्परिक व द्वेष बढ़ रहा है, तनाव, चिंता, उद्विग्नता है, अविश्वास है, मनुष्य हिंसक हो रहा है तो इसी लिये कि परमात्मा से पहले धन-सम्पत्ति की चिंता है, यश-प्रतिष्ठा, सत्ता की चिंता है, जबकि उसे छोटी-सी बात समझ में नहीं आ रही है कि परमात्मा के नाम के अतिरिक्त यह सब व्यर्थ है:

तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥
बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥
अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥
जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल ब्रिथे बिनु नामा ॥ *(पन्ना २१५)*

सांसारिक प्राप्तियों की आग में जलते-जलते मनुष्य नष्ट हो जाता है किन्तु यह आग कभी नहीं बुझती। लालसाएं कभी समाप्त ही नहीं होती हैं। एक लहर टूटती है तो दूसरी उठ खड़ी होती है। यह क्रम अनवरत चलता रहता है। मनुष्य को यह समझ ही नहीं आता कि जो फल वह मीठा समझ कर खा रहा है वह तो विष से भरा हुआ है और इसका लग रहा मीठा स्वाद अंतत: उसके जीवन को कड़वाहट से भर देने वाला है। मिठास शीघ्र ही समाप्त हो जाने वाली है:

धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥
पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुंमणहार ॥
(पन्ना २३)

क्या जन्म इसी तरह मोह-माया में उलझ कर व्यर्थ गंवा देने के लिये है? मनुष्य के रूप में जो जन्म मिला है यह तो दुर्लभ है। इस अवसर का मोल जानना आवश्यक है। परमात्मा ही मनुष्य के अंदर ऐसी समझ पैदा कर सकता है :

माणस जनमु दुलंभु गुरमुखि पाइआ ॥

मनु तनु होइ चुलंभु जे सतिगुर भाइआ ॥
चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥
पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥
(पन्ना ७५१)

जिसने स्वयं को परमात्मा से दूर नहीं होने दिया और संसार के सच को समझ कर उसकी बाहरी चमक-दमक से दूर रहा, उसका जन्म सफल हो जाता है। परमात्मा का प्यार उसके तन-मन को अपने प्रेम के रंग से सराबोर कर देता है जिससे वह समस्त चिंताओं से मुक्त हो जाता है। जिस धन-सम्पत्ति के आने-जाने से मनुष्य सदैव चिंतित रहता है उससे मोह समाप्त करके उस धन की कामना करे जो उसे परमेश्वर की प्रीति में मिलने वाला है। ऐसा धन सदैव टिकने वाला है :

चीति आवै तां सद धनवंता ॥
चीति आवै तां सद निभरंता ॥
चीति आवै तां सभि रंग माणे ॥
चीति आवै तां चूकी काणे ॥ (पन्ना ११४१)

उस परम पिता का चित्त में वास होने से सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। सुकर्म और दुष्कर्म का भेद दिखायी देने लगता है। ऊपर से मीठे लगने वाले फल के भीतर की कड़वाहट सामने आ जाती है, आधारहीन विश्वास समाप्त हो जाते हैं और एक परमात्मा पर विश्वास दृढ़ हो जाने से मन सच्ची खुशी से भर उठता है। जब भ्रम दूर हो जाता है तभी समझ में आता है कि एक परमात्मा ही दाता है और वह सब कुछ दे सकता है:

तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥
तुमहि पारजात गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥ (पन्ना १२१५)

जो परमात्मा सभी सुखों का दाता है उसे न समझना मनुष्य की नासमझी है :

सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥
सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुसंभ रंगाना ॥
(पन्ना ७७७)

परमात्मा को भुलाकर भौतिक वस्तुओं के पीछे भागना बांवरापन है। मनुष्य उन वस्तुओं पर गर्व कर रहा है जो नाशवान हैं और छूट जाने वाली हैं :

सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥
सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥
(पन्ना ७७७)

मनुष्य यदि मिथ्या चीजों के मोह में नहीं बंधता और परमात्मा से प्रेम बढ़ाता है तो उसमें भी निहित खतरे की ओर गुरु अरजन देव जी अपने पावन वचन में इंगित करते हैं :

सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइआ ॥
सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ ॥
जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥
थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ ॥ (पन्ना ७७७)

परमात्मा को मन में बसा लेने वाला, परमात्मा के प्रेम में सराबोर हो जाने वाला मनुष्य यह न समझे कि उसने प्रभु को पा लिया है। ऐसा मनुष्य भी बिना कोई गर्व किये विनम्रता में रहे और स्वयं को उनके चरणों की धूल-मात्र समझे, सदैव परमात्मा को समर्पित रहे, विनम्र रहे और स्वयं को भुला दे। इस भावना से सिक्ख गुरु साहिबान की महानता का बोध होता है कि वे मनुष्य को किस तरह समस्त विकारों से बचाते हुए परमात्मा की राह पर आगे ले चलने का मंतव्य रखते थे और कितनी सूक्ष्म दृष्टि रखते थे कि मनुष्य कभी भी अपने पथ से, अपने उद्देश्य से विचलित न हो सके।

परमात्मा को पाने की यह एकदम अनूठी सोच थी जिसका कोई सानी नहीं है। परमात्मा के प्रेम में जो आनंद है वह कहीं और नहीं है। इसलिये आनंद को पाने की इच्छा हर हाल में बनी रहनी चाहिये :

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ (पन्ना १४)

उपरोक्त वचन में एक ऐसे जीवन की कल्पना की गयी है जो कठोरतम है। आयु करोड़ों वर्षों की है, खाने-पीने के लिये बस हवा है, निवास ऐसी गुफा में है जहां सूरज और चंद्रमा की रोशनी भी नहीं पहुंच सकती और सपने में भी सोना संभव न हो। ऐसी अवस्था में भी परमात्मा की महानता के प्रति प्रेम और विश्वास बना रहे :

कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ (पन्ना १४)

शरीर कितनी भी यातनाएं सहन करे, काट दिया जाये, बार-बार पीसा जाये, जल कर भस्म हो जाये फिर भी परमात्मा की महानता को मन जानता रहे :

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछु थीआ न खाउ ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥ (पन्ना १४-१५)

यदि पक्षी बन कर आसमान में भी उड़ना पड़े। किसी की दृष्टि भी न पड़े अर्थात् कोई महत्व ही न रहे। खाने, पीने के लिये भी कुछ न हो इसमें भी प्रभु की महानता है।

ऐसा अटल विश्वास ही कदाचित परमात्मा से प्रेम की पहली सीढ़ी होती है। ऐसे विश्वास का उत्पन्न होना संभव है और परमात्मा ही इसका कारण होता है:

हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥
आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥ (पन्ना १७४)

परमात्मा का हर जगह वास है और वह हर तरह अपने भक्त की इच्छा पूरी कर रहा है।

कविता

'भूतपूर्व' सामाजिक सरलता

लोग तब आंखों के रस्ते, दिल मिलाते थे।
दूर से ही मुस्कराकर, पास आते थे।
प्रेम कितना दिल में है, नैना बताते थे।
भाव कितने हैं मधुर, बैना बताते थे।
पूछते थे हाल केवल, रस्म की खातिर नहीं।
दूसरों के सुख में हंसते, दुख में होते दुखी।
प्रेम से ही बात सुनते थे, सुनाते थे।
हाल दिल का खोलते, कुछ न छुपाते थे।
भाव ऊंच-नीच का, न साथ लाते थे।
स्वार्थ के दुर्भाव भी, आड़े न आते थे।
दूसरों की उन्नति से, डाह करते थे नहीं।
सब सदा फूलें-फलें, यह चाह करते थे सभी।
गैर के दुख-दर्द में भी, आह भरते थे सभी।
हाथ थामें गैर का, हमराह बनते थे सभी।
दूसरों का दुख मिटाने, दौड़े चले आते थे।
मानवीयता के सभी, रिश्ते निभाते थे।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो: ९४११६०७६७२

गुरबाणी में ध्वनि और रंग विज्ञान

*-श्री वीरेन्द्र कुमार**

प्राणी-जगत के अंतर्मन में बसा नाद, जिसकी धुन पर उसका रोम-रोम थिरकता है, जो नाद उसके अंग-संग में बसा है, जो नाद उसकी आत्मा को स्पर्श करता है, जिससे उत्पन्न रस में यह प्राणी-मात्र समा जाना चाहता है, वह नाद ही प्रकृति का अनहद नाद है। यह वो नाद है जिसमें समस्त ध्वनियां सामाहित हैं, जिसका श्रवण होने पर आत्मा उसके प्रेम-रस में अपने आप को पूर्णतः लीन हुआ अनुभव करती है। गुरबाणी इस अनहद नाद से उत्पन्न उस रस का इस प्रकार वर्णन करती है :

--मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ *(पन्ना १७३)*

--चात्रिकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ *(पन्ना १२७३)*

--जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे अघाइ ॥ *(पन्ना १३५)*

वही नाद मानवीय ही नहीं प्रत्युत् प्रत्येक प्राणी भी श्रवणेंद्रियों द्वारा शब्दों के रूप में शक्ति का संचार करता है, परन्तु वही शब्द जिनका वाचन मधुर हो और जिनका श्रवण मधुर हो ऐसे शब्दों में छिपी अनंत उर्जा को रैजोनैंस की संज्ञा से विज्ञान पहचानता है।[१]

विज्ञान ने सिद्ध किया कि प्रत्येक वस्तु, यथा ग्रह, उपग्रह, तारामंडल आदि सभी में कंपन होता है। वे सभी इसी कंपन के कारण ही थिरकते हैं, यहां तक कि पदार्थ का आधार माने जाने वाला ऐटम भी अपने केन्द्र के गिर्द घूमता है। गुरबाणी कहती है :

--घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥ *(पन्ना ४०४)*

--घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥ *(पन्ना ९१६)*

यह कंपन प्रत्येक वस्तु एवं व्यक्ति की भिन्न-भिन्न होती है। इसी कंपन में ध्वनि (संगीत/शबद) का महत्वपूर्ण योगदान है, वही मानसिक खुराक है।

जो इस प्रकार सिद्ध किए जा सकते हैं, यथा राष्ट्रीय-गान से देश-भक्ति की भावना जागृत होती है, मां की लोरी से बच्चा सुकून से निद्रा के वशीभूत हो जाता है, मातम के अवसर पर आने वाली शोक-ध्वनि से स्वतः आंखें भर जाती हैं, विवाह पर ढोल के स्वरों से पांव अपने आप नाचने लग जाते हैं।

अतः मानवीय जीवन में कंपन से उत्पन्न ध्वनि अथवा राग का महत्वपूर्ण प्रभाव स्पष्ट है, किन्तु अन्य प्राणियों में भी उसके प्रभाव के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, यथा: गाय, भैंसें भी संगीत को सुनकर दूध अधिक मात्रा में देती हैं तथा पेड़-पौधों को भी संगीत की पहचान होती है।[२]

अब इन सबका कारण खोजें तो इनके पीछे होने वाली क्रिया ही रैजोनैंस कहलाती है। जब किसी एक की कंपन दूसरे से मिलती है तो ये सब (गाय आदि का अधिक दूध देना आदि) घटित होता है। इसी रैजोनैंस के कारण ब्रह्मांड

**संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२*

की उत्पत्ति हुई जिसे विज्ञान बिग-बैंग कहता है तथा पावन गुरबाणी 'कवाउ' के नाम से जानती है:

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥ (पन्ना ३)

परन्तु जब किसी का कंपन -ve कंपन से मेल खाता है तो -ve रैजोनैंस के कारण शक्ति का नाश भी होता है, जैसे-क्लेश की ध्वनि, डी. जे., लाउडस्पीकर आदि।[३]

राग की एकाग्रतापूर्वक साधना करने से उससे उत्पन्न कंपन प्रकृति के कंपन से मेल खाकर रैजोनैंस द्वारा अत्यंत तीव्र उर्जा प्रदान कर सकती है, जैसे तानसेन अपने रागों से दीये तक जला देता था। गुरु नानक साहिब ने रागों द्वारा ध्यान की एकाग्रता से उस परम-तत्व को प्राप्त कर लिया था :

धंनु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइ ॥
(पन्ना ९५८)

अत: पावन गुरबाणी कहती है कि रागों में ही अनंत असीम आनंद छिपा है, जिससे एक अच्छा समाज रचा जा सकता है :

राग एक संगि पंच बरंगन ॥
संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ (पन्ना १४२९)

इस तथ्य अथवा विचार का साक्षात् प्रमाण यहां देखने को मिलता है--नासा विज्ञानी श्री वासु भारद्वाज ने हड्डियों कें कैंसर से निजात पाने के लिए दुनिया घूम ली, परन्तु कहीं से भी उनका इलाज न हो पाया। अंतत: उन्हें स्ट्रेचर पर श्री हरिमंदर साहिब लाया गया, जहां उन्होंने लगातार दो दिन गुरबाणी का पाठ सुना, जिसके बाद वे एक दम निरोग हो गए। टैस्ट करवाने पर पता चला कि उन्हें हड्डियों का कैंसर नहीं है।[४]

अब बात करते हैं रंगों की। विज्ञान मूलत: लाल, हरा और नीला केवल इन्हीं तीन रंगों को मानता है। सात रंगों से भरे इस जगत् का आधार इन्हीं तीनों को इसलिए माना जाता है कि अन्य रंग इन्हीं तीनों के योग से बनते हैं। लाल रंग की वेब लैंथ सबसे ज्यादा और नीले की सबसे कम मानी जाती है।[५]

इसी लिए ब्रह्मांड में फैले तीनों रंगों में से सूर्य का सफेद प्रकाश जब गुजरता है तो वेब लैंथ कम होने के कारण केवल नीला रंग ही फैल कर वायुमंडल को अपने रंग में रंग देता है। अत: इसे पसंद करने वाले लोग भी बांटने में विश्वास रखते हैं।[६] लाल रंग की वेब लैंथ ज्यादा है, इसलिए इसे एकाग्रता का सूचक माना जाता है क्योंकि यह फैलता नहीं अर्थात् भटकता नहीं, सही लक्ष्य देता है।[७]

--लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥
मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥
(पन्ना ८०८)

--साजन रांगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइआ ॥
(पन्ना ७६७)

हरे रंग को परमात्मा ने प्रकृति को दिया जिसे गुरबाणी इस प्रकार बयान करती है :

सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥
हर हरा सुआमी सुखह गामी
अनद मंगल रसु घणा ॥ (पन्ना ८४७)

और हरे रंग को पसंद करने वाले व्यक्ति संवेदनशील होते हैं और सबका भली-भांति परीक्षण करके ही विश्वास करते हैं।[८] गुरबाणी उन रंगों के विषय में तथा उस रंगने वाले परमात्मा के विषय में कहती है :

काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥
(पन्ना ७२२)

इसके अतिरिक्त गुरबाणी में नेत्रों को असीम शक्ति का स्रोत कहा गया है, उसी शक्ति को अनंत माना गया है, यही मानव के अंत:पुर का आईना माने जाते हैं। प्रभु-नाम का जप-तप करने वाले आध्यात्मिक-जन अपने नेत्रों को बंद करके ही उसकी असीम शक्ति को एकत्रित करते थे, जिससे उनकी कृपा-दृष्टि से सब कुछ तृप्त हो जाता था तथा क्रोध-दृष्टि से सब भस्म। जिनका परमात्मा से अत्यन्त प्रेम होता है उनकी आंखों से नीर बह उठता है।[९] इसे गुरबाणी यूं कहती है :

--दुइ दुइ लोचन पेखा ॥
हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ (पन्ना ६५५)
--हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ (पन्ना ९४)

मनुष्य के मस्तिष्क में होने वाली निरंतर ऊहा-पोह तरंगों के रूप में आंखों से व्यक्त होती है, यथा तनाव में मनुष्य पलकें ज्यादा झपकता है तथा जब उसका मन शांत होता है तो पलकें कम झपकता है। जब वह शांति चाहता है तो आंखें बंद करके ही अपनी पेरशानी अथवा सोच से छुटकारा पाने की कोशिश करता है, क्योंकि इस प्रकार उसके भीतर शक्ति का संचार हो जाता है।[१०]

इसका एक उदाहरण महाभारत की गांधारी सबके समक्ष है। गांधारी ने आंखों पर पट्टी बांधी जिससे उनकी आंखों में शक्ति एकत्रित होने लगी। उसने इस शक्ति का प्रयोग दुर्योधन के शरीर को फौलाद बनाकर किया, परन्तु उसके शरीर पर जहां उसकी दृष्टि नहीं गई वहीं उसकी इस शक्ति का प्रभाव नहीं पड़ा जो दुर्योधन की मृत्यु का कारण बना।[११]

अत: हम परमात्मा द्वारा दिए इन नेत्रों की असीमित शक्ति का प्रयोग उस परमेश्वर को पाने के लिए ही करें। गुरबाणी इस विषय में कहती है :

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥
हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥
कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥ (पन्ना ९२२)

अंतत: परमेश्वर से सतत् प्रार्थना करते रहें कि मेरे नेत्र अच्छा ही देखें तथा सर्वत्र अच्छा ही हो, क्योंकि ये प्रभु को देखने का एक साधन हैं। गुरबाणी इसे इस प्रकार कहती है:

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥
(पन्ना १३८२)

संदर्भ सूची

१. गुरबाणी में मौजूदा तथा भविष्यत विज्ञान, पृष्ठ २४
२. उपरोक्त, पृष्ठ २५
३. उपरोक्त, पृष्ठ २७
४. पंजाबी ट्रिब्यून, चंडीगढ़, वृहस्पतिवार, २० अप्रैल, २००६, पृष्ठ १०
५. गुरबाणी में मौजूदा तथा भविष्यत विज्ञान, पृष्ठ ३५
६-७. वही, पृष्ठ ३९
८. गुरबाणी में मौजूदा तथा भविष्यत विज्ञान, पृष्ठ ४०
९. उपरोक्त, पृष्ठ ४६
१०-११. उपरोक्त, पृष्ठ ४७

गुरुद्वारा बादशाही बाग, अंबाला

*–डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही'**

अंबाला शहर से चंडीगढ़-हिसार राजमार्ग की ओर जाते हुए, पश्चिम की ओर कचहरी के निकट एक भव्य एवं विशाल गुरुद्वारा स्थित है। यह गुरुद्वारा बादशाही बाग के नाम से जाना जाता है। पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरु-पद का दायित्व संभालने के बाद भ्रमण करते हुए इस स्थान पर पहुंचे। उन दिनों अंबाला व निकटवर्ती क्षेत्रों में आम्रकुंजों की भरमार थी। आमों की छटा देखकर गुरु जी कुछ दिनों के लिए यहीं ठहर गये। आम के जिस बाग में उन्होंने पड़ाव डाला, वह बादशाही बाग के नाम से प्रसिद्ध था। अंबाला के तत्कालीन दंभी हाकिम (नाम का उल्लेख नहीं मिलता) को जब गुरु जी के वहां ठहरने व उनके पास एक बाज होने का समाचार मिला तो उसने दंभ में भरकर गुरु जी को कलहवा भेजा कि वे उसके बाज से बाज लड़ायें तो जानें। गुरु जी को अन्य लोगों से भी उसके घमंड व अन्य कारगुजारियों की खबर मिल चुकी थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ मगरूर हाकिम का दर्पदमन करना चाहते थे, इसलिये उन्होंने संदेश भेजा कि बाज से बाज नहीं बल्कि उसके (हाकिम के) बाज से चिड़ियों को लड़वायेंगे। हाकिम पर तो मगरूरियत का नशा चढ़ा ही हुआ था, अतः वह तैयार हो गया। गुरु जी ने दो चिड़ियों को अपने आलौकिक प्रकाश से प्रकाशित कर, हाकिम के बाज की ओर छोड़ दिया। चिड़ियां अतिरिक्त ऊर्जा से मंडित होकर बाज पर टूट पड़ीं। उसे खदेड़ते हुए वे बादशाही बाग से लगभग दो किलोमीटर दूर ले आयीं। बाज को जख्मी कर वहां स्थित झाड़ी में गिरा दिया।

हाकिम यह आलौकिक दृश्य देखकर गुरु जी के चरणों में गिर गया व उनसे क्षमा-याचना की। जिस बादशाही बाग में गुरु जी ठहरे थे वहां उनके आगमन की स्मृति में एक भव्य गुरुद्वारा साहिब स्थित है, जो गुरुद्वारा बादशाही बाग के नाम से जाना जाता है। प्राचीन गुरुद्वारा साहिब के स्थान पर नये व भव्य गुरुद्वारा साहिब का निर्माण-कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। गुरु-पर्व पर यहां हजारों श्रद्धालु उमड़ पड़ते हैं। ❀

कविता

बिजूका नहीं रह गई हैं अब औरतें

बिजूका नहीं रह गई हैं अब औरतें।
नहीं वे अब घर की चारदीवारी में कैद
वे हाड़-मांस का निर्जीव लोथड़ा भी नहीं हैं
जिससे जब चाहा खेल लिया।
प्राच्य ग्रंथों में वर्णित
"शक्ति-स्वरूपा औरतों" का
स्वरूप अब पुनः धर रही हैं औरतें।
अंतरिक्ष की ऊंचाइयों से
सागर की गहराइयों तक
सब कुछ माप रही हैं अब औरतें।
जीवट, कर्त्तव्यनिष्ठा, जिजीविषा की
नित नई परिभाषाएं गढ़ रही हैं औरतें।
जीवन के हर मोर्चे पर
अपराजिता रह कर
शक्ति के नए प्रतिमान
स्थापित कर रही हैं औरतें।
बिजूका नहीं रह गई हैं अब औरतें।

❀

**विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग, एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर (हरियाणा)*

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी

-श्री संजय बाजपेयी रोहितास*

श्री गुरु नानक जी की कृपा।
अंधियारा जंगल जा छिपा।
धर्म पर अब न होगा कोई सितम।
अवतरित श्री गुरु बाला प्रीतम।
सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब।
वाहिगुरु मन वे बिसरे थे कब?
हर पल मन करे वाहिगुरु-सिमरन।
पुत्र-रूप में शक्ति अवतरण।
क्या आपका और क्या है मेरा?
आठ सावन संवत् सत्रह सौ तेरह।
तद्नुसार सात जुलाई सोलह सौ छप्पन।
बाला प्रीतम जन्म से खुश सबके मन।
धन्य हुई मां श्रीमती किशन कौर।
प्रमुदित नाच रहा मन मोर।
बाला प्रीतम ने 'हरिक्रिशन' नाम पाया।
सुन कर सबका मंद-मंद मुस्कराया।
श्री गुरु बाला प्रीतम गुरु-ज्ञान ज्योति।
मन संकलित प्रेम के मोती।
सरल भावना ज्ञान की आग।
बाला प्रीतम बुद्धि कुशाग्र।
सप्तम पातशाह के वे प्यारे।
वे हर सिक्ख की आंख के तारे।
उनका सच अध्यात्म महातम्।
गुरगद्दी सुयोग्य बाला प्रीतम।
हुक्म मानती जल-अग्नि-वायु।
सवा पांच वर्ष बाला प्रीतम की आयु।
विधि ने की सबकी आंखें नम।
पितृ-शोक ग्रस्त हुये बाला प्रीतम।
श्री गुरु हरिराय ज्योति-जोत समा गये।
सच्चाई का सिक्का जमा गये।
उचित दिशा और उचित थी राह।
बाला प्रीतम बने गुरु अष्टम पातशाह।
वे मशाल वाहिगुरु शक्ति की।
वे सच-अर्थ बने गुरु-भक्ति की।
उनमें श्री वाहिगुरु का वास।
वे बुझाते ज्ञान की प्यास।
नित्य गुरु दरबार था सजता।
गुरु का प्रभुत्व नित्य ही बढ़ता।
जो कोई गुरु-द्वारे आया।
मन मांगा फल उसने सब पाया।
जो कोई आया खोटी नियत से।
वह रंग गया धर्म और सत्य से।
जसवंत राय नाम का एक जेबकतरा।
गुरु-दर्शनार्थियों की जेब पर खतरा।
नजर में वह गुरु साहिब की आया।
गुरु बाला प्रीतम ने शबद गाया।
"चोर की हामा भरे न कोइ ॥
चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥"
यह सुन जसवंत राय गया कांप।
मर गया मन में पाप का सांप।
गुरु-चरणों में गिर क्षमा मांगी।
मन में वाहिगुरु की लौ लागी।
बाला प्रीतम को समझा था सबने।
माफ किया गुरु हरिक्रिशन साहिब ने।
अष्टम पातशाह साहिब का नूर।
याचक के रोग हो गये दूर।
उस मानसिक रोगी की याचना।
सच्चे पातशाह मेरा हित सोचना।

*C/o जनाब हुसैनी मियां साहब, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)-२४११२६

मन उचाट बस गई है चिंता।
मेरी तो कोई न सुनता।
अष्टम पातशाह ने निहारा।
मिल गया उसको प्रबल सहारा।
श्री गुरु साहिब का उपदेश--
"अब न कटाना अपने केश।
गुरबाणी का करना पाठ।
मन शीतल तो होवैं ठाठ।"
श्री गुरु वचन सत्य जरूर।
रोगी के रोग हो गये दूर।
ज्येष्ठ भाई रामराय बना वैरी।
उसकी बुद्धि कुतर्क से फिरी।
अंधकार रथ पर सवार।
बादशाह औरंगजेब से की पुकार।
दिला दे मुझको तू गुरगद्दी।
तब तेरे काम करूं मैं सिद्धी।
औरंगजेब को मिल गया बहाना।
गुरु बाला प्रीतम को बुलवाना।
इस एक तीर से दो शिकार।
मुगल अधीन हो गुरु-परिवार।
औरंगजेब ने मोहरा साधा।
राजा जै सिंह दूर करे बाधा।
बादशाह के मन बात यह आई।
वो है गुरु-घर का अनुयाई।
जै सिंह अगर लिखेगा खत।
बाला प्रीतम तब आयेंगे तुरंत।
बादशाह तब राजा जै सिंह तक आया।
उनसे उसने खत लिखवाया।
"पंथ खालसा में सचमुच दम।
आओ प्यारे श्री गुरु बाला प्रीतम।
आपको मैं भरपूर निहारूं।
अपना लोक-परलोक संवारूं।
करूं मैं आपकी जी-हजूरी।
बादशाह से मिलना न जरूरी।"
राजा जै सिंह का खत पढ़कर।

अष्टम पातशाह चले बढ़कर।
राह में श्री वाहिगुरु का नाम।
चरणों में सब करें प्रणाम।
अंबाला का गांव 'पंजोखरा'।
पंडित लालचंद घमंड से भरा।
व्यंग्य-बाण वर्षा की शुरू।
"दूध के दांत और बन गये 'गुरू'।
आप अगर सचमुच के 'गुरु'।
तो फिर गीता का अर्थ करो शुरू।"
अष्टम पातशाह साहिब मुस्कराये।
चंद शब्द उनके होठों पर आये।
कहा, "पंडित जी! तुम हो जिद्दी।
देखो अब श्री वाहिगुरु की सिद्धि।
ले आओ कोई भी इंसान।
वाहिगुरु-कृपा बनाये महान।"
लालचंद ने छज्जू को खोजा।
हाथ में जो पहने था मोजा।
मंद-बुद्धि गूंगा इंसान।
आगे क्या हुआ, देना ध्यान।
अष्टम पातशाह साहिब की छड़ी।
छज्जू के मस्तक पर चढ़ी।
गुरु बाला प्रीतम जी वचन अलाये।
छज्जू में ज्ञान व ज्योति आए।
छज्जू मन जगमग गुरु-नूर।
गीता अर्थ हो गया हजूर।
पंडित लालचंद का घमंड चूर।
पाखंड से वह भी हुआ दूर।
श्री गुरु साहिब जी के चरण।
पंडित लालचंद आया शरण।
सब मिल बोलें, "सत श्री अकाल"।
अब यह राजा जै सिंह का महल।
श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की दया।
राजा जै सिंह धन्य हो गया।
धन्य हुई राजा की रानी।
वह श्री वाहिगुरु की ध्यानी।

प्रिय गुरु साहिब जी की परीक्षा।
रानी ने मन में की इच्छा।
यदि गुरु साहिब जी अंतरयामी।
तो फिर वे इस जग के स्वामी।
यदि है उनका सच्चा महातम्।
तब मेरी गोद में बैठें बाला प्रीतम।
गुरु बाला प्रीतम सत्य सुंदरतम्।
सौ-सौ पायल करते छम-छम।
सबके बीच में छिप गई रानी।
गुरु बाला प्रीतम घट-घट के ध्यानी।
दिख गई बालसुलभ चंचलता।
बालक ढूंढ रहा है ममता।
कुछ पल वक्त गया था थम।
रानी की गोद बैठे बाला प्रीतम।
धन्य हुई दिल्ली की रानी।
राजा जै सिंह ने उनकी बात ये मानी।
राज-परिवार ने की थी पहल।
बाला प्रीतम को दिया अपना महल।
मनभावन सुंदरतम् प्यारा।
आज वहां बंगला साहिब गुरुद्वारा।
खुश हो गये राजा और रानी।
अब आगे की सुनो कहानी।
बादशाह के संदेशवाहक आये।
औरंगजेब ने तोहफे भिजवाये।
आप जी से मिलने की इच्छा।
आप जी के मन वाहिगुरु सच्चा।
गुरु बाला प्रीतम को सब याद।
अस्वीकार बादशाह की फरियाद।
आप जी ने कहा, बादशाह है क्रूर।
उससे मिलना तो था जरूर।
यदि होता वह धर्म-पक्षधर।
यदि वह मान रहा होता गुरु-घर।
जालिम, दुष्ट, क्रूर, अन्यायी।
औरंगजेब जुल्म का अनुयाई।
वस्त्र शुभ्र इरादे श्याम।
गुरु-घर का इससे क्या काम?
आगे कथा में मन होगा भारी।
फैल गई चेचक महामारी।
दिल्ली में था चेचक का तांडव।
जगह-जगह दिखते थे शव।
गुरु बाला प्रीतम जी दुखहर्त्ता।
वह दुखियों के सुख के कर्त्ता।
वाहिगुरु लोक-सुगंध थी महकी।
आप जी ने सेवा की रोगियों की।
मकान किराये की यह काया।
चेचक का प्रकोप आप जी पर आया।
गुरु बाला प्रीतम सबके प्यारे।
महल छोड़ गये यमुना किनारे।
तीस मार्च सन् सोलह सौ चौंसठ।
लगी थी मन श्री वाहिगुरु की रट।
संगत को हुक्म, "बाबा बकाले"।
गुरगद्दी उत्तराधिकारी पा ले।
रिश्ते में 'बाबा' गांव 'बकाला'।
वाहिगुरु जप अमृत का प्याला।
जिसमें श्री वाहिगुरु का नूर।
नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर।
तब आप जी ज्योति-जोत समा गये।
धर्म की बड़ी रकम कमा गये।
आप जी ने अंतिम सांस ली जहां।
गुरुद्वारा श्री बाला साहिब है वहां।
हो आवाज "सति श्री अकाल" की।
अल्प आयु पौने आठ साल की।
इतने में जिया जितना जीवन।
पैठ गये वे हर प्राणी के मन।
बन गये होठों की मुसकान।
धन्य गुरु बाला प्रीतम जी महान।

अरदास : *किआ मागउ किछु थिरु न रहाई*

*-भाई किरपाल सिंघ**

समय के साथ-साथ एक जिज्ञासु भौतिक सुखों से ऊंचा उठकर अधिक से अधिक रूहानी दुखों की आवश्यकता महसूस करता है। हमें यह अरदास करनी है :

"झूठ से सत्य की तरफ, अंधकार से प्रकाश की तरफ तथा जन्म-मृत्यु से मोक्ष की तरफ ले चल।"

जैसे-जैसे जिज्ञासु को भीतरी अनुभव होता रहता है उसकी सांसारिक वस्तुओं के लिए इच्छा बहुत कम होती चली जाती है। उसे इस अटल सत्य का अनुभव होते ही, चाहे यह कितना भी छोटा क्यों न हो, दुनिया के सारे सुख तथा नाशवान वस्तुएं फीकी लगने लगती हैं। इसलिए वह शारीरिक सुखों की मांग नहीं करता :

किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥
देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥ (पन्ना ४८१)

अर्थात् मैं किस चीज के लिए अरदास करूं, यहां तो कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है!

सारा विश्व "खाओ, पीओ और ऐश करो" के सिद्धांत के पीछे पागल हुआ फिरता है। किसी को भी प्रभु या आत्म-चिंतन का समय नहीं है, लेकिन सच्चे जिज्ञासु को संसार की कोई भी वस्तु लुभा नहीं सकती। जो कुछ भी उसके रास्ते में आता है वह उसका सही ढंग से इस्तेमाल करता है और केवल उसे शरीर की एक आवश्यकता समझ कर उपयोग करता है तथा शेष समय साधना करने में लगाता है, जिससे उस रूह को अधिक से अधिक लाभ मिल सके:

खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥
भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥
(पन्ना २६१)

अर्थात् सारा संसार खाने-पीने, हंसने-खेलने में ही मस्त है। इसलिए हे मालिक! मुझे इस भवसागर में से निकालो क्योंकि मुझे तेरी ही टेक (सहारा) है।

इसके बाद जिज्ञासु केवल अपनी भीतरी प्रभु-सत्ता के लिए ही जीता है और उसके ही नाम की महिमा करता है :

घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥
नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥
(पन्ना ५५४)

अर्थात् उस प्रभु के चरण मेरे हृदय में बसें और मेरी ज़ुबान पर उसी गोपाल का ही सिमरन होता रहे। इसलिए इस शरीर की देख-रेख इस तरह करनी कि प्रभु मुझे याद रहे।

इस मार्ग पर चलते हुए जिज्ञासु को अपनी अज्ञानता का अहसास होता है तथा अपनी निर्बलता को जानते हुए वह प्रभु से अरदास में ऐसे मांगता है :

मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥
मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥ (पन्ना ८७३)

अर्थात् हे प्रभु! मुझे इस भवसागर से पार कर। मैं आपका अज्ञानी दास तैरना भी नहीं

२२१, सेक्टर-१८, पंचकूला (हरियाणा)

जानता। इसलिए हे पिता! मुझे बचाने के लिए अपना हाथ दो।

ज्यों-ज्यों उसका नजरिया बदलता है त्यों-त्यों उसकी अरदास में बदलाव आता रहता है। शुरू में मनुष्य भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही अरदास करता है, लेकिन जब वह रूहानी मार्ग पर चल पड़ता है तो वह अपने रास्ते में आने वाली रुकावटों, जैसे कि इंद्रिय-विकार, मन की चंचलता तथा संस्कारों के प्रभाव से बचने के लिए अरदास करता है। साधक के जीवन में यह समय बहुत संघर्षपूर्ण होता है। जब तक उसको असल आत्म-ज्ञान नहीं होता वह लगातार अस्थिरता की स्थिति में रहता है तथा दाएं-बाएं की भटकन में उलझा रहता है। न वह पूर्ण रूप में इस संसार का होता है और न ही परमात्मा का, जबकि दुनिया की नजरों में वह बड़ा श्रद्धावान होता है, लेकिन उसे अपने मन ही मन अपनी कमियों-कमजोरियों का अहसास होता है :

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥
(पन्ना १३८१)

भक्त फरीद जी कहते हैं कि मेरे कपड़े काले हैं और मेरा सारा पहरावा काला है। मैं गुनाहों में लिप्त हूं, लेकिन फिर भी लोग मुझे दरवेश कहते हैं।

इस संदेश-अवस्था में साधक कई बार बेमुख होकर इस झमेले से भागने की कोशिश करता है, लेकिन कुछ समय बाद ही अपनी आत्मा की आवाज उस पर हावी हो जाती है, उसे ढांढस मिलता है और वह फिर प्रभु की तरफ लग जाता है।

जब तक मनुष्य इंद्रियों के वश में रहता है और मन की अस्थिरता पर उसका काबू नहीं होता तब तक प्रभु की ज्योति उसके अंदर प्रकट नहीं होती। जिनका हृदय शुद्ध है वे ही प्रभु का दीदार कर सकने में सक्षम हैं :

दस इंद्री करि राखै वासि ॥
ता कै आतमै होइ परगासु ॥ (पन्ना २३६)

मन की तरंगें बहुत ही सूक्ष्म तथा खतरनाक होती हैं। यह गुप्त हमले करता है। हमारे अंदर छुपी बुराइयां चाहे लुप्त हैं लेकिन बहुत ही बलवान होती हैं। समय आने पर वे किसी भी समय उभर पड़ती हैं और घातक सिद्ध हो सकती हैं। मन का यह वेग बिजली की तरह तेज, तीखा और खतरनाक मोड़ देता है कि साधक इसके बंधनों से आजाद होने में असमर्थ हो जाता है। इस समय यहां सतिगुरु की जरूरत पड़ती है जो अपनी शक्तिमान तथा लम्बी बाजुओं का सदका साधक को मन के बंधनों से आजाद करा लेता है :

सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥ (पन्ना ७५८)

अर्थात् गुरु के सिमरन से ही सोया हुआ मन जागता है।

मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ

एक स्त्री विवाह के बाद जिंदगी का नया रूप, चाहे वह किसी तरह का भी हो, खुशी-खुशी अपना लेती है। उसे अपने पति के बिना और कुछ नहीं भाता। अब उसके पति की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह अपनी पत्नी की जरूरतों को पूरा करे तथा उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखे :

जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥
उस ते चउगुन करै निहालु ॥
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥ (पन्ना २६८)

अर्थात् जो कुछ भी उस प्रभु का है, उसके

हवाले कर दो और उसकी आज्ञा का पालन करो। बदले में वह कई गुना दया करके निहाल कर देता है। प्रभु सदा दयालु है।

जा का मीतु साजनु है समीआ ॥
तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥

(पन्ना १८६)

अर्थात् जिस मनुष्य का मित्र ही समर्थ हो तो उसे किस चीज की कमी आ सकती है?

एक बार एक राजा ने विदेश जाना था। उसने अपनी सारी रानियों से पूछा कि वह विदेश से उनके लिए क्या-क्या तोहफे लाए। किसी ने कीमती जवाहरात, किसी ने कीमती हीरे, किसी ने हार-श्रृंगार तथा किसी ने अन्य सजावट के सामान की मांग की। सबसे छोटी रानी, जो उसे बहुत प्यार करती थी, उसने विनती की कि आप विदेश से जल्दी वापिस आ जाना ताकि मैं आपके प्यार से विहीन न रहूं। वापसी के समय राजा ने सभी प्रकार के तोहफे रानियों के पास भेज दिए, जैसे-जैसे उन्होंने मांग की थी। वह खुद छोटी रानी के महल में चला गया और वह इस बात से बहुत खुश था कि कोई तो है जो उसे उसकी दौलत तथा पदार्थों से भी ज्यादा प्यार करता है। रानी ने भी अपनी अच्छी किस्मत पर परमात्मा का धन्यवाद किया कि उसका पति उसके पास था और उसे अपने पति से बढ़कर किसी चीज की कोई आवश्यकता नहीं थी। बाकी रानियों को चाहे उनकी मनपसंद कुछ सौगातें मिल गईं लेकिन उन्हें पति के ध्यानाकर्षण की खुशी न मिल सकी। पति के बिना उनके हार-श्रृंगार किस काम के थे?

इस प्रकार हम अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के अधीन प्रभु से केवल छोटी-छोटी दातों की मांग करते हैं। कभी भी प्रभु या सतिगुरु से उसे या उसकी दया की मांग नहीं करते। सांसारिक वस्तुओं के खजाने हमें थोड़ी-सी भी तृप्ति नहीं दे सकते, इसके विपरीत वे उस सदीवी सत्य से दूर ले जाते हैं और दुखी करते हैं। यदि केवल हम उस मालिक की दया-कृपा के पात्र बन जाएं तो उससे हमें किसी और वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती, बिना मांगे ही उसके सारे सुख (खजाने) हमें प्राप्त हो जाते हैं। यदि कहीं किसी कारण हमें सांसारिक सुख (चीजें) न भी मिलें तो इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ये चीजें मालिक तथा उसके प्यार के बिना कूड़े के ढेर हैं:

धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले ॥
धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहां नानक तै सह नाले ॥

(पन्ना १४२५)

अर्थात् यदि अपना मालिक अपने साथ है तो यह धन और पदार्थ शोभा देते हैं और यदि ये न भी हों तो भी मालिक की धूल में ही रहना शोभा देता है।

हमारे जिस्म के लिए मुख्य रूप से आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान होती है। इन चीजों की पूर्ति के लिए हम सुबह से शाम, दिन-रात बिना किसी आराम के घोर संघर्ष करते हैं। यहां तक कि हम इन सुखों के लिए, यदि ये कोई सुख पहुंचाते भी हैं, खुद को कुर्बान कर देते हैं। क्या हमें इसका अहसास है कि बच्चे के संसार में जन्म लेने से पहले ही उसका जीवन-काल लिखा जाता है? इसके बिना कोई जीव यहां जी नहीं सकता।

प्रकृति दुनिया में आने वाले राजकुमार के शाही स्वागत की तैयारी करती है और मां की छाती में दूध पहुंचाती है। मां की गोद का सहारा तथा उसकी छोटी से छोटी जरूरतें पूरी करने के लिए अनेकों सेवक तैयार करती है।

कादर की कुदरत उस बालक के लिए अपनी सारी ताकतों का इस्तेमाल करती है ताकि आने वाले राजकुमार पर अपना हक जता सके। ज्यों-ज्यों बालक बड़ा होता है और जवान अवस्था में दाखिल होता है वह अपनी जिंदगी की नई तरंगों को महसूस करता है, दुनिया उस पर 'माता' बन कर अपना हक जताती है। वह खुशी-खुशी उसकी सौगातों को अपना लेता है और अपने जन्म से पूर्व के प्रभु-घर को भूल जाता है।

संसार की सारी वस्तुएं नाशवान हैं। वे अस्थिर होती हैं और बदलती रहती हैं। कुछ भी स्थिर नहीं है। हर चीज का पतन और नाश होना है :

उपजै निपजै निपजि समाई ॥
नैनह देखत इहु जगु जाई ॥ (पन्ना ३२५)

अर्थात् पल में ही वस्तुएं पैदा होती हैं, प्रवान होती हैं और उनका नाश हो जाता है। आंखों के सामने ही यह संसार चलायमान होता रहता है।

इस परिवर्तनशील संसार में केवल एक ही वस्तु है जो सदा स्थिर रहती है, वो है प्रभु या उसकी सत्ता (परमात्मा का नाम या शबद), जो इस संसार की रचना, पालन तथा विनाश करती है। तो फिर क्यों न हम उसकी इच्छा करें, उसी को मांगें और अटल के लिए अरदासें करें, जिससे हमें सदा की जिंदगी प्राप्त हो जाए तथा हम अपनी अटल विरासत (निज धाम) पर पहुंचें और सदा के लिए प्रभुत्त्व को पा लें जो हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है :

निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ ॥
नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइओ ॥ (पन्ना २४१)

अर्थात् हे मालिक! हमार गुणों से रहित प्राणियों की अरदास सुनो और हमें दर्शन दो। सेवक अपने सतिगुरु की कृपा का सदका ही तुम्हारी शरण में आया है।

हमारा निज घर सचखंड है। कई युगों से हम अपने पिता से बिछुड़े हुए इस संसार में भटक रहे हैं। हमारे शरीर में जो आत्मा है वही हमारी जिंदगी का तारा है। यह कहीं दूर से चल कर आती है और इसका अस्त भी कहीं और ही होता है।

इसलिए प्रभु के आगे यही अरदास करनी चाहिए कि हे परमात्मा! हम युगों से बिछुड़ी हुई आत्माओं को अपने साथ जोड़ लें :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ (पन्ना १३३)

अर्थात् युगों-युगांतरों से हम अपने कर्मों के कारण बिछुड़े हुए हैं, इसलिए हे दाता! कृपा करके हमें अपने साथ मेल लो। हम चारों तरफ तथा दसों दिशाएं घूम चुके हैं और थक कर ही आपकी शरण में आए हैं।

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥ (पन्ना ६९४)

अर्थात् हे मालिक! बहुत जन्मों से हम बिछुड़े हुए हैं लेकिन यह जन्म मैंने अब तुम्हारे लेखे ही लगा दिया है। भक्त रविदास जी कहते हैं कि तेरे दर्शन किए बहुत समय बीत चुका है और हम केवल दर्शन की आशा में ही जी रहे हैं। श्री गुरु अमरदास जी विनती करते हैं :

बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥
होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥ (पन्ना ६६६)

अर्थात् हे मालिक! मैं इस संसार के बहुत

चक्कर लगा चुका हूं। अब मेरे पर ऐसी कृपा करो कि मुझे आपके दर्शन हो जाएं। श्री गुरु अरजन देव जी विनती करते हैं :

अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥
तुमरी क्रिपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥ (पन्ना २०७)

अर्थात् हे मालिक! बहुत योनियों में बहुत बार जन्म ले चुका हूं और बड़ा दुख भोगा है। अब तेरी कृपा से मनुष्य का जन्म मिला है, इसलिए कृपा करके अपने दर्शन दो।

मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥
रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥
भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥
तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥
करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥
(पन्ना ७०९)

अर्थात् हे मालिक! हम सब तरफ से थक-हार कर अब तेरे दर पर आ गए हैं, इसलिए हे दीन दयाल! अपनी कृपा से हमें जोड़ ले। हे परमात्मा! अब तू हमें रख ले, क्योंकि हम भटक-भटक कर थक गए हैं। हे परमात्मा! तू भक्तों का कल्याण करने वाला है और कर्त्तव्य को पहचानते हुए हमारा पापियों का भी उद्धार कर। तेरे बिना अन्य कोई नहीं जो मेरे जैसे दीन-दुखी की खबर ले सके। हे परमात्मा! यह संसार एक भयानक समुद्र है। इसमें से मुझे अपना हाथ देकर निकाल ले।

सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥
मै तनि अवगण एतड़े खसमु न फेरे चितु ॥
(पन्ना ७९०)

अर्थात् मेरी सारी सहेलियां अपने पति के साथ उसके प्यार में मग्न हैं। मेरी दोहागन की क्या गति? मेरे में इतने अवगुण हैं कि मेरा पति मेरी तरफ मुख ही नहीं करता।

करमहीन धन करै बिनंती कदि नानक आवै वारी ॥
सभि सोहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥ (पन्ना ९५९)

मैं कर्महीन विनती करती हूं कि हे मालिक! मेरी बारी कब आएगी? सारी सुहागिनें सुख मना रही हैं। कृपा करके अपनी कृपा-दृष्टि मुझे भी बख्श दो।

सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥
अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥
(पन्ना ५५८)

अर्थात् मेरी सारी सहेलियां अपने प्रीतम के साथ चली गई हैं। अब मैं दुर्भागन कहां जाऊं? अपने माता-पिता की आंखों की ज्योति थी मैं, लेकिन अब मैं अपने प्यारे को भाती नहीं और वह मेरी तरफ नजर भी नहीं करता।

करवतु भला न करवट तेरी ॥
लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥
हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥
करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥
(पन्ना ४८४)

अर्थात् हे वाहिगुरु! मेरी तरफ पीठ करने की जगह मेरे ऊपर आरा ही चल जाए। मैं तेरे बिना नहीं रह सकती, यह मेरी विनती है। अब मेरी तरफ अपना मुंह कर तथा मुझे अपने गले लगा ले। मेरी तरफ अपनी पीठ करके मुझे क्यों मार रहा है?

दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥
करहु अनुग्रहु पारब्रहम हरि किरपा धारि मुरारि ॥ (पन्ना ४३१)

अर्थात् हे वाहिगुरु! मुझे तेरे दर्शनों की बहुत प्यास लगी है। मेरे मन में कई तरह के

विचार उठते हैं। इसलिए हे मालिक! मेरी विनती स्वीकार कर तथा दया-कृपा की धारा मेरी तरफ भेज।

जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥
करहु क्रिपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा ॥ (पन्ना १२२१)

मेरा जीवन तो ही सच्चा गिना जा सकता है यदि मुझे तेरे दीदार हो जाएं। हे मेरे प्रीतम! मेरे भ्रम की रेखा को तोड़ दे और मेरे अंदर प्रकट हो जा।

करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥
अरथ आन सभि वारिआ प्रिअ निमख सोहागउ ॥ (पन्ना ८०८)

अर्थात् मैं बार-बार विनती करती हूं और दिल से मेरी यही पुकार है कि हे मालिक! यदि मुझे मेरा सुहाग (संग) केवल पल भर के लिए भी प्राप्त हो जाए तो मैं इसके लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दूं।

किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥
गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ ॥ (पन्ना ७६२)

अर्थात् हे मेरे प्रीतम! मैं किस तरह मांगूं और किस तरह कह कर सुनाऊं? मुझे तेरे दर्शनों की भूख एवं प्यास बहुत लगी है। गुरु के शबद से ही उस प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। हे मालिक इसी लिए मेरी अरदास है।

यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥ (पन्ना ७२१)

हे प्रभु! मैं तेरे आगे एक विनती करता हूं, ध्यान से सुनो! तू सत्य है, महान है, दयालु है और दोष रहित पालनहार है।

रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥
कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥ (पन्ना ६३३)

अर्थात् मनुष्य सदा अचेत रहते हैं और उस परमात्मा को याद नहीं करते। इस तरह उनकी आयु बीत जाती है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमाते हैं कि हे प्रभु! तू हमेशा अपने फर्ज पहचानता है जबकि मनुष्य तो अक्सर उसे भूल जाते हैं।

किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥
बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥ (पन्ना ७३८)

अर्थात् हे मालिक! मेरे में कोई भी गुण नहीं। इसलिए हे मेरे दातार! मैं तेरे किन गुणों को बयान करूं? खरीदे हुए गुलाम की क्या मजाल कि अपने मालिक के साथ कोई चतुराई कर सके, क्योंकि मेरा यह सारा शरीर और जीवन तेरी ही देन है!

महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥
तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥ (पन्ना ७४८)

अर्थात् हे मालिक! तू मुझे महाज्ञानियों में से हाथ देकर रखने वाला है और मैं तेरी शरण में हूं। मेरे हृदय में मुझे केवल तेरा ही मान-तान है और मुझे किसी अन्य से कोई आशा नहीं है।

ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥
नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥ (पन्ना ७०४)

अर्थात् हे मालिक! तू अगंम है, अपार है तथा अकथ (अकथनीय) है। तेरा शब्दों में

वर्णन नहीं हो सकता। हे प्रभु! मैं अब तेरी शरण में हूं क्योंकि केवल तू ही मेरी रक्षा करने वाला है।

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ (पन्ना ३८३)

अर्थात् हे प्रभु! मैं अपना यह शरीर तुझ पर अर्पण करते हुए विनती करता हूं कि यह सब जो है तेरा ही है, तेरे बिना मेरी यहां कोई पहचान नहीं।

जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥
किसु आगै कीचै अरदासि ॥ (पन्ना ११२५)

अर्थात् प्रभु तू ही कर्त्ता है, इसलिए और किसके आगे मैं अरदास करूं?

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥ (पन्ना ६९४)

हे प्रभु! मेरे जैसा कोई दीन नहीं और तेरे जैसा कोई दयालु नहीं हो सकता। केवल टूटे-फूटे को प्रवान करो और कृपा करके मुझे पूर्ण करो।

मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥ (पन्ना ७३५)

हे मेरे प्रभु! मेरा बल और भरोसा केवल तू ही है। इसलिए मैं तेरे आगे ही विनती करता हूं। मेरे और कोई भी आसरा नहीं जिसके पास मैं अरदास कर सकूं। मेरा दुख-सुख तेरे ही हवाले है।

हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥
जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥ (पन्ना ७३६)

अर्थात् हे प्रभु! मैं बहुत मुर्ख और नीच हूं। इसलिए मैं तेरी किसी भी प्रशंसा को बयान करने में असमर्थ हूं। मैं अज्ञानी हूं और अब तेरी शरण में आ गया हूं। इसलिए हे मालिक! मेरे पर बख्शिश करो।

हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥
करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥ (पन्ना ७९९)

अर्थात् हम मूर्ख और अज्ञानी हैं। इसलिए हे मेरे प्रभु! अपनी कृपा से शरण में आए हुओं को रख लो, क्योंकि हम तो एक पत्थर की तरह निमाणे तथा तुच्छ प्राणी हैं।

हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥
मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बांह प्रभू पकराइ जीउ ॥ (पन्ना ४४६)

अर्थात् हे प्रभु! हमारे पर दया करो। हम तो पत्थर हैं, इसलिए कृपा करके अपने शबद द्वारा ऊंचा उठाओ और मेरा कल्याण करो! हे प्रभु! हम तो मोह-माया के कीचड़ में फंसकर गल रहे हैं। इसलिए हमें अपनी बांह पकड़ाओ।

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥ (पन्ना ८८२)

अर्थात् हे प्रभु! मेरे अवगुणों पर कोई ध्यान न दो। मेरी गति तो मिट्टी वाली है। जैसे कोई मिट्टी धोकर साफ नहीं कर सकता, यही हालत इंसान की है। आप ही कृपा करो।

दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥
अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप

उकति न मोरी ॥ *(पन्ना २०८)*

हे मेरे मालिक! मैं अनाथ हूं और तेरी शरण में आया हूं। इसलिए हे मेरे प्यारे! मेरे पर अपनी दया करो, मोह-माया के इस कुएं रूपी संसार में मेरी बुद्धि और चालाकी काम नहीं कर रही, इसलिए तू खुद ही मुझे अपना हाथ देकर इस अंधेरे कुएं में से बाहर निकाल ले।

हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥
अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥ *(पन्ना १७२)*

हे प्रभु! मैंने बहुत पाप किए हैं। मैं बहुत पापी, दुष्ट और चोर हूं, लेकिन अब तेरी शरण में आ गया हूं। इसलिए हे हरि! अब मेरी लाज रख।

राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥
नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥ *(पन्ना ११११०)*

हे बख्शनहार! तू अगम और अपार है। मेरी विनती सुन। मैं मूर्ख तुझे कभी भी याद नहीं करता। मुझे इस अंधकारमयी जीवन में, जो अंधेरी रात्रि की भांति है, कुछ नहीं सूझता, इसलिए मेरी पुकार सुन।

रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥
नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥ *(पन्ना २०४)*

हे मालिक! मैं कुरूप हूं। मेरे में कोई बुद्धि या शक्ति नहीं। मैं अपने निज घर से बिछुड़ी हुई हूं और बहुत दूर से ठोकरें खाती तेरे दर पर तेरी शरण में आई हूं। न मेरे पास धन है और न भरपूर यौवन है। इसलिए हे बख्शनहार! मेरे पर दया करो और मेरी संभाल करो।

लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥
बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥
(पन्ना २६१)

अर्थात् मैं हर पल भूलें कर रहा हूं। अपने कर्मों के साथ मैं इस भवसागर से छूट नहीं सकता। केवल तू ही बख्शिंद है। इसलिए हे मेरे स्वामी! मुझे अपनी ही कृपा द्वारा भवसागर से पार कर दो।

असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥
हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ *(पन्ना १४१६)*

अर्थात् हम हर पल गलतियां करते हैं, जिनकी कोई गिनती नहीं है। मैं बहुत ही बड़ा पापी तथा गुनहगार हूं। इसलिए हे प्रभु! मुझे बख्श दो।

जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥ *(पन्ना १५६)*

अर्थात् समुद्र में जितना पानी है हमारे अंदर उतने ही अवगुण हैं। मैं तो एक पत्थर हूं और इस भवसागर में डूब रहा हूं। इसलिए हे मालिक! मेरे पर अपनी दया करो और मुझे इस भवसागर में से बाहर निकाल लो।

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
(पन्ना ८५३)

अर्थात् यह संसार अपनी ही अग्नि में जल रहा है। इसलिए हे मालिक! आप अपनी कृपा करके सहारा दो। जिस भी बहाने या साधन से मेरा उद्धार होता हो मुझे उसी की ही बख्शिश करो।

तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी

भाते ॥
इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥ *(पन्ना ७४७)*

अर्थात् हे मालिक! तेरा कोई अंत नहीं है, तू अपार है और बहुत ऊंचा है, तेरा कोई भी मुकाबला नहीं कर सकता। इसलिए मेरे मालिक मेरी तेरे आगे यही विनती है कि तू मुझे कभी न भूले।

तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥
जन नानक कउ हरि किरपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि हरि चरानै ॥ *(पन्ना १३२०)*

अर्थात् मेरे दाता! तू समर्थ है। इसलिए हे दीन दयाल! मेरी तेरे आगे यही विनती है कि तेरे चरण सदा मेरे अंदर बसें।

मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥
जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥ *(पन्ना ८००)*

अर्थात् हे मेरे स्वामी! हमारी सुध-बुध तेरे ही अधिकार में है, हम तो केवल एक यंत्र मात्र हैं। उनको चालने वाला तू है। हे मेरे प्रभु! जैसे तुझे भाता है उसी ही लय में हम बोलते हैं। इसलिए हमारी अपनी कोई सियानप नहीं।

किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥
जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥ *(पन्ना ७९७)*

अर्थात् हे दातार! तेरी कोई भी सेवा कर सकता है और कुछ सेवा करके भी क्या अभिमान कर सकता है, क्योंकि यह सब तेरी ही ज्योति का सदका है! इस सबके पीछे तेरी ही शक्ति काम करती है। यदि तू किसी में से अपनी ज्योति खींच ले तो क्या मजाल कि कोई सियानप या व्यख्यान कर सके!

विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥
(पन्ना ९५८)

अर्थात् सदा मालिक से ही मांगना चाहिए, क्योंकि सब कुछ उसी में लुप्त है। उसके बिना उसके पास से अन्य दातों का मांगना केवल दुखों का पहाड़ ही इकट्ठा करने के समान है। इसलिए हे मालिक! मुझे केवल अपने नाम की ही दात बख्श, जिसे सिमर कर मेरे मन को संतोष आ जाये और मेरी जन्मों-जन्मों की लगी भूख खत्म हो जाये।

मालिक से मांगो

जिंदगी के खतरनाक पलों में प्रभु या सतिगुरु को ही सहायता के लिए पुकारा जा सकता है, क्योंकि केवल वही है जो हमें इन फिसलनों से बचा सकता है :

कुचिल कठोर कपट कामी ॥
जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥१॥रहाउ॥
तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥१॥
जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधे छुटकार ॥
गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निआरि ॥ *(पन्ना १३०१)*

हे प्रभु! हम बहुत कुटिल नीति वाले, कठोर हृदय वाले, कपटी तथा कामी हैं। जैसे तेरी इच्छा हो वैसे ही हमारा उद्धार कर। केवल तू ही योग्य है जिसकी शरण ली जा सकती है। तू ही हमारी संभाल कर। मेरे इन दोषों को कोई जप, तप, कर्म या संयम काट नहीं सकता। हे कृपा-निधान! तू ही अपनी कृपा भरी दृष्टि से मुझे इस संसार रूपी अंधे कुएं में से बाहर निकाल ले। फिर बताते हैं :

हा हा प्रभ राखि लेहु ॥
हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥
(पन्ना ६७५)

हे प्रभु! मैं असमर्थ हूं। मैं स्वयं कुछ भी नहीं कर सकता, इसलिए अपनी ही कृपा से मुझे अपना नाम बख्श।

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥
हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥ *(पन्ना १०)*

श्री गुरु रामदास जी अरदास करते हैं कि हे सतिगुरु! तू उस प्रभु का स्थापित किया हुआ है और मेरी आपके आगे अरदास है कि मैं तो केवल कीड़े, मकौड़ों के तुल्य हूं। मुझे कृपा करके अपने नाम से रोशन कर।

मन केवल नाम की धुन या उसके रूहानी मंडलों में बजने वाले संगीत से ही वश में आ सकता है, इसलिए हमें अरदास की आवश्यकता है। किसी भी किस्म के यज्ञ, योग, हठ-कर्म तथा पुकारें इस विषय पर सहायता नहीं कर सकते और न ही कोई अपनी चतुराई से मन के इन बंधनों से आजाद हो सकता है। केवल सति शबद या नाम (सच्चे शबद) के अभ्यास से ही इस वहशी मन को काबू किया जा सकता है और इसकी प्राप्ति के लिए हमें किसी योग्य पुरुष अर्थात् सतिगुरु से दीक्षा लेनी पड़ती है। मन जब नाम के सम्पर्क में आ जाता है तो यह पहली चतुराइयों तथा धोखेपन को छोड़ कर मनुष्य के अपने ही वश में हो जाता है तथा रूह के एक सहायक के रूप में ऊपरी रूहानी मंडलों पर जाने के लिए उसका साथ देता है :

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥
(पन्ना ११८६)

अर्थात् मैंने अब उस हरि का नाम हासिल कर लिया है, जिससे मेरे मन की भटकन बंद हो गई है और अब यह मेरे पास ही बैठ कर आराम करता है।

जब किसी व्यक्ति का 'प्रभु-नाम' से सम्बंध जुड़ जाता है तो साधक सदा उस सर्वशक्तिमान का संग करता है और वह प्रभु सदा उसके अंग-संग रहता है। चाहे वह बर्फीली ऊंची चोटियों पर या तपते रेगिस्तान में भी क्यों न हो। सर्व-कला सामर्थ्य के अस्तित्व का आनंद लेते हुए वह सारा कुछ उस पर ही छोड़ देता है तथा अपने इर्द-गिर्द की किसी भी चीज से उसका मोह नहीं रहता। उसके जीवन में उसे जो कुछ भी मिलता है वह उसे परमात्मा की सौगात मानते हुए कि इसमें ही मेरा भला है, स्वीकार करता है। अपनी चेतनता में वह हर काम में उसकी रूहानी रजा को महसूस करता है और खुद को उसकी रजा में समर्पित कर देता है तथा साथ ही धन्यवादी होता है। उसकी अपनी कोई भी आशा या मंशा नहीं रहती। वह परमात्मा की रजा को ही अपनी इच्छा स्वीकारता है। वह ऐसे काम करता है जैसे कि एक यंत्र उस शक्ति के प्रभाव में अपने आप काम करता है। वह अपने आस-पास विशाल दुनिया में छोटे-बड़े प्राणियों को एक सुयोग्य ढंग से जुड़े छोटे-छोटे कणों की तरह देखता है। वह अब परमात्मा की रूहानी शक्तियों को महसूस करता है जो कि किसी कानून के अनुसार केवल परमात्मा के हुक्म में लगातार काम करती हैं। ❁

वह सिक्ख जिस पर देश को गर्व है
७६ वर्षीय साइकिलिंग चैम्पियन

*-स. सुरजीत सिंघ**

खेल के मैदान में आयु बाधक नहीं होती है। इसके लिए तो दृढ़ इच्छा-शक्ति और कठिन परिश्रम ही आवश्यक है जिसका जीता-जागता उदाहरण हैं ७६ वर्षीय स. प्रीतम सिंघ खालसा, जिन्होंने साइकिलिंग की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अनेकों ही गोल्ड मैडल जीत लिये हैं। वर्ष १९९३ में 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में अपना नाम दर्ज करा चुके स. प्रीतम सिंघ खालसा को "नौजवान बुजुर्ग"के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि आपने विश्व के चुनिंदा साइकिल विजेताओं को पीछे छोड़ देश एवं देशवासियों का नाम विश्व में चमका दिया है।

स. प्रीतम सिंघ खालसा का जन्म पंजाब प्रांत के जिले होशियारपुर के गांव बोहड़ में ५ नवंबर, १९३३ को हुआ था। आपने सन् १९५३ में विश्वविद्यालय से बी. एस. सी. की डिग्री प्राप्त की और शिक्षा विभाग में साइंस टीचर के रूप में कार्यरत हो गये। सर्विस के दौरान पदोन्नति प्राप्त करते हुऐ आप मुख्य अध्यापक हो गये और नवंबर, १९९१ को बतौर हैडमास्टर ३८ वर्ष का सेवाकाल पूर्ण होने पर आप सेवानिवृत्त हो गये। स. प्रीतम सिंघ खालसा के अनुसार प्रारंभिक जीवन और सेवा काल में भी वह निरंतर साइकिल चलाने में अभ्यस्त रहे किन्तु खेल स्पर्धाओं में कभी भी उन्होंने भाग नहीं लिया था। सेवानिवृत्ति के फौरन बाद ही इनके चैम्पियन बनने के स्वतंत्र जीवन की शुरुआत हो गई। अथक प्रयास एवं कड़ी मेहनत के बल पर सेवानिवृत्ति के एक वर्ष उपरांत ही वर्ष १९९२ में वे साइकिलिंग में पंजाब स्टेट चैंपियन हो गये। उनकी लगन, प्रतिभा और उत्साह को देखते हुऐ पंजाब साइकिलिंग एसोसिएशन ने नेशनल चैंपियनशिप में भाग लेने हेतु आपको दिल्ली भेज दिया किन्तु आश्चर्य कि इस नौजवान बुजुर्ग ने लगातार १० घंटे साइकिलिंग करके नेशनल चैंपियनशिप का खिताब भी जीत लिया। साइकिलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया ने निर्णय लिया कि यह नौजवान बुजुर्ग तो थकता ही नहीं है, इसलिए खालसा जी को भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए विश्व चैंपियन स्पर्धा हेतु विदेश भेज दिया जाए।

निर्णयानुसार वर्ष १९९४ में आयोजित "आल वर्ल्ड मासटर्स गेम्स" जो आस्ट्रेलिया देश के ब्रिसबेन शहर में आयोजित हुए थे, में खालसा जी ने भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रथम बार अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में भाग लिया और प्रथम बार में ही आश्चर्यजनक प्रदर्शन कर गोल्ड मैडल जीत लिया। खालसा जी का अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में अच्छे प्रदर्शन द्वारा गोल्ड मैडल जीतने का क्रम निरंतर जारी रहा जो कि इस प्रकार है :

१. वर्ष १९९४ में ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया) में ५२ कि. मी. की रफ्तार से साइकिल चलाकर ६० कि. मी. लंबी रेस में प्रथम गोल्ड मैडल जीता।
२. वर्ष १९९६ में लंदन से गलासगो तक ५६०

**५७-बी, न्यूकालोनी, गुमानपुरा, कोट (राजस्थान)-३२४००७*

कि. मी. दूरी की "नानस्टाप मेराथन चैलेंजिंग" रेस में दूसरा गोल्ड मैडल जीता।
३. वर्ष १९९७ में केनबरा रेस में तीसरा गोल्ड मैडल जीता।
४. वर्ष १९९८ में न्यूजीलैंड में ५४ कि. मी. प्रति घंटा की रफ्तार से साइकिल चलाकर चौथा गोल्ड मैडल जीता।
५. अमेरिका में १०० कि. मी. लंबी रेस में ५५ कि. मी. प्रति घंटा की रफ्तार से साइकिल चलाकर पांचवां गोल्ड मैडल जीता।
६. ऑडीलैंड (आस्ट्रेलिया) में ६० कि. मी. लंबी दौड़ ५६ कि. मी. प्रति घंटा की रफ्तार से साइकिल चलाकर एक घंटा चार मिनट एवं १७.१ सेकंड में रेस पूरी करके छठवां गोल्ड मैडल हासिल किया।

आप सामाजिक कार्यों में भी बहुत रुचि रखते हैं। राष्ट्रीय एकता एवं देश-भक्ति को जागृति करने के उद्देश्य से वर्ष १९९२ में आपने श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर से मुंबई की सद्भावना यात्रा ३५७ कि. मी. प्रति-दिन साइकिल चलाकर सात दिन में पूरी की और इसी प्रकार से वापसी में मुम्बई से श्री अमृतसर तक सात दिन लगे। सद्भावना यात्रा के दौरान आपने कई शहरों में जनसमूह को भाषण द्वारा सम्बोधित भी किया और विभिन्न प्रांतों के अधिकारियों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर अपनी उपस्थिति के प्रमाण-पत्र भी प्राप्त किये। ३५७ कि. मी. प्रतिदिन निरंतर साइकिल चलाने के कारण आपका नाम "गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" में दर्ज हो चुका है।

प्रतिदिन के अनुशासित एवं नियमित जीवन के सम्बंध में खालसा जी का कहना है कि वे प्रातः साढ़े तीन बजे उठकर चार बजे तक तैयार हो जाते हैं, साढ़े चार बजे तक आधा घंटा नित्य गुरबाणी का पाठ कर ईश्वर-आराधना करते हैं। फिर पांच बजे तक कम से कम पांच कि. मी. की लंबी दौड़ लगाते हैं। दौड़ से लौटने पर नाश्ते में एक लीटर गर्म दूध, जिसमें चार चम्मच बादाम-रोगन और चार चम्मच ही शहद मिला होता है, सेवन करते हैं। नाश्ता लेने के उपरांत श्री अमृतसर अथवा चंडीगढ़ जिधर भी जाना हो, चल देते हैं। यही उनकी नित्य दिनचर्या है।

दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले स. प्रतीम सिंघ 'खालसा' होशियारपुर से चंडीगढ़ का १३५ कि. मी. का सफर साइकिल से अधिक से अधिक ४ घंटे में पूरा कर लेते हैं जो कि एक साधारण बस को भी पहुंचने में इतना समय तो लग ही जाता है। अपना वीजा लेने अथवा अन्य कार्य हेतु खालसा जी साइकिल से ही होशियारपुर से दिल्ली चले जाते हैं जो कि यह पूरा सफर ही मात्र १२ घंटे में पूर्ण हो जाता है अर्थात् होशियारपुर से चंडीगढ़ ४ घंटे एवं चंडीगढ़ से दिल्ली ८ घंटे और इसी प्रकार साइकिल से ही वापसी का सफर होता है।

स. प्रीतम सिंघ खालसा की शिकायत है कि अन्तर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए भी उन्हें स्पोंसर नहीं किया जाता है अपितु उन्हें स्वयं का ही अपना सारा खर्चा करना पड़ता है। वे अमेरिका गये थे तो भी स्वयं का खर्चा किया और आस्ट्रेलिया गये तो भी स्वयं का ही एक लाख रुपये खर्चा किया। खालसा जी को सम्मानित कर सरकारी स्तर पर प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए ताकि यह कीमती हीरा मिट्टी में रुलने के बजाय और अधिक चमक कर विश्व में देश का नाम रोशन कर सके। यह हम सबका दायित्व है।

समय होत बलवान

-बीबी जसप्रीत कौर जस्सी

आखिर समय है क्या? क्या समय धन है? नहीं, समय धन नहीं हो सकता। धन तो हाथ की मैल होता है और समय तो अनमोल है जो एक पल के लिए भी ठहरता नहीं है। समय व अतिथि किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। गया हुआ एक पल दुनिया की सारी दौलत के बदले भी नहीं लौटाया जा सकता है। इसलिये बुद्धिमान दूसरी बात कहते हैं--'क्षण भर भी बर्बाद मत करो'। यानि जिस समय जो काम उचित हो उस समय वही काम करना चाहिए। तात्पर्य यह है कि एक घड़ी भी ऐसी नहीं होती जिसके लिये निर्धारित कार्य को फिर किया जा सके। यही है इसका मूल्य। मुंह से निकले हुये वचन या बहते हुए पानी की तरह यह कभी मुड़कर नहीं देखता। चलते-चलते कभी घाव देता है तो भरता भी यूं ही है। शायर 'यकीन' का मानना है कि-

मयस्सर कुछ नहीं तो वक्त का मरहम गनीमत है,
किसी भी तरह आखिर जख्म दिल के भर ही जायेंगे।

यह समय ही है जो ठोकर देता है तो उठाता भी है, जख्म देता है तो मरहम भी लगाता है, गिराता है यदि तो चलना भी सिखाता है। जो इसका साथ निभाता है उसकी हर मुराद पूरी भी कर देता है। यह हमें हंसाता भी है, रुलाता भी है। प्यार करना सिखाता है तो यही नफरत का जहर भी भर देता है।

समय पर बोले गये एक-एक शब्द का महत्व होता है और बेवक्त की बकबक एकदम फजूल, कभी-कभी अत्यंत दुखदायी भी हो जाती है। कहा भी गया है कि हर काम व बात समय पर ही अच्छी लगती है।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जो समय से पीछे चलता है वह पिछड़ जाता है। जो आगे दौड़ता है वह ठोकर खाकर गिर जाता है, जो इससे कदम मिलाकर चलता है वही छूता है कामयाबी की मंजिल। अत: समझदारी इसी में है कि इसकी अंगुली पकड़कर चला जाये। क्योंकि एक बार मुट्ठी से निकल गया तो "अब पछताए होत क्या . . ." या "आषाढ़ का चूका किसान और डाल का चूका बंदर कहीं का नहीं रहता।" अच्छा हो, समय हमें बदल डाले, उससे पहले ही उसे हम अपने अनुकूल कर लें अथवा हम उसके अनुकूल हो जायें। लेकिन यह कार्य उतना आसान नहीं है जितना लगता है, क्योंकि समय बड़ा क्रूर भी होता है। इसी ने राम को वनवास दिलाया, राजा हरिश्चन्द्र को 'हरिजन' के घर पानी भरवाया, पांडवों को वनवास और अज्ञातवास पर भेजा, सुकरात को जहर पिलाया।

'समय', यह मासूम भी होता है, बिलकुल बच्चों की तरह। बुद्ध को बुद्ध समय ने ही बनाया है। इस बात पर कवि वल्लभदास की कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं :

समय स्यार, शेर होत, निर्धन कुबेर होत,
यारन में बैर होत, जैसे केर-कांटे कौ।
धीर तो अधीर होत, मंत्री बेपीर होत,
कामधेनु चोर होत, नादेश्वर नारी कौ।

**११, सेक्टर १-A, गुरु ज्ञान विहार, जवद्दी रोड, लुधियाणा-१४१०१३*

पुत्र करत पाप होत, बैरी सगौ बाप होत,
जेबरी कौ सांप होत, अपने हाथ बांटी कौ।
कहै 'कवि वल्लभदास', तेरी गति तू ही जानै,
दिनन के फेर ते, सुमेरु होत मांटी कौ।

समय सदा हमारा साथ दे, हमारा ख्याल रखे, इसके लिये, इसके प्रति हमारी भी कुछ जिम्मेदारी बनती है, जैसे हम नियमित जीवन जीयें, अपने आहार-विहार, चिंतन, मनन, व्यायाम द्वारा नियमित दिनचर्या को अपनायें, अपना ध्यान रखें, तरोताजा, प्रफुल्लित, प्रसन्नचित्त व स्वस्थ रहें, क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। कम खायें, कम बोलें, साथ ही व्यर्थ के गम से भी बचना सीखें। स्वाध्याय को जीवन में विशेष स्थान दें। इससे विचारों में परिमार्जन होगा, दृष्टिकोण विशाल होगा, चिंतन में प्रखरता, उदारता बढ़ेगी, ज्ञानार्जन भी होगा। दूसरों के गुण व अपने दोष देखें। 'मनुष्य वही है जो मनुष्य-मात्र के लिये जिये।' सम्यक जीवन-यापन हेतु जरूरी है कि हम कर्मवीर बनें, क्योंकि जीवन में कर्म का विशेष स्थान है। स्वयं से प्यार करें, स्वयं का मनन और आत्म-मंथन करें, ताकि ईश्वर हमारी मदद करे। आत्म-निरीक्षण भी सुंदर जीवन की कुंजी है। हमें चाहिए कि हम समय को साधें, सारी खुशियां हमें स्वयं मिल जायेंगी।

कविताएं

दुख

दुख हमारे अपने होते
जो परिचय करवाते हमारे अपनों से।
दुख है एक परीक्षा की घड़ी
आत्मबल परखने की विद्या
दुख है धैर्य को समर्पित
न जी चुराओ इनसे
बल्कि स्वागत करो इनका
क्योंकि जीवन और दुखों का
है चोली-दामन का साथ।
हो जाओ दर्द के सागर में समर्पित
उसी सागर में गोता लगाने के बाद
तुमको मिलेगा सुख रूपी सुच्चा मोती।
जो देगा तुम्हें जीने का साहस
और बढ़ाएगा तुम्हारा आत्म-बल।
जीवन महायुद्ध है
सुख और दुख के बीच का
जिसमें कभी सुख की
तो कभी दुख की विजय होती।
यही जीवन है
क्योंकि वक्त का पहिया यूं ही चलता जाता है
दुख के बाद सुख
और सुख के बाद दुख अवश्य ही आता है।

जीवन

जीवन
जीवन एक धारा
है एक अनमोल खजाना
यह धारा बह जाएगी लहरों के संग
लहरें उठेंगी एक तेज बहाव के संग
इस बहाव में है ज्ञान रूपी अमृत
इस ज्ञान-रूपी नाव में बैठकर
हम हो जाएंगे संसार-सागर से पार।
पर अधिकतर लोगों के लिए
जीवन एक चुनौती भी है
जन्म लेता है इंसान एक प्रश्न की तरह
और प्रश्न रह कर ही गुजर जाता है
प्रश्न का हल ढूंढना होगा
जीवन सफल बनाना होगा
यही जीवन का शास्त्र है।

प्रदूषण रोकने के लिए वैज्ञानिक चीजों का सही उपयोग करें!

-*सरगुनदीप कौर**

आज का युग वैज्ञानिक युग है। इसमें बहुत कुछ नया है। आज के विज्ञान ने बहुत कुछ नया करने की शपथ ली है और कुछ कुछ किया भी है। विज्ञान ने हमारे वातावरण को स्वस्थ रखने की कोशिश की है परन्तु फिर भी उसके बनाए हुए कुछ उपकरणों ने इस वातावरण को दूषित भी किया है। विज्ञान ने परिवहन के बहुत सारे साधन बनाए हैं। इनमें से निकलते जलरीले धूएं ने हमारे वातावरण को दूषित किया है।

पहले का वातावरण

वातावरण का अर्थ 'हमारा आसपास' है। रचनहार ने हमारे ऊपर गैसों की पर्त बनाई है जो हमें सूर्य की अधिक नुकसानदेय किरणों से बचाती है। पहले का वातावरण बहुत शांत और निर्मल था। लोग बहुत शांतिपूर्वक अपना जीवन-निर्वाह कर रहे थे। उनमें आपस में भाईचारा था। लोग इधर से उधर जाने के लिए साइकिल की सहायता लेते थे। अगर रास्ता कम होता तो पैदल ही चले जाते। इससे उनकी सेहत भी सही रहती थी। फिर विज्ञान ने ज्यादा दूर जाने के लिए रेलगाड़ी बनाई। मनोरंजन के लिए टेलीविजन, रेडियो आदि चीजें बनाईं। लोग इन चीजों से बहुत खुश हुए। उनकी जिंदगी की गाड़ी आनंदमय चलने लगी।

आज का वातावरण

आज का वातावरण पहले के वातावरण से कुछ अलग है। पहले लोग थोड़े से रास्ते के लिए पैदल जाते थे अब उतने रास्ते के लिए ही मोटरसाइकिल, कार आदि की सहायता ली जाती है। उन मोटरकारों, बसों से जहरीला धूआं निकलता है। जब इसकी मात्रा वातावरण में बढ़ जाती है तो वह हमारी आस-पास की हवा को दूषित कर देती है जिससे हमारी सेहत को नुकसान पहुंचता है। आज के युग में मोबाइल का प्रचलन जोरों पर है। इस मोबाइल से भी खतरनाक किरणें निकलती हैं जो हमारे वातावरण को दूषित कर रही हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि आज का वातावरण पहले के वातावरण से कई गुणा ज्यादा दूषित है।

प्रदूषण : प्रदूषण का अर्थ 'हमारा आस-पास दूषित' होना है। जैसे कि ऊपर बात की गई है कि आज का वातावरण ज्यादा दूषित है। इसको हम 'प्रदूषण' कहेंगे। प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है: हवा-प्रदूषण, पानी-प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण।

हवा-प्रदूषण : हवा-प्रदूषण का अर्थ 'हवा का दूषित' होना है। हवा दूषित कैसे होती है?

१. जब हम मोटरगाड़ियां, बसें आदि चीजें चलाते हैं तो उनमें से कुछ गैसें निकलती हैं। वे गैसें बहुत जहरीली होती हैं६। वे हवा-प्रदूषण करती हैं।

२. कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिससे बहुत हवा-प्रदूषण होता है, जैसे 'मुंबई गैस की घटना'। इसमें खाना पकाने वाले सिलेंडर बनते थे। उसमें आग लगने के कारण बहुत हवा-प्रदूषण हुआ था। उसमें से निकला धूआं बहुत जहरीला था।

**Class X, D/o S. Surinder Singh, Ajit Vidialaya Sr. Sec. School, Sultanwind Road, Sri Amritsar*

३. कारखानों से निकला धूआं भी हवा-प्रदूषण करता है।

४. देशों की लड़ाई के दौरान फेंके गये बंब बहुत गैसें छोड़ते हैं जो हवा-प्रदूषण करते हैं।

पानी या जल-प्रदूषण : जल-प्रदूषण का अर्थ 'जल का दूषित' होना है।

जल के दूषित होने के कारण :

१. कारखानों से निकला गैसों वाला दूषित जल जब साफ पानी में मिलता है तो वह जल-प्रदूषण बनाता है।

२. जब हम घर की गंदगी बाहर पानी में फेंकते हैं तो भी जल-प्रदूषण होता है।

३. प्लास्टिक जल-प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। जब प्लास्टिक के लिफाफे गटर में फंस जाते हैं तो वे जल को दूषित करते हैं।

ध्वनि-प्रदूषण : आजकल विज्ञान ने बहुत महानता हासिल कर ली है। आजकल गाने सुनने के लिए ऊंची आवाज वाले स्पीकर बन गए हैं। विवाह में इनकी बहुत तेज तथा ऊंची आवाज होती है। हम गाड़ियों के तेज हार्न बजाते हैं। इससे ध्वनि-प्रदूषण होता है।

कारण : प्रदूषण का एक-प्रमुख कारण है-- विज्ञान में तरक्की और मनुष्य की लापरवाही। विज्ञान ने तरक्की करके कुछ सहायक चीजें भी बनाई हैं और कुछ जिसकी हमें यानी मनुष्य को इतनी जरूरत नहीं है। उन चीजों से प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। लेकिन प्रदूषण की समस्या में केवल विज्ञान का ही हाथ नहीं माना जा सकता बल्कि मनुष्य भी उसमें उतना ही भागीदार है। मनुष्य विज्ञान की बनाई हुई चीजों को अधिक तथा गलत ढंग से काम में लाता है जिससे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

निर्वाण : प्रदूषण के निर्वाण का आसान रास्ता यही है कि हम वातावरण के महत्व को समझें।

कविता

समस्या पानी की

बहते जल स्रोतों पर जब से, खुद हमने मनमानी की।
इसी लिये तो नित दुनिया में, बढ़ी समस्या पानी की।
छाती छलनी कर धरती की, बोर छेद भरपूर किये।
स्रोत शिराओं के भटकाकर, कूप बाउली पूर दिये।
यों सुविधा की खातिर हमने, नित हरकत बचकानी की।
इसी लिये तो नित दुनिया में, बढ़ी समस्या पानी की।
फाड़-फाड़ ओजोन परत को, अंबर का अपमान किया।
पर्वत फोड़े, नदियां रोकीं, जंगल को वीरान किया।
मुट्ठी भर लाभों की खातिर, सारे जग की हानी की।
इसी लिये तो नित दुनिया में, बढ़ी समस्या पानी की।
नोंचे हमने पर पक्षी के, निरीह पशुओं को मारा।
उनकी आहें सुन धरती का, दुखी कलेजा है सारा।
यों भूकंपों के स्वागत में, खुद हमने अगवानी की।
इसी लिये तो नित दुनिया में, बढ़ी समस्या पानी की।

-'भुजंग' राधेश्याम सेन, बड़े शिव मंदिर के पीछे, मंगलीपेठ, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

प्रत्येक दिन को वन-महोत्सव बनाना होगा!

*-शिवानी**

बच्चे, बूढ़े और जवान,
पर्यावरण बचाएं बनें महान!
पर्यावरण में बसते हैं प्राण,
अब तो जाग जाओ इंसान!

इस प्रकार के नारे हम सभी पर्यावरण दिवस पर रैलियों आदि में लगाते हैं, लेखों में लिखते हैं और बाद में खुद ही भूल जाते हैं। वातावरण ईश्वर की एक ऐसी रचना है जो सदियों से हमारा पालन-पोषन करती आ रही है। जब हम वातावरण की कल्पना करते हैं तो एक स्वच्छ, साफ, हरे-भरे वातावरण की ही कल्पना करते हैं।

हम सबकी छोटी-से-छोटी जरूरत पर्यावरण से जुड़ी हुई है। जिस प्रकार एक छोटा बच्चा हर चीज के लिए अपनी मां पर निर्भर होता है उसी प्रकार मनुष्य भी एक बच्चे की भांति मां स्वरूप धरती पर निर्भर है। धरती मां के रूप में सारी जनता का पालन-पोषण तभी कर सकती है जब उसे साफ-सुथरा वातावरण मिल पाएगा। बिना वातावरण के तो कभी सुख-समृद्ध मनुष्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समय के साथ-साथ हमारा वातावरण प्रदूषण की चपेट में आता जा रहा है और इसका कारण भी कोई और नहीं बल्कि मनुष्य ही है। समय के साथ जिस तरह मनुष्य और उसकी सोच में बदलाव आए हैं वो धरती पर और किसी भी जीव के लिए आज के दिन तक संभव नहीं हो पाया है। इसी 'बुद्धिमान मनुष्य' ने लालच का दास बन कर वातावरण को नुकसान पहुंचाया है। जितना हमें पर्यावरण से मिला है वो उससे दुगना पाने का इच्छुक बन चुका है। औद्योगीकरण की इसी अंधी दौड़ में कोई भी किसी से पीछे नहीं रहना चाहता। यदि चाहते हैं तो बस, केवल आगे बढ़ना और अमीर बनना। अपनी हर जरूरत के लिए वातावरण मनुष्य आवश्यकता से अधिक से चाहता है। वातावरण की सारी सम्पदा को मनुष्य उलीच कर बाहर निकाल रहा है। जगह-जगह कारखाने, फैक्टरियां बनाता जा रहा है और उसमें से निकलने वाला सारा गंद वायु, जल और धरती पर फेंक कर उसे प्रदूषित कर रहा है। बड़े-बड़े आलीशान घरों को बनाने के लिए बिना सोचे-समझे अपनी अमूल्य सम्पदा को नुकसान पहुंचा रहा है। आज के आधुनिक युग में प्रदूषण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कारखानों से निकलने वाले धूएं को बिना फिल्टर किए वायु में छोड़ दिया जाता है जिससे मौसम पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पेड़ जो वायु में मौजूद हानिकारक पदार्थों को सोख लेता है, उन पेड़ों का वजूद भी धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। वातावरण में चार प्रकार के प्रदूषण होते हैं-- जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, धरती-प्रदूषण और ध्वनि-प्रदूषण। इन सबका कारण सिर्फ एक प्राणी ही है--मनुष्य। कारखानों से अथवा घर में रेडियो इत्यादि उपकरणों को जोर-जोर से बजाकर

(शेष पृष्ठ ७८ पर)

**पुत्री श्री अजीत सिंह, कक्षा १०, डी ए वी पब्लिक स्कूल, लारेंस रोड, श्री अमृतसर।*

वायु-प्रदूषण को रोकने के लिए क्या करें?

-नेहदीप कौर*

वातावरण के गंदा होने और दूषित होने को हम वातावरण प्रदूषण कहते हैं। यह दिनो-दिन बढ़ता ही जा रहा है और इस प्रदूषण के जिम्मेवार भी हम लोग ही हैं।

आज के समय में साइंस ने इतनी तरक्की कर ली है और इसने हर एक समस्या का समाधान निकाल लिया है जिसने कि इंसानों को आलस के पुतले बना दिया है। आज इंसान हर काम को करने के लिए मशीनों की सहायता लेना ज्यादा जरूरी समझता है। आजकल कहीं जाने के लिए गाड़ियां आदि इतनी ज्यादा बढ़ गई हैं कि हम जहां कहीं भी देखेंगे हमें वहां पर मोटर-गाड़ियां ही दिखाई पड़ेंगी। इन मोटर-गाड़ियों से निकलने वाले धूएं से हमारा वातावरण बहुत ही ज्यादा गंदा हो रहा है। हमारे शहरों में बहुत सारी फैक्टरियां हैं। उनकी चिमनियों से निकलने वाले खतरनाक धूएं से भी हमारा वातावरण बहुत गंदा और पलीत होता है।

प्रदूषण चार प्रकार का होता है। इन चारों प्रदूषणों से ही हमारा वातावरण बहुत खराब होता है। इनमें एक है वायु-प्रदूषण।

वायु-प्रदूषण हवा में होता है। हम हर समय सांस लेते हैं। इस प्रदूषण से कई बीमारियां पैदा होती हैं जो कि हमारे लिए बहुत हानिकारक होती हैं। कई बीमारियां ऐसी भी होती हैं कि उन बीमारियों से हमारी जान तक भी चली जाती है। ये सारे ही प्रदूषण बहुत ज्यादा हानिकारक व जानलेवा होते हैं। आज के युग में हम सिर्फ अपना फायदा देखते हैं पर यह भूल जाते हैं कि जो चीजें हमें आज इतना फायदा, आनंद दे रही हैं, वे हमारे भविष्य को तहस-नहस भी कर देंगी। जिस तरह आज हम खतरनाक चीजों का उपयोग कर रहे हैं एक दिन ये खतरनाक चीजें हमारे भविष्य को निगल जाएंगी। आजकल जो रासायनिक पदार्थों से बन रहे अनाज को हम खाते हैं वह भी हमारे लिए बहुत हानिकारक है।

वातावरण प्रदूषण का एक बड़ा कारण है मोटर-गाड़ियों से और फैक्टरियों से निकलने वाला धूआं। यह प्रदूषण इतना हानिकारक है कि इस वातावरण प्रदूषण से बहुत-सी बीमारियों ने जन्म ले लिया है। जिन बीमारियों का हमने पहले समय में नाम तक नहीं सुना वे आज इंसानों की मौत का सबसे बड़ा कारण बनी बैठी हैं। इस वातावरण में इतने कीटाणु और बीमारियां फैल चुकी हैं कि हम कितने भी प्रयास करें तो भी वे पूरी तरह मिट नहीं पायेंगी। इस समस्या को रोका जा सकता था परंतु पिछले वर्षों में वृक्ष इतने काटे गए हैं कि पहले से इनकी गिनती आधी से भी कम रह गई है। वृक्ष हमारे वातावरण को शुद्ध करने में बड़ी सहायता करते हैं। हमने पेड़ों को काट कर अपने पैर पर स्वयं ही कुल्हाड़ी मार ली है। हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए यह सोचना ठीक नहीं समझते कि वृक्ष न रहे तो हम बहुत बड़ा सर्वनाश कर सकते हैं। इसी

*Class X, D/o S. Balwinder Singh, Ajit Vidialaya Sr. Sec. School, Sultanwind Road, Sri Amritsar.

वातावरण से अस्थमा, कैंसर जैसी भयानक बीमारियों ने जन्म ले लिया है। आजकल देखा जाए तो अधिकतर बच्चों को तरह-तरह की बीमारियों ने जकड़ा हुआ है। हम लोग अपनी धन-सम्पत्ति की वृद्धि के लिए यह सब करते हैं। मगर जब हमारे बच्चे ही बीमार हो जाएंगे तो हम इस सारी सम्पत्ति का क्या करेंगे?

अगर हम चाहें तो इस प्रदूषण को अभी भी रोक सकते हैं। हमें इस प्रदूषण और इसके कारण दिनो-दिन बढ़ती बीमारियों को रोकने के लिए प्रयास करने होंगे। हम सभी को अपने-अपने घर में एक-एक पौधा अपने नाम से लगाना चाहिए और उसकी अच्छी तरह से देखभाल करनी चाहिए। अगर हम पौधों की इज्जत करेंगे और उन्हें एक बच्चे की तरह प्यार करेंगे तो वे भी हमारे वातावरण को प्रदूषण से बचाने में हमारी मदद करेंगे तथा हमारे जीवन में अधिक से अधिक खुशी भर देंगे। हम यह भी न करें कि पौधों पर ही वातावरण को शुद्ध करने की जिम्मेवारी डाल दें। हमें खुद भी कुछ प्रयास करना चाहिए। सिर्फ मोटर-गाड़ियों से ही न काम चलाएं। मोटर-गाड़ियों के फजूल उपयोग से बचा जाए। अगर हमें कहीं नजदीक जाना हो तो वह हम साइकिल द्वारा या पैदल चल कर ही जा सकते हैं। अगर हमने कहीं दूर जाना है तो मोटर-गाड़ियों का इस्तेमाल करें। हम अपनी गाड़ियों को महीने बाद चैक करवाएं और यह कोशिश करें कि सूर्य की उर्जा से चलने वाले वाहन खरीदें। ऐसे वाहनों से धूआं नहीं होता और वे न ही कोई प्रदूषण फैलाते हैं। हम अपने घरों में खाना बनाने के लिए लकड़ी का इस्तेमाल न करें। इससे एक तो धूआं होता है और दूसरा पेड़ काटे जाते हैं। आजकल हम लोगों को अपने-अपने घरों में एल. पी. जी. गैस का इस्तेमाल करना चाहिए। इस गैस से न तो धूआं होता है और न ही पेड़ों को काटने की जरूरत पड़ती है। इससे खाना भी जल्दी बन जाता है। इसे बच्चे और बड़े भी आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि हम रेलगाड़ी को चलाने के लिए कोयले को जलाते हैं या डीजल आदि का प्रयोग करते हैं तो वह भी वातावरण को दूषित करता है। हमें रेलगाड़ियां बिजली से चलानी चाहिएं, क्योंकि बिजली कोई धूआं नहीं छोड़ती और वह वातावरण को दूषित करके कोई बीमारी नहीं फैलाती। वातावरण को साफ रखने हेतु हवा-प्रदूषण को रोकने के लिए सबसे बड़ा केवल एक ही काम है कि अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी अच्छी प्रकार से देखभाल करें। ❀

आपका पत्र मिला

पत्रिका को हृदय से लगा लिया!

मासिक पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' का मैं आजीवन सदस्य हूं। २००८ वर्ष में मैं एक दिन सामाजिक कार्य हेतु सेक्टर ४, भिलाई नगर अपने एक रिश्तेदार के यहां गया। उन लोगों ने उक्त मासिक पत्रिका मुझे दिखायी और कहा कि पता नहीं यह पत्रिका किसके भेजने से आ रही है? मैंने पत्रिका को पढ़ा और हृदय से लगा लिया कि इतना सस्ता और इतना महंगा ज्ञान मात्र १० रुपए में! मैंने तुरंत पोस्ट आफिस में जाकर आपके नाम मनीआर्डर किया। दस गुरु साहिबान के ज्ञान और परमार्थ द्वारा देश-धर्म हेतु जीवन न्यौछावर कर देना यह एक गुरसिक्ख-सिंघ ही कर सकता है।

-राघव राम डहारिया, दुर्ग।

वातावरण प्रदूषण : कारण और निवारण

-जसप्रीत कौर*

जहां देखती हूं बस, तुझे ही पाती हैं,
जहां जाती हूं बस, तेरा ही मुख देखती हूं।
खोली जब आंखों की झीनी-सी चादर,
तू ही बस, हर जगह, तुझे ही पाती हूं।

कहते हैं कि वातावरण एक ऐसा चमकदार खजाना है जो प्रकृति ने मानव को एक सुंदर उपहार के रूप में दिया है। वातावरण में वो शक्ति होती है जो इंसान को अपनी तरफ बड़ी आसानी से खींच लेती है। वातावरण के दृश्यों को देखकर इंसान जाने-अनजाने में भूल जाता है, कि वह इस वातावरण को प्रदूषित भी कर रहा है। प्रदूषण एक ऐसी समस्या बन गई जिसने पूरी मानव जाति की नाक में दम कर रखा है।

इंसान के वाहनों से निकलने वाला धूआं, फैक्टरियों में से निकलने वाला गंदा पानी, फैक्टरियों की चिमनियों में से निकलने वाला जहरीला धूआं आदि सब प्रदूषण ही तो हैं। प्रदूषण की चादर आज मानव जाति के उपहार 'वातावरण' को लगातार ढकती जा रही है, जिसका प्रभाव पूरी पृथ्वी पर देखने को मिल रहा है।

प्रदूषण की किस्में

प्रदूषण मुख्यता तीन किस्मों का होता है जो नीचे लिखी गई हैं :

वायु-प्रदूषण : इंसान बड़े मजे से अपने वाहनों पर बैठकर एक जगह से दूसरी जगह पर जाता है, पर क्या उसको पता है कि उसके वाहनों से कितना धूआं निकलता है और यह कितना खतरनाक है? यह धूआं मनुष्य के फेफड़ों में जाकर उनको पूरी तरह से खराब कर देता है। इस धूएं से कई बीमारियां भी उत्पन्न होती हैं जिनमें से अधिकतर चमड़ी की बीमारियां होती हैं। और तो और इससे कैंसर होने का खतरा भी होता है। वाहनों से निकलने वाले धुएं के साथ-साथ फैक्टरियों से निकलता धुआं भी प्रदूषण की बढ़ोत्तरी में काफी हिस्सा डालता है।

जल-प्रदूषण : फैक्टरियों से निकलता गंदा पानी नदियों, नालों में जाकर उसके स्वच्छ पानी को भी दूषित करता है। और तो और गांवों में स्त्रियां नदियों-नालों के किनारे जाकर कपड़े धोती हैं, जिससे कपड़ों का गंदापन और सर्फ आदि नदियों के पानी में मिलकर उसे हानिकारक बनाता है। होली के दिन न जाने कितने ही रंग प्राकृतिक पानी को खराब करते हैं और जानलेवा बना देते हैं!

ध्वनि-प्रदूषण : आजकल लोगों को ऊंची-ऊंची आवाजों में गाने सुनने का बहुत शौंक है, पर उनको यह नहीं पता कि इसमें वो अपने आप का और वातावरण का कितना नुकसान कर रहे हैं। इससे बढ़कर ऊंची आवाज के गाने जब दूसरे लोगों के कानों में पड़ते हैं तो उनका सिरदर्द करवाकर ही दम लेते हैं। इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई का भी काफी नुकसान होता है जो कि कदापि पूरा नहीं होता है।

प्रदूषण के कारण : जैसे कि हम सब इंसान

**कक्षा-१०-बी, संत सिंघ सुक्खा सिंघ माडर्न हाई स्कूल, माता कौलां जी मार्ग, श्री अमृतसर।*

यह जानते हैं कि प्रदूषण की समस्या में लगातार बढ़ोत्तरी ही देखने को मिल रही है और इतनी बड़ी समस्या के कारण भी होंगे। प्रदूषण के कुछ कारण नीचे दिये गये हैं :-

१) पेड़ों का कटना : दिन-ब-दिन कटते पेड़ों के कारण प्रदूषण की समस्या बनी हुई है। पेड़, प्रदूषण को कम करने और हवा को साफ करने में बहुत सहायक होते हैं, पर इंसान द्वारा की जाती कटान के कारण आज पृथ्वी पर पेड़ बहुत कम रह गये हैं जिससे प्रदूषण की मुसीबत सामने आ रही है।

२) बढ़ती आबादी : बढ़ती आबादी भी प्रदूषण के लिए काफी हद तक जिम्मेवार है। जैसे-जैसे आबादी बढ़ती जा रही है वैसे ही सड़कों पर चलने वाले वाहनों की गिनती भी बढ़ती जा रही है जिससे काफी मात्रा में धूआं उत्पन्न होता है होता है।

३) इंसानों की अनदेखी : इंसानों की अनदेखी की वजह से ही इस प्रदूषण की मार को इंसान खुद भुगत रहे हैं। वाहन-चालक साल भर, कभी-कभी दो साल तक भी अपने वाहनों की जांच नहीं करवाते हैं, वो चाहे कितना भी धूआं क्यों न छोड़ें। ऐसे वाहन-चालकों की सोच होती है कि हमें कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन उनका ऐसा सोचना गलत है। प्रदूषण का बुरा प्रभाव तो सब पर पड़ेगा। ऐसी ही अनदेखियों की वजह से प्रदूषण शिखर की चोटी को छू रहा है जो कि काफी खतरनाक है।

४) बिजली से चलने वाले उपकरण : बिजली से चलने वाले उपकरण, जैसे ए.सी. मनुष्य को गर्मी में ठंडक पहुंचाते हैं, पर मुझे यह जानकर हैरानी भी होती है ये हमारे वातावरण को कितना खराब कर रहे हैं! ये ए.सी. हवा में क्लोरो-फ्लोरो कार्बन नामक परमाणु छोड़ते हैं जो कि हमारे वातावरण के लिए बेहद खतरनाक साबित हो रही है। इन्हीं की वजह से हमारी पृथ्वी गर्म हो रही है और गर्मी बढ़ती ही जा रही है।

प्रदूषण का निवारण : बाकी समस्याओं की तरह प्रदूषण भी एक ऐसी समस्या है जो मानव की ही उत्पन्न की हुई है और मानव के द्वारा ही खत्म हो सकती है। प्रदूषण की समस्या को सुलझाने के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:

१) पेड़ों को लगाना : जैसे कि हम सब जानते ही हैं कि पेड़ों को काटने की वजह से प्रदूषण बढ़ रहा है, इसलिए हमें अधिक से अधिक पेड़ों को लगाने की कोशिश करनी चाहिए जिससे हमारा वातावरण फिर से शुद्ध हो सके।

२) आबादी की रोकथाम : मनुष्य को बढ़ रही आबादी को कम करने के लिए कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए जिससे प्रदूषण की मात्रा में गिरावट हो सके।

३) बिजली के उपकरणों का कम उपयोग : बिजली के उपकरणों का कम उपयोग बड़ा ही मुश्किल है, पर अगर हम अपने वातावरण की भलाई की बात अपने मन में ठान लें तो यह संभव हो सकता है। ए.सी., फ्रिज जैसी चीजों का प्रयोग कम करना चाहिए।

उपसंहार : ऊपर दिये गए विचारों तथा सुझावों को अपनी जिंदगी में अपनाकर हम सब अच्छे वातावरण में प्रकृति के सौन्दर्य में एक अच्छी जिंदगी बिता सकते हैं। आवश्यकता है तो सिर्फ एक साथ आगे बढ़कर इस मुसीबत का सामना करने की :

बहुत झेला है तुझे मर-मर के।
बहुत जिया है जीवन घुट-घुट के।
जरूरत है कुछ ऐसा काम करने की अब तो।
समय है मानवता का कल्याण करने का अब तो।

वातावरण-प्रदूषण को रोकने में सरकार की भूमिका

*-निहारिका**

भारत में जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे प्रदूषण जैसी समस्या भी बढ़ती जा रही है। प्रदूषण की समस्या दिनो-दिन बढ़ने का कारण यह है कि मनुष्य अपने वातावरण को स्वयं खराब किए जा रहा है। वह सोचता है कि कोई उसे रोकने वाला नहीं है। प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जिसको रोकने का प्रयास केवल मनुष्य ही निश्चित रूप से कर सकता है।

प्रदूषण के प्रकार

प्रदूषण के कई प्रकार हैं जो कि इस प्रकार हैं--जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, आवाज-प्रदूषण।

जल-प्रदूषण : कई गांव अथवा शहरों में तालाब एवं नदियों के आस-पास लोग अपने कपड़े धोते हैं। इससे जल प्रदूषित हो जाता है तथा इस प्रकार जल-प्रदूषण की समस्या पैदा हो जाती है। मनुष्य का मल अथवा कूड़ा-करकट नदी अथवा तालाबों में जाकर जमा हो जाता है जिसे जल-प्रदूषण कहते हैं। फैक्टरियों से निकला गंदा पानी नदियों में पड़ता है जिससे नदियों का जल प्रदूषित होता है।

वायु-प्रदूषण : जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है अथवा जैसे-जैसे आवागमन के साधन जैसे--स्कूटर, कार आदि अधिक से अधिक गिनती में सड़कों पर चल रहे हैं वैसे-वैसे आवागमन के साधनों का धूआं वायु में मिलकर वायु को दूषित कर देता है। वायु-प्रदूषण का अन्य कारण है फैक्टरियों से निकला धूआं जो वातावरण में मिलकर वायु को दूषित कर देता है।

धूएं से लोगों को कई प्रकार की बीमारियां, जैसे सांस लेने की बीमारी, हृदय की बीमारी, फेफड़ों की बीमारी इत्यादि हो जाती हैं।

जब लोग अपने घरों का निर्माण करवाते हैं तो एक सीमेंट वाली मशीन होती है जो मिट्टी बहुत उड़ाती है। दूसरा मुख्य कारण यह है कि किसान अपने खेतों में जब कोई काम कर रहा होता है तो मिट्टी बहुत उड़ती है। सड़कों आदि में जब सुबह-सुबह सफाई-कर्मी झाड़ू लगा रहा होता है तो वह भी मिट्टी बहुत उड़ाता है जिससे लोगों की आंखें खराब हो जाती हैं तथा आंखों में सूजन आ जाती है।

प्रदूषण से कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं। कैंसर जैसी भयंकर बीमारी, सांस रुकने की बीमारी, फेफड़ों की बीमारी, हृदय की बीमारी आदि।

आवाज-प्रदूषण : आवाज-प्रदूषण की समस्या भी दिनो-दिन बढ़ती जा रही है। यह समस्या हर एक स्थान पर पाई जाती है, जैसे विवाह-शादियों आदि में बहुत ही ऊंची आवाज में स्पीकर लगाए होते हैं जिससे आवाज-प्रदूषण पैदा होता है। कई घरों तथा गलियों में जागरण होते हैं जिसकी आवाज इतनी तेज होती है कि हमारे कान सुन्न हो जाते हैं। आवाज-प्रदूषण से लोगों को कान से ऊंचा सुनने अथवा बहरेपन की समस्या हो जाती है।

प्रदूषण फैलाने का अगर कोई दोषी है तो

**कक्षा ११, पुत्री श्री अरुण कपूर, अजीत विद्यालय पब्लिक हाई स्कूल, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर*

वह मनुष्य ही है। उसने ही प्रदूषण जैसी समस्या पैदा की है तथा उसे रोकने का प्रयास करने की बजाय वह इसे और फैला रहा है। वह वनों को काट रहा है, आग लगा रहा है। अपनी बेकार इच्छाओं को पूरा करने के लिए वह सब कुछ विनाश कर रहा है जो प्रदूषण की समस्या बन रहा है। मनुष्य वनों को काट कर पशु-पक्षियों का घर नष्ट कर रहा है तथा स्वयं का घर बना रहा है। वह वनों के जीवों को मार रहा है, परन्तु सरकार कुछ क्यों नहीं कर रही? सरकार कोई कठोर कार्यवाही क्यों नहीं कर रही?

प्रदूषण की समस्या को कम करने के लिए अनेक पेड़ लगाने चाहिएं। वनों का विनाश करने की बजाय वनों का ध्यान रखना चाहिए। वनों की कटाई की मनाही करनी चाहिए। प्राकृतिक स्रोत, जैसे तालाब, कुआं, नदिया आदि को दूषित नहीं करना चाहिए। प्राकृतिक स्रोतों का ध्यान रखना चाहिए। सरकार को भी कठोर नियम बनाने चाहिएं।

प्रदूषण को कम करने के लिए सबसे पहले मनुष्य को जागरूक करना चाहिए ताकि वह दूषित करने के बजाय अपने वातावरण को स्वच्छ एवं साफ रखे। वह जिन स्रोतों को नष्ट कर रहा है उन्हें नष्ट न करे। गांव-गांव, शहर-शहर जाकर लोगों को वातावरण की शिक्षा देनी चाहिए ताकि वे अपने वातावरण को बचा सकें।

प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार को कठोर नियय बनाने चाहिएं। ऐसे नियम बनाए जाएं कि जो व्यक्ति वातावरण को जितना खराब करेगा उसे उतना ही जुर्माना देना पड़ेगा। सरकार द्वारा की गई कार्यवाही से लोगों को प्रदूषण की समस्या से छुटकारा मिल सकता है। नियमों का पालन करके लोग वातावरण को दूषित नहीं करेंगे अथवा अपने आस-पास के वातावरण की ओर विशेष ध्यान देंगे।

अगर लोगों में एकता होगी तो वे अपने वातावरण को दूषित होने से बचा सकते हैं। लोगों का एकजुट होना ही वातावरण के ठीक होने में सहायक सिद्ध हो सकता है। अगर लोगों में एकता नहीं होगी तो वे अपने साथ-साथ वातावरण को भी नहीं बचा पाएंगे, इसलिए प्रदूषण को कम करने के लिए लोगों में एकता होनी आवश्यक है।

सरकार को चाहिए कि वह लोगों के घर-घर या गली-मोहल्ले जाकर उन्हें चार्ट अथवा कोई नाटक या कोई फिल्म दिखाकर यह समझाने का प्रयास करे कि अगर वातावरण ही दूषित रहेगा तो मनुष्य इस वातावरण में कैसे जी पाएगा! वनों को काटने की बजाय वनों का निर्माण करना चाहिए।

अगर मनुष्य प्रकृति से खिलवाड़ करेगा तो उसका नुकसान वह खुद ही भरेगा। अगर वह पेड़ों, वनों को काटेगा अथवा जीव-जंतुओं को मारेगा तो उसका नुकसान वह खुद ही भरेगा। इसलिए इसे प्रकृति से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। नदियों, तालाबों को दूषित होने से बचाना चाहिए।

सरकार को अगर प्रदूषण जैसी समस्या को खत्म करना तथा जड़ से उखाड़ना है तो उसे प्रदूषण के खिलाफ नियमों का निर्माण करना चाहिए ताकि वह लोगों को समझा सके कि प्रदूषण को फैलाने से देश में बीमारियां फैल सकती हैं जो कि मनुष्य के लिए घातक हो सकती हैं। वनों की कटाई की पूर्णत: मनाही होनी चाहिए।

हम किसी से कम नहीं!

-नीतिज्ञ चुग*

हम किसी से कम नहीं!
रोक सके जो राह हमारी,
इतना किसी में दम नहीं।
भारत को आगे ले जाएंगे।
साइंस में जलवे दिखलाएंगे।
बुलंदियों को छूते हुए,
अपना परचम लहराएंगे।
हाथों में हमारे है बहुत जोर।
बढ़ते जाएंगे सफलता की ओर।
जान ले! सारी दुनिया,
स्वीकार हमको हर चुनौती
कि हम किसी से कम नहीं!
रोक सके जो राह हमारी,
इतना किसी में दम नहीं।
कृषक बन सोना हम उगाएंगे।
खून-पसीने से सींच उसे,
आगे बढ़ते जाएंगे।
फौजी बन, सीना तान, जान हथेली पे रख
रणभूमि में उतर आएंगे।
बाहरी आक्रमणकारियों का,
मुंह मोड़ दिखलाएंगे।
अपने देश की शान लगी है दांव पर,
मस्तक हम कभी न झुकाएंगे।
वैज्ञानिक बन अपना दिन, अपनी रात
कुर्बान कर देंगे हम।
चांद क्या? देश की खातिर,
सितारों से भी आगे जाएंगे हम।
सर्वांगी सफलता की ऊंचाइयों की,
सीमाएं तोड़ते जाएंगे हम।
जहां कुर्बान हुए सुखदेव, राजगुरु, भगत सिंघ,
जिसकी माटी पर चले महामानव,
उस देश को सोने की चिड़िया बनाएंगे।
है मेरी चुनौती पूरे विश्व को,
अपने देश को सातवें आसमान पर पहुचाएंगे।
ये वो धरती है जहां की निर्मल है प्रभात।
जहां सत्यवादी जीते और हुई कूड़ की मात।
चाहे आज डस गए इसे,
नशाखोरी, भ्रूण-हत्या, आतंकवाद के नाग।
हम में है हिम्मत, हम में है साहस,
बनाएंगे इसे फिर से हरा-भरा बाग।
मेरे प्यारे भारतवासियो!
चलो हम फिर तपें श्रम-साधना में,
चलाएं मेहनत, लगन, दृढ़ निश्चय के बाण।
अपने देश की खातिर हो जाएं,
हंसते हुए कुर्बान।
बढ़ने दो अपनी हिम्मत की लौ को,
अपनी कामयाबी से आचंभित कर दें दूजों को।
मेहनत से कमाएं, हक की खाएं,
बांट कर खाना सिखाया हमारे पूर्वजों ने।
तभी तो कहते हैं--
हम किसी से कम नहीं!
रोक सके जो राह हमारी,
इतना किसी में दम नहीं।
हां! इतना किसी में दम नहीं।

*****कक्षा-८-'आई', डी ए वी पब्लिक स्कूल, लारेंस रोड, श्री अमृतसर।

गुरबाणी राग परिचय-३२

रागोपरांत बाणी--सलोक वारां ते वधीक

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग उपरांत बाणी का तीसरा खंड "सलोक वारां ते वधीक" है जिसमें रागों के अनुसार अंकित बाणी में वारों में दिये सलोकों के अतिरिक्त शेष बचे सलोकों को दिया गया है। श्री गुरु अंगद देव जी के सभी सलोक रागों के अनुसार अंकित बाणी में दिये जा चुके हैं। अत: इस खंड में श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी के सलोक दिये गए हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी के सम्पूर्ण सलोक "सलोक महाल ९" भी इसी खंड में हैं। सलोकों के अंत में श्री गुरु अरजन देव जी का वस्तु निर्देशकात्मक (विषय पर प्रकाश डालने वाला) मुंदावणी सलोक है तथा समापन का प्रभु का मंगल है। इस खंड का विस्तार (राग माला के पृष्ठ को छोड़कर) २० पृष्ठों (१४१०-१४२९) में है।

"सलोक वारां ते वधीक" के अंतर्गत श्री गुरु नानक देव जी के ३३ सलोक हैं। इनमें से एक सलोक श्री गुरु अमरदास जी का है तथा दो सलोक पहले के संदर्भ से हैं। इस प्रकार नवीन सलोक ३० हैं।

श्री गुरु नानक देव जी के इन सलोकों में सबसे प्रसिद्ध सलोक प्रभु-मिलन के लिए अहंकार-त्याग सम्बंधी हैं, जिसमें प्रभु-मिलन को प्रेम-क्रीड़ा के रूप में दिया गया है। जिस प्रकार युद्ध में विजय के लिए शीश देना पड़ता है उसी तरह से प्रभु-मिलन के लिए अहंकार-त्याग करना पड़ता है। यदि प्रभु के मिलन के मार्ग का चाव है तो प्रेम की गली में शीश को हाथ पर रख कर आने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए:

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

नाम-साधना में प्रेम की अनन्यता का विचार गुरबाणी विचारधारा का एक विशेष अंग है। इस परंपरा का विकास बाद में सिंधी भाषा के बैंत नाम के छंद में हुआ है। गुरु नानक साहिब के दो सलोक उसी शैली के हैं।

यदि तुम्हें (भवसागर) तैरने की इच्छा है तो उनसे पूछो जो तैरने की कला जानते हैं। वे ही ज्ञानवान हैं जो इस भंवर (घुमाघेरी) से गुजर चुके हैं :

जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़ंन्ह कल ॥
ताहू खरे सुजाण वंञा एन्ही कपरी ॥
(पन्ना १४१०)

आंधी व तूफान हैं तथा बाढ़ की लहरें सिर के बराबर ऊंचाई तक बह रही हैं। यदि सतिगुरु को याद करोगे तो तुम्हारे बेड़े के डूबने का डर नहीं रहेगा :

झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥
सतिगुर सिउ आलाइ बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥
(पन्ना १४१०)

अहंकार को दूर करने के लिए प्रभु-प्रेम बाण की-सी चोट लगाता है जिससे अहंकार तुरंत मर जाता है। जिस चोट से कोई ऐसे मर

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६*

सके वही स्वीकार की जाती है :

नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥
चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥
जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥
पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥
(पन्ना १४११)

श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य के जीवन की यथार्थ स्थिति, समस्या और समाधान सम्बंधी विचार काव्यमयी शैली में प्रस्तुत करते हैं। इस संसार में हमारा जीवन क्षणभंगुर शरीर पर टिका है। यह शरीर पांच तत्वों को विधिवत मिला कर प्रभु ने सजाया है। यह तत्व परिवर्तनशील होने से मिथ्या है। शरीर विकारों से भरा है। इस मैले बर्तन को कौन धो सकता है?

गुरु नानक साहिब इस समस्या का समाधान प्रभु की रजा पर छोड़ते हैं। इस संसार में हमारी यात्रा तभी सार्थक होगी यदि उस प्रभु को अच्छा लगेगा और जब वह इस शरीर में दिव्य ज्योति प्रकाशित करेगा और इस निर्जीव वीणा को झंकृत कर देगा :

भांडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥
धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥
भांडा आणगु रासि जां तिसु भावसी ॥
परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥ (पन्ना १४११)

प्रभु-रजा का आधार भी अहंकार-त्याग पर टिका है। उक्त दो सलोकों के क्रम में राग सारंग की वार से सलोक उद्धृत कर बिना गुण के गर्व की भर्त्सना की गई है।

जो जीव मन के अंधे हैं वे अपने वचनों की लाज नहीं जानते, उनके मन में अज्ञान होने से उनका हृदय-कमल उलट जाता है और वे अनाकर्षक होते हैं। ऐसे लोग बिल्कुल गधे हैं जो गुण के बिना ही गर्व करते हैं :

नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥ (पन्ना १४११)

शेख फरीद जी ने प्रभु-मिलन के लिए कठोर साधना पर बल दिया है। अगर मुझे प्रभु मिले तो मैं अपने शरीर को तंदूर की तरह तपाऊं, हड्डियों का ईंधन बना दूं, पैर थक जावें तो सिर के बल चलूं। गुरु नानक साहिब ने इस सलोक पर टिप्पणी की है कि परमात्मा तो तुम्हारे भीतर है उसे वहीं देखो। गुरु नानक साहिब का सलोक "वारां ते वधीक" में भी दिया गया है :

तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥
सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि ॥
(पन्ना १४११-१२)

"सलोक वारां ते वधीक" में सूक्तिमय एक सलोक में बाबर के आक्रमण के समय लाहौर शहर में आतंक का वर्णन है :

लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥

उक्त कथन पर श्री गुरु अमरदास जी की टिप्पणी है :

लाहौर सहरु अंम्रित सरु सिफती दा घरु ॥
(पन्ना १४१२)

श्री गुरु नानक देव जी के बाद "वारां ते वधीक" में श्री गुरु अमरदास जी के सलोक हैं। रागों के अनुसार बाणी अंकित बाणी में श्री गुरु अमरदास जी के १३ वारों में ३४४ सलोक हैं जो सर्वाधिक हैं। "वारां ते वधीक" में ६७ सलोक हैं जो सर्वाधिक हैं। श्री गुरु अमरदास जी के इन सलोकों में कुछ सलोक वारों में दिये विषय का विस्तार-रूप हैं। राग मलार में चातक (बाबीहा पक्षी) के साधक के रूप में सलोक हैं :

बाबीहा अंम्रित वेलै बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ॥
मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥
हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥
नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि

वीचारि ॥ (पन्ना १२८५)

"वारां ते वधीक" के पांच सलोकों (५४-५८) में बाबीहा के सबद वीचारि तथा सत्य को हृदय में धारण करने की व्याख्या है :

बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥
सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥
झिमि झिमि अंम्रितु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥
कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥
नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥ (पन्ना १४२०)

श्री गुरु अमरदास जी ने राग बिलावल की वार में दिये प्रसिद्ध सलोक में प्रभु से प्रार्थना की है कि संघर्ष, विकार और तृष्णा से जल रहे जगत को शरण में लेकर रक्षा करें। जगत-उद्धार का उपाय प्रभु के ही ज्ञान और सामर्थ्य में है। सच्चा सतिगुरु शबद के उपदेश से सुख की बख्शिश करता है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥
नानक अवरु ना सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥
(पन्ना ८५३)

उक्त सलोक का रूपांतर "वारां ते वधीक" में है। भाग्यशाली पुरुष को सतिगुर मिलता है, हरि-नाम को हृदय में धारण करने से तृष्णा की अग्नि शांत हो जाती है :

लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥
इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंती वार ॥
बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥
वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥
तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरिधारि ॥ (पन्ना १४१६)

श्री गुरु अमरदास जी ने वारों के अंतर्गत सलोकों में सतिगुरु की सेवा के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है :

--गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥ (पन्ना ५४८)
--सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ॥
नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥
(पन्ना ५५२)

सतिगुरू की सेवा में अहंकार का त्याग आवश्यक है। गुरु-उपदेश से अहंकार का विनाश होता है तब सेवा सफल होती है :

सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥
सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ (पन्ना ६४९)

"वारां ते वधीक" के इस सलोक में निष्ठापूर्वक सेवा करने वाले गुरमुखों की चरण-वंदना की कामना की गई है :

जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥
गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥
(पन्ना १४१३)

'सबदि मरहि' के विचार को दो स्वतंत्र सलोकों में दिया गया है :

सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥

तथा

सबदि मरै सो मुआ जापै ॥
गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥ (पन्ना १४१८)

"वारां ते वधीक" सलोकों में गुरमुख और मनमुख के स्वभाव एवं लक्षण का वर्णन लगभग २० सलोकों में किया गया है :

गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥
तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंम्रित नामु सुख वासु ॥
नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम

प्रगासु ॥ *(पन्ना १४१४)*

गुरु के उपदेशानुसार आचरण करने वाला जीव सहज-उन्मुखी होता है। उसके हृदय में आत्मा के स्वामी का प्रकाश होता है। उसका मन दसम द्वार (ब्रह्म रुध्र) में प्रवेश करता है। दूसरी ओर मनमुख सर्वव्यापक प्रभु को नहीं पहचानते। द्वैत भाव से उन्हें सुख कैसे हो सकता है?

मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ ॥
आतम रामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥
हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥
नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥ *(पन्ना १४१४-१५)*

वास्तव में मानव शरीर हरि-मंदर है किन्तु इसका अनुभव ज्ञान से होता है। मनमुख इस तथ्य को नहीं जानते। श्री गुरु अमरदास जी ने 'हरिमंदर' देखने के लिए ज्ञान-चक्षु खोलने का आह्वान किया है:

हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥
मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥ *(पन्ना १३४६)*

"वारां ते वधीक" के अंतर्गत एक सलोक में श्री गुरु अमरदास जी ने उक्त असटपदी का भाव समेट दिया है। परमात्मा ने इस शरीर रूपी मंदिर का निर्माण किया है और स्वयं इसमें उसका निवास है। वे भाग्यशाली हैं जिन्हें गुरमुखों से भेंट-स्वरूप परमात्मा मिल जाता है:

हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥
गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥
हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥
धनु भगवंती नानका जिनि गुरमखि लधा हरि भालि ॥
वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥ *(पन्ना १४१८)*

मानव-स्वभाव का अंकन करते हुए एक सलोक के आरंभ की दो पंक्तियों में श्री गुरु अमरदास जी का कथन है :

"हे हरि! हम लोक अत्यंत पापी हैं, हमारी भूलों (खताओं) का कोई अंत नहीं है। हे प्रभु! कृपा करके क्षमा कर दो, मैं बड़ा गुनहगार हूं।"

असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥
हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ *(पन्ना १४१६)*

श्री गुरु अमरदास जी के सलोकों का निष्कर्ष प्रभु-कृपा-दृष्टि की महत्ता के साथ किया गया है। प्रभु की कृपा-दृष्टि के बिना सब करुण प्रलाप है। जिस पर उसकी कृपा-दृष्टि होती है उस भूले हुए को भी वह स्वयं समझाकर मार्गदर्शन करता है :

भुलिआं आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥
नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥
(पन्ना १४२१)

श्री गुरु रामदास जी के "वारां ते वधीक" में सलोक संख्या ३० है। इनका मुख्य विषय प्रभु के प्रति सच्चा प्रेम है। इसी के प्रतिपादन हेतु राग गूजरी की वार की पउड़ी चार के सलोक से "वारां ते वधीक" सलोकों का आरंभ किया गया है:

वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥
अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥
(पन्ना १४२१)

वे भाग्यशाली जीवात्मा सुहागिन हैं जिन्हें गुरु के द्वारा परमात्मा-पति प्राप्त हुआ है। उनके भीतर ज्योति का प्रकाश होता है और वे नाम में समा जाती हैं।

गुरु के द्वारा जिसने सच्चे प्रियतम से अनुराग किया है उन्हें रात-दिन आनंद होता है, वे सहज में समा जाते हैं :

गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥
अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥
(पन्ना १४२२)

राग कानड़ा की वार में श्री गुरु रामदास जी ने अलख प्रभु के दर्शन गुरु-कृपा से अपने हृदय में किये हैं :

हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥
जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥ *(पन्ना १३१८)*

"वारां ते वधीक" में इसका रूपांतरण किया गया है। जिस प्रियतम से मुझे नेह है वह नित्य मेरे अंग-संग है। मैं अंदर-बाहर घूमते-फिरते उसे हृदय में बसाए रखती हूं:

जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥
अंतरि बाहरि हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ॥ *(पन्ना १४२३)*

प्रभु से प्रेम की निष्ठा का सरल सलोकों में स्वाभाविक चित्रण है :

जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ त्रिपतीऐ ॥
नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीए ॥
(पन्ना १४२२)

जिन्हें प्रेम-प्यार होता है प्रभु कृपा कर उसे अपना लेते हैं। मुझ याचक को भी हरि-नाम देकर अपने में लीन कर लो :

जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥
नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु हरि ॥
(पन्ना १४२२)

प्रेम के माधुर्यपूर्ण दो पंक्ति के सलोकों के बाद मनमुख सम्बंधी सलोक हैं जिनमें मनमुख के द्वैत-भाव, हुक्म न जानकर अहंकारपूर्ण भावना से काम करने का वर्णन है। गुरसिक्खों ने प्रभु का भाणा मान लिया है, उन्हें पूरा गुरु भवसागर से पार करावेगा :

गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लंघाइ ॥ . . .
गुरसिखा नो साबासि है हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥ *(पन्ना १४२४)*

"सलोक वारां ते वधीक" के अंतर्गत श्री गुरु अरजन देव जी के मात्र २२ सलोक हैं। श्री गुरु अरजन देव जी के सलोकों का मुख्य भाग उनके द्वारा रचित वारों के साथ संलग्न हैं। राग जैतसरी, राग मारू तथा राग गउड़ी के अंतर्गत वारों में एक विशेष योजना के अनुसार पउड़ी के साथ सलोकों को दिया गया है। इनका मुख्य विषय प्रभु के प्रति उत्कंठा है। इसी क्रम में 'वारां ते वधीक' के अंतर्गत २२ में से २० सलोकों का संदर्भ मिल जाता है। राग मारू की वार के आरंभ में एक डखणे (मुलतान की भाषा में दोहा) में प्रात: काल के उजले प्रकाश में प्रभु-दर्शन से श्रृंगार की सार्थकता का वर्णन है:

उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥
काजलु हारु तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥ *(पन्ना १०९४)*

"वारां ते वधीक" के सलोक में उक्त के भाव को व्यंजना के साथ प्रस्तुत किया गया है। जीवन-धन (प्रभु) के बिना रेशमी साज-सज्जा अग्नि में जलाने योग्य है। हे प्रियतम! मैं तुम्हारे साथ धूल में लोटती हुई भी शोभा पाती हूं:

धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले ॥
धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहां नानक तै सह नाले ॥
(पन्ना १४२५)

मारू राग में श्री गुरु अमरदास जी की वार में दिये एक सलोक में श्री गुरु अरजन देव जी ने माया की बढ़ती हुई तृष्णा का वर्णन किया है। इस सलोक को "वारां ते वधीक" में यथावत दिया गया है :

माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमां दंम ॥
सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥
(पन्ना १४२६)

राग रामकली की वार में श्री गुरु अरजन देव जी ने पउड़ी १८ में "सरब कला भरपूरु प्रभु" के "घरु" का वर्णन किया है :
सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥
(पन्ना ९६५)

प्रभु ने व्यापार के लिए जगत की रचना की है, जिसमें सत्य के व्यापारी शोभा पा रहे हैं। उन पर प्रभु की छत्र-छाया है। जो सत्य की इस अपार सामग्री की कमाई करता है वही धनवान है:
छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीए ॥
वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥
(पन्ना ९६५)

"वारां ते वधीक" में उक्त सलोक का रूपांतरण है। इसमें 'छतड़े' के स्थान पर 'तिहटड़े' का प्रयोग है। संसार के इस बाजार में सतसंग की तीन छत हैं--"श्रवण (सुणिऐ), मनन (मंनीऐ) और निदि्ध्यासन (मनि कीता भाउ)।" इस बाजार में जिन्होंने सत्य की सामग्री का व्यापार किया वही सच्चे पंसारी हैं:
तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥
सचु वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥
(पन्ना १४२६)

"वारां ते वधीक" के अंतिम दो सलोक बहुत लोकप्रिय हैं। प्रथम सलोक में साजन से मिलन के लिए, पक्षी की उड़ान के लिए उपयुक्त साधन (पंख) की किसी भी मूल्य पर प्राप्ति का उल्लेख है। दूसरे सलोक का उच्चारण प्राय: शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पठन से पूर्व प्रस्तावना के रूप में किया जाता है :
खंभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावी तोलि ॥
तंनि जड़ांई आपणै लहां सु सजणु टोलि ॥
सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहां दै साहु ॥
जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनां दा वेसाहु ॥
(पन्ना १४२६)

"वारां ते वधीक" सलोकों के क्रम में श्री गुरु तेग बहादर जी के सलोकों की विशिष्टता दर्शाने के लिए 'सलोक महला ९' का अंकन संक्षिप्त गुरु-मंत्र "ੴ सतिगुर प्रसादि" के बाद किया गया है। नवम गुरु के सलोक रागों के अनुसार अंकित बाणी में नहीं हैं, इसलिए ५७ सलोकों को इस लड़ी में सम्पूर्ण आध्यात्मिक कथ्य का सारांश व्यवस्थित रूप से मिलता है। सभी सलोक दो पंक्तियों में हैं। नाम-साधना के उद्बोधन से आरंभ होकर इनका पर्यावसान "राम नाम उरि महि गहिओ" से होता है :
राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥
(पन्ना १४२९)

मंजिल तक पहुंचने के लिए संसार की क्षणभंगुरता का ज्ञान, मन का नियंत्रण, माया के आकर्षण से विरक्ति तथा एक भगवान के प्रति निष्ठा का सरस-भाव चित्रण है। सत्य साधक का एक आदर्श सनातन सत्य का उद्घोषक है :
भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥
(पन्ना १४२७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आरंभ में जपु जी साहिब में क्रमबद्ध रचना के रूप में शुभ गुणों की टकसाल में शबद-साधना से प्रभु के निकट पहुंचने की पृष्ठभूमि है। 'सलोक महला ९' के सलोकों को मौक्तिक (मोतियों की) माला को धारण कर प्रभु-दर्शन का निष्कर्ष है।

श्री गुरु तेग बहादर जी के सलोकों के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विषय-वस्तु का सलोक 'मुंदावणी' के शीर्षक से है। प्रस्तुत सलोक में 'मुंदावणी' शब्द की व्याख्या नहीं है। राग सोरठि में श्री गुरु अमरदास जी ने 'मुंदावणी' की व्याख्या पहेली के रूप में सलोक की तीन

पंक्तियों में की है :

"थाल में तीन वस्तुएं हरि-नाम के अमृत के रूप में हैं जिनके सेवन से मन तृप्त होता है और मोक्ष मिलता है। गुरु-उपदेश के विचार से संतों को अलभ्य भोजन मिलता है।"

यह 'मुंदावणी' (पहेली) किस तरह प्रकाश में आती है जिससे प्रभु को हृदय में बसा सके। यह पहेली गुरु ने सिक्खों को प्रस्तुत की तथा सिक्खों ने इसके भावार्थ को ग्रहण किया। इसका भाव प्रभु की प्रेरणा से ज्ञात होता है। गुरमुख को नाम की कमाई से प्रभु मिलता है :

थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अंम्रितु सारु ॥
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥
इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥
एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ (पन्ना ६४५)

श्री गुरु अरजन देव जी ने 'मुंदावणी' सलोक में श्री गुरु अमरदास जी के थालु (बाणी-संग्रह) में तीन वस्तुओं का वर्णन सत्य, संतोष और विचार (सद् विचार/ज्ञान) के रूप में स्पष्ट किया है। इन तीनों का आधार हरि-नाम है। इस प्रकार के आत्मिक भोजन को जो ग्रहण करता है, उसका उद्धार होता है। इस भोजन का नित्य सेवन आवश्यक है। प्रभु की चरण-शरण से जब अंधकारमय संसार से पार हो जाते हैं तब प्रभु का आलोक दिखाई देता है:

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ (पन्ना १४२९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन का युग-प्रवर्त्तक कार्य प्रभु की कृपा से सम्पन्न हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान और अपनी बाणी के आलोक को एक तारतम्य रूप में प्रस्तुत किया है। नम्रता एवं समर्पण-भाव से गुरु जी निवेदन करते हैं--"हे प्रभु! तुम्हारा किया पता नहीं चलता। तुमने ही दयावश सामर्थ्य दी, जिससे इस महान कार्य (ग्रंथ-रचना) का समापन हुआ है। मुझ निर्गुण में कोई गुण नहीं है। आपकी दया से मुझे सच्चा गुरु मिला। हे प्रभु! मेरे प्राण हरि-नाम में निवास करते हैं, उसी से मेरा मन प्रफुल्लित होता है।"

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥
नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ (पन्ना १४२९)

श्री गुरु नानक देव जी के शब्दों में "वह कागज, कलम, दवात, स्याही और लिखने वाला धन्य है जिसने सच्चा नाम लिखा और लिखवाया है। हे परमात्मा! तुम स्वयं पट्टी और कलम हो। पट्टी पर लिखा लेख भी तुम्हारा ही रूप है। तुम्हीं एक सर्वस्व हो, दूसरा क्यों कहा जाये?"

धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भांडा धनु मसु ॥
धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥
आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥
एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥

(पन्ना १२९१)

गुरबाणी चिंतनधारा-४८

अनंदु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥
होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥
गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥
आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥ *(पन्ना ९१९)*

गुरु पातशाह उपरोक्त पउड़ी में सच्चे सिक्ख को परिभाषित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि अगर कोई सिक्ख गुरु के सम्मुख होकर अर्थात् गुरु की आज्ञानुसार अपना जीवन बनाना चाहे और गुरु की सच्ची खुशी (आशीष) प्राप्त करना चाहता है (तथा उसे अपनी किसी करनी पर पछतावा या शर्मिंदगी न उठानी पड़े) तो वह इस युक्ति को अपनाए। वह हृदय से (हर पल) गुरु-चरणों से जुड़ा रहे तथा सदैव गुरु को अपने अंग-संग समझे तथा गुरु के उपदेशों को अपने हृदय-घर में पिरो कर रखे अर्थात् हमेशा याद रखे।

गुरु की खुशी लेने वाला सिक्ख अहं-भाव अर्थात् चतुराइयां छोड़कर हमेशा गुरु के सन्मुख रहे, गुरु के बिना किसी को अपने जीवन का आधार न बनाए।

श्री गुरु अमरदास जी पावन कथन करते हैं कि हे संत-जनो! सुनो! उपरोक्त गुणों का धारक सिक्ख ही गुरु के समक्ष रहकर आत्मिक आनंद प्राप्त कर सकता है।

वस्तुतः गुरु के परिपूर्ण सच्चे सिक्ख का रहन-सहन तथा आत्मिक सूझ-बूझ इतनी परिपक्व हो जिससे कि वह गुरु के प्रत्येक आदेश को शिरोधार्य कर अपने जीवन को धन्य माने। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया गया है, यथा :

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥
(पन्ना २८६-८७)

ऐसे पूर्ण गुरसिक्ख के प्रति ही दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसे अपना स्वरूप मानते हुए अपनी खुशी अभिव्यक्त की है, यथा:

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे मै हउ करों निवास।
उपमा खालसे जात न कही।
जिहवा एक पार न लही।

और जो गुरु की शरण में है वही सदा आनंद में है। गुरबाणी का प्रमाण है :

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥
बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥ *(पन्ना ५४४)*

ऐसे गुरमुख प्यारे की गुरु-चरणों की प्रीति के अतिरिक्त कोई चाहत शेष नहीं रह जाती क्योंकि उसे गुरु-चरणों में ही आत्मिक आनंद की उपलब्धि हो चुकी होती है, यथा :

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ *(पन्ना ५३४)*

वस्तुतः उस अकाल पुरख की रहमत से

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ०९३१४६-०९२९३

तथा पूर्व जन्म के नेक कर्मों के श्रेष्ठ संस्कारों से ही पूर्ण गुरु की प्राप्ति मुमकिन है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे
भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक
जनम जनम की सोई जागी ॥ (पन्ना २०४)
जे को गुर ते वेमुखु होवै
बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥
पावै मुकति न होर थै कोई
पुछहु बिबेकीआ जाए ॥
अनेक जूनी भरमि आवै
विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥
फिरि मुकति पाए लागि चरणी
सतिगुरू सबदु सुणाए ॥
कहै नानकु वीचारि देखहु
विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥ (पन्ना ९२०)

श्री गुरु अमरदास जी ने इस पउड़ी में गुरु से बेमुख हुए मनमुखों की मंद अवस्था एवं आवागमन के चक्करों में फंसे व्यक्तियों की अद्योगति को दर्शाया है तथा साथ ही स्पष्ट किया है कि बिना पूर्ण गुरु की प्राप्ति के विकारों से छुटकारा मुमकिन नहीं है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि अगर कोई मनुष्य गुरु की ओर से मुख मोड़ ले तो उसे माया के बंधनों से छुटकारा नहीं मिल सकता, चाहे किसी विवेकी (ज्ञानी पुरुष) से जाकर पूछ कर तसल्ली कर लो। यह अटल सत्य है कि वह सतिगुरु की शरण आए बिना अज्ञानता एवं भ्रम से मुक्त नहीं हो सकता।

अज्ञानतावश ही बेमुख अनेक योनियों में भटकते रहते हैं। सतिगुरु की शरण में आने के बिना उन्हें अज्ञानता से छुटकारा नहीं मिल सकता। अंत में गुरु की शरण में आकर ही माया तथा मोह के बंधनों से छुटकारा मुमकिन है क्योंकि गुरु ही सही जीवन-जाच सिखाता है, गुरु ही सच्चा मार्गदर्शक है।

श्री गुरु अमरदास जी पावन उपदेश करते हैं कि विचार कर देख लो, गुरु के बिना माया के बंधनों से मुक्ति संभव नहीं है तथा इस मुक्ति के बिना आत्मिक आनंद कैसे प्राप्त हो सकता है?

वस्तुत: गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है। अज्ञानता का अंधेरा गुरु के बिना कैसे हट सकता है? आओ! 'गुरु' शब्द के शाब्दिक अर्थ को समझें। 'गुरु' शब्द दो वर्णों से बना है। 'गु' का अर्थ है 'अंधेरा' तथा 'रु' का अर्थ है 'प्रकाश'। विवेकियों के चिंतनानुसार जो अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा नश्वरता से अमरता की ओर ले जाए वही 'गुरु' है।

संसार के नश्वर पदार्थों के बंधनों से मुक्त कर निरंकार से जोड़ने वाले सतिगुरु की महिमा का गुणगान गुरबाणी में सर्वत्र हुआ है, यथा :

भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥
पुछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ ॥
(पन्ना ५९)

यही नहीं, गुरबाणी आशयानुसार गुरु के बिना तो जीवन में अंधकार ही अंधकार है। गुरु के बिना न ही जीवन-युक्ति और न ही मुक्ति संभव है, यथा :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ (पन्ना १३९९)

और जो हृदय करके गुरु की शरण में आ जाते हैं वे लोहे से कंचन हो जाते हैं अर्थात् अशुद्ध से शुद्ध हृदय वाले हो जाते हैं, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

सतिगुर की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥
सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥

नानक जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि सनेहा ॥
अंम्रित बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥ *(पन्ना ९६०)*

पूर्व के नेक कर्मों की बदौलत पूर्ण गुरु से मिलाप संभव है। पूर्ण गुरु की पावन आत्मिक जीवन देने वाली बाणी उस मनुष्य के हृदय में बसती है जिस पर गुरु-कृपा करे। फिर उसका जन्म-जन्म का चक्कर समाप्त हो जाता है, उसे सच्चा सुख (आनंद) प्राप्त होता है। वाहिगुरु की रहमत से हमें भी धन्य-धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी से दिशा-निर्देश लेकर जीवन में विचरण करना आ जाए।

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥
पीवहु अंम्रितु सदा रहहु हरि संगि जपिहु सारिगपाणी ॥
कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥

गुरु पातशाह उपरोक्त पउड़ी में गुरसिक्खों को पावन उपदेश देते हुए प्रेरित करते हैं कि हे सतिगुरु के प्यारे सिक्खो! आओ, सदा स्थिर रहने वाले पारब्रह्म परमेश्वर से जोड़ने वाली पावन बाणी का मिल कर गायन करो। अपने प्यारे गुरु की बाणी का गायन करो जो समस्त बाणियों में सर्वोत्तम बाणी है। यह पावन बाणी उनके हृदय रूपी घरों में बसती है जिन पर परमेश्वर की कृपा होती है।

बाणी में समाहित अमृत का पान करो तथा इस अमृतमयी बाणी की बरकतों से प्रभु-प्यार में लीन रहो। इस तरह सारंगबाणी (ऐसे धनुषधारी प्रभु जिसके वश में सारी सृष्टि है) का निरंतर सिमरन करो।

श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि हे गुरसिक्खो! प्रभु-बाणी का निरंतर जाप करते रहो, इसी में आत्मिक आनंद की अनुभूति है।

वस्तुत: यह धुर की बाणी है जिसे अलाही बाणी कहा गया है। यह केवल ईश्वर का ज्ञान ही नहीं करवाती अपितु यह तो परमात्मा का ही स्वरूप है, जैसा कि गुरबाणी में स्पष्ट है:

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥
(पन्ना ५१५)

यह निरंकार का ही रूप है, अत: समस्त चिंताओं से मुक्त करने में समर्थ है, यथा :

धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ *(पन्ना ६२८)*

शबद-गुरु से जुड़कर ही धर्मी जीवन बनाया जा सकता है, यथा गुरबाणी प्रमाण है:

भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ *(पन्ना ८)*

सुरति को शबद में जोड़ना तथा परमेश्वर के सदा कायम रहने वाले स्वरूप में लीन हो जाना।

मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥
जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥ *(पन्ना १०५)*

जैसे बादल धरती पर बरसते हैं तो चारों तरफ हरियाली-खुशहाली छा जाती है, वैसे ही अमृतमयी बाणी की वर्षा जिस हृदय में होती है वह हृदय-कमल भी खिल उठता है अर्थात् आनंद की अवस्था में रहता है।

यह सर्वोत्तम बाणी है क्योंकि यह 'धुर की बाणी' है। इसका पुख्ता प्रमाण श्री गुरु नानक देव जी के वचन हैं। गुरु पातशाह भाई मरदाना जी को सम्बोधित करते हैं--"भाई मरदाना! रबाब बजा, बाणी आई है।" यह कभी नहीं कहा कि "रबाब बजाओ, मैं बाणी उच्चारण

करता हूं।" यह अलाही बाणी उस परमेश्वर की बाणी है, इस तथ्य को तिलंग राग में स्पष्ट किया है। आप फरमान करते हैं कि:

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ (पन्ना ७२२)

इसी भाव के दर्शन चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी की बाणी में भी होते हैं, यथा:

सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु
गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥
(पन्ना ३०८)

वस्तुत: यह पावन बाणी वास्तविक आनंद का सागर है। समस्त दुखों, संतापों, चिंताओं से मुक्त कर आत्मिक आनंद प्रदान करने वाली कल्याणमयी बाणी का गायन-श्रवण सदैव सुखदायी है, यथा :

अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥
सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ (पन्ना १०३)

बस, जरूरत है तो इस अलाही बाणी को प्यार एवं श्रद्धा से पढ़-सुन कर हृदय में बसाने की तभी इसका वास्तविक आनंद (रस) प्राप्त किया जा सकता है और जीवन-मनोरथ में कामयाबी हासिल हो सकती है।

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥
कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥
हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥
चित जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥

श्री गुरु अमरदास जी २४वीं पउड़ी में कच्ची एवं पक्की बाणी का भेद समझाते हुए सच्ची बाणी का गायन करने को प्रेरित करते हैं। गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि सच्चे गुरु के मुखारबिंद से उच्चारण किए गए शबदों के बिना बाकी बाणी कच्ची ही है। पूर्ण गुरु के बिना उच्चरित बाणी कच्ची ही है क्योंकि उसका कोई वजूद ही नहीं है। ऐसी बाणी माया के प्रभाव से बचाने में समर्थ नहीं है। ऐसी बाणी प्रभावहीन है। उसे कहने वाले तथा सुनने वाले सभी कच्चे हैं अर्थात् उन वक्ताओं और श्रोताओं में किसी तरह की परिपक्वता नहीं है। ऐसी बाणी की व्याख्या करने वाले भी कच्चे हैं।

ऐसे मनुष्य चाहे रसना (जीभ) से हरि-नाम का बेशक उच्चारण करते रहें, लेकिन हृदय से उन पर शब्दों का कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है क्योंकि अमल और मनन से रहित हैं। जिनके मन को सदैव माया ने मोह रखा है अर्थात् जिनके मन माया के अधीन हैं वस्तुत: उनके चित्त का हरण माया द्वारा हो चुका है तो उसमें गुरु की शिक्षा कैसे प्रभाव डाल सकती है?

गुरदेव फरमान करते हैं कि सच्चे गुरु के आशय के विपरीत कच्चे मन वालों द्वारा उच्चारण की गई बाणी कच्ची है तथा प्रभावहीन है। इस पउड़ी में माया में गलतान तथा केवल धनोपार्जन करने के उद्देश्य से गायन या उच्चारण की गई बाणी को कच्ची बाणी की संज्ञा देते हुए कलयुगी जीवों को सावधान करते हैं।

इस तथ्य को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के समय पंचम पातशाह की कसौटी द्वारा समझने का यत्न किया जा सकता है। इस महान पुनीत ग्रंथ की संपादना के समय अनेक स्वयं को उच्च कोटि के रचयिता समझने वाले श्री गुरु अरजन देव जी के समक्ष अपनी रचनाएं लाए और उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल (दर्ज) करने की विनती की। गुरु साहिब द्वारा सत्य की कसौटी पर खरी न

उतरने वाली रचना को इस पावन ग्रंथ में शामिल नहीं किया गया।

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी के कथन के अनुसार सच्ची बाणी का उच्चारण करने वाले स्वयं सच के मार्ग पर चलते हैं तथा दूसरों को भी इसी मार्ग का मुसाफिर बना देते हैं और ईश्वर-नाम के सच्चे सरोवर में स्नान करवा कर तन-मन से विकारों की मैल उतरवा देते हैं, यथा:

जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥
ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥
जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥
तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ *(पन्ना १४०)*

भक्त फरीद जी की बाणी भी यही भाव दृढ़ाती है कि जब तक चित्त माया में लगा है तब तक केवल मुख से प्रभु-नाम उच्चारण करने से कुछ भी संवरने वाला नहीं है, यथा:

जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ ॥ *(पन्ना ४८८)*

आओ! हम तथ्य को पक्षियों के एक उदाहरण से समझने का यत्न करें कि हमारी अवस्था केवल तोता-रटन जैसी तो नहीं हो गई है। यदि हमारा प्रेक्टिकल जीवन ठीक बाणी के विपरीत चल रहा है तो हमारी दशा कैसी होगी?

एक शिकारी रोज सुबह आता, दाने बिखेरता और साथ ही अपना जाल बिछा देता। पक्षी दाना चुगने आते और उसके जाल में फंस जाते। यह प्रक्रिया कई दिन तक चलती रही। एक दिन पक्षियों के मुखिया ने मीटिंग बुलाई कि इस तरह तो हमारा वंश ही खत्म हो जाएगा। हमें कुछ करना होगा। सभी ने हां में हां मिलाई कि हमें कुछ करना चाहिए। अब सब मुखिया की ओर देख रहे थे। तब मुखिया ने समझाया कि आज मैं तुम्हें एक मंत्र बताता हूं। तुम उसे अच्छी तरह रट लो और यही गाते रहना तभी हम उस शिकारी से बच पाएंगे। मंत्र था "जाली (शिकारी) आएगा, जाल बिछाएगा, दाना पाएगा, मत चुगिओ, मत चुगिओ।" सभी पक्षियों ने यह मंत्र अच्छी तरह याद कर लिया। अगली सुबह हुई, शिकारी आया, जाल बिछाया, दाना डाला और इंतजार कर रहा है। क्या देखता है कि सभी पक्षी यह मंत्र रट रहे हैं कि "जाली आएगा, जाल बिछाएगा, दाना पाएगा, मत चुगिओ, मत चुगिओ।" शिकारी बड़ा परेशान था कि अब तो मेरे जाल में कोई पक्षी नहीं फंसेगा, मेरा तो धंधा ही चौपट हो जायेगा। फिर भी इस विश्वास के साथ कि हो सकता है कोई पक्षी यह मंत्र न सीखा हो, शायद वही फंस जाए। लेकिन यह क्या? सारे पक्षी दाना चुगने भी आ गए और शिकारी के जाल में पहले की तरह फंस भी गए और 'मंत्र' का रटन भी किए जा रहे हैं। उन अल्प-ज्ञान वालों को यह नहीं पता कि हम खुद तो शिकारी के जाल में फंसे हुए हैं फिर यह 'मंत्र' दूसरों को किस बचाव के लिए सुना रहे हैं?

हम भी अपने-अपने हृदय में झांक कर देखें, कहीं हमारी दशा ठीक उन पक्षियों जैसी तो नहीं हो गई! हम अनगिनत विकारों के 'जाल' में फंसे हुए हैं, मगर दूसरों को ऐसे उपदेश कर रहे हैं जैसे हम पर इनका कोई प्रभाव ही न हो।

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥
सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥
आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥
कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥

गुरु पातशाह का पावन फरमान है कि गुरु का **'शबद'** बेशकीमती रत्न है, जिसकी बरकतों से (हृदय-घर) में नाम-हीरे जड़े रहते हैं। गुरु का **'शबद'** रत्न के समान अनमोल है, जिसके साथ अगर एक बार हृदय का जुड़ाव हो जाए तो यह सदा के लिए प्रभु-चरणों में लीन रहेगा अर्थात् इसका सदीवी जुड़ाव प्रभु-सिमरन में हो जाएगा। गुरु-शबद-रत्न सदृश्य अमूल्य है। सच्चे प्रभु ने अगर एक बार **'शबद'** से मेल करवा दिया अर्थात् **'शबद'** से प्रेम-भाव पैदा करवा दिया तो यह मन सदा के लिए गुरु-शबद में ही लीन रहेगा। प्रभु आप ही नाम-हीरा है, आप ही शबद-रत्न (पावन उपदेश) है, पर यह समझ उसी को ही होती है जिसे प्रभु आप इसकी समझ बख्शता है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि गुरु-शबद अर्थात् गुरु का पावन उपदेश रत्न के समान अमूल्य है, जिसकी बरकतों की बदौलत नाम-हीरा हृदय-घर में जुड़ जाता है अर्थात् प्रभु-नाम के अमूल्य रत्नों से सुसज्जित हो जाता है।

गुरु के **'शबद'** को जिसने एकाग्रता से मन में बसा लिया उसकी बुद्धि निर्मल हो जाती है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ *(पन्ना २)*

जिस पर ईश्वर की अपार कृपा होती है उसे जीवन में पूर्ण गुरु मिल जाता है और पूर्ण गुरु की कृपा से सर्वत्र में बसता वह परमेश्वर मिल जाता है अर्थात् प्रकृति के कण-कण में तथा प्रत्येक जीव में वह परमेश्वर ही समाया हुआ है। यह विश्वास गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलकर ही होता है, यथा गुरबाणी आशयानुसार भक्त नामदेव जी की पावन बाणी हमें दिशा देती है:

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥ *(पन्ना ९८८)*

जब गुरु की एक सीख (शिक्षा) पर भी अमल कर लिया जाता है तो यह चित्त उस सच्चे परवरदिगार के गहरे तथा सदा कायम रहने वाले पक्के रंग में रंग जाता है, फिर उस पर किसी तरह के दुनियावी मोह-माया के झूठे रंग अपना प्रभाव नहीं डाल सकते, जैसा कि गुरबाणी का पावन संदेश है:

तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥रहाउ॥
साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥
जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥
मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥
आवा गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥
हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥
गुर बचनी फलु पाइआ सह के अंम्रित बोला ॥
नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥
हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥
(पन्ना ७२९)

अकाल पुरख की रहमत से जिस भाग्यशाली को पूर्ण गुरु मिलता है और गुरु-कृपा से जो गुरु-शबद की कमाई करते हैं अर्थात् गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलते हैं वही धन्य हैं। उनका इस जगत में आना सफल है तथा वही प्रभु-रंग में अपने हृदय को रंग कर आत्मिक आनंद प्राप्त करते हैं।

गुरु-उपमा : १५

भाई गुरदास जी की पांचवीं वार

*-प्रो बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा**

भाई गुरदास जी को सिक्ख धर्म के प्रथम व्याख्याकार कहा जाता है। भाई साहिब ने अपनी वारों और कबित्त सवैयों के द्वारा गुरमति के मूल सिद्धांतों, धारणाओं, विचारधारा और संस्थाओं की व्याख्या जिस सूक्ष्मता के साथ की है अन्य कोई भी ऐसी व्याख्या प्राप्त नहीं है। यह व्याख्या चाहे काव्य रूप में ही है परंतु साधारण बुद्धि के धारक पाठक को यह सहज-भाव ही समझ आ जाती है। गुरबाणी का मूल प्रयोजन मनुष्य के साथ संबंधित है। मनुष्य अपने मूल को पहचानने का प्रयत्न नहीं करता जिस कारण वह अपने मूल से टूट जाता है। यही टूटना या जुदा होना *"किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि"* के प्रश्न द्वारा मनुष्य के सामने उत्पन्न होता है। मनुष्य ने इस जन्म का यह लाभ लेना था कि वह अकाल पुरख के साथ एकरूपता के लिए प्रयत्न करे परंतु वह तो निम्न स्तर के कामों में उलझ कर रह गया। गुरबाणी की इस उपलक्ष्य में सीख तो यह थी:

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥
(पन्ना ४३)

मनुष्य का उद्देश्य एक अच्छा आदर्श माडल बन कर जन्म-मरण से छुटकारा पाना था, एक अच्छे समाज का सृजक बनना था परंतु वह तो धन-दौलत, राज-भाग के पीछे भागा फिरता है। यदि सब कुछ प्राप्त हो जाता है तो अहंकारग्रस्त रहता है, यदि कुछ खो जाता है तो रोना-धोना शुरू कर देता है :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥रहाउ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥ (पन्ना ४८७)

गुरबाणी में मनुष्य के स्वभाव, व्यवहार और लक्षणों के कारण उसको मुख्यतः दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। पहली श्रेणी का प्रतिनिधि वह व्यक्ति है जो अपने सामने सदैव गुरु को मुख्य रखता है, उसकी आज्ञानुसार जीवन-कार्य करता है, भय तथा भाउ में रहकर गुरु की शिक्षानुसार मानव-जीवन का लाभ लेने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है। गुरबाणी में ऐसे आदर्श माडल को चितवन किया गया है। इसके प्रतिकूल दूसरा मनमुख है जो गुरु की मति लेने की जगह मन की मति लेकर मनमतियां करता फिरता है। गुरबाणी में गुरमुखों तथा मनमुखों के स्वभाव, गुणों और कार्यों का प्रायः वर्णन हुआ है। पांचवें सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी के पावन वचन गुरमुख की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं :

कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥
कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥
कउणु सु गिरही कउणु उदासी
कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥१॥
किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥
किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥
कउण करम कउण निहकरमा
कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥२॥
कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।*

कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥
किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै
इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥३॥
कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥
कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥
कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआए
किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥४॥
गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥
गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥
धंनु गिरही उदासी गुरमुखि
गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥५॥
हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥
गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥
गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा
गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥६॥
गुरमुखि सुखीआ गुरमुखि दुखीआ ॥
गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥
गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै
गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥७॥
गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥
गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥
गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए
गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥८॥
सगली बणत बणाई आपे ॥
आपे करे कराए थापे ॥
इकसु ते होइओ अनंता नानक
एकसु माहि समाए जीउ ॥९॥ *(पन्ना १३१)*

भाई गुरदास जी की वारों में गुरमुख और मनमुख के संबंध में व्याख्या बहुत ही विस्तार के साथ हुई मिलती है। पांचवीं वार का मूल विषय गुरमुख के स्वरूप की व्याख्या ही है। इसमें गुरमुख के लक्षणों को अलग-अलग दृष्टांतों के द्वारा सुंदरता से वर्णन किया गया है। गुरमुख और मनमुख की परस्पर तुलना भी की है। पांचवीं वार की २१ पउड़ियां हैं और प्रत्येक पउड़ी ७ पंक्तियों की है।

पांचवीं वार की पहली पउड़ी में गुरमुख के लक्षणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि गुरमुख की संगत भले पुरुषों की संगत होती है; वह किसी अन्य के साथ मिलकर कुसंगत नहीं बनाता। गुरमुख का पंथ विलक्षण और क्रिया-कर्म रहित तथा सुगम है, जबकि दूसरी ओर योगियों के बारह पंथ हैं जिनमें कई प्रकार के हठ-योग, क्रिया-कर्म, कर्मकांड आदि होते हैं।

परंतु गुरमुख उनमें फंसता नहीं है। गुरमुख वर्ण-अवर्ण भाव जात-पात के भेद से दूर होता है तथा वह रस की तरह अभेद हो जाता है। गुरमुख की विचारधारा केवल गुरु की मति को देखना होता है और वह छः दर्शनों (शांख, योग, वेदांत, विशेशक, न्याय, मीमांसा) का जो सिद्धांत स्थापित है और द्वेत भावना की आग में नहीं जलता। शबद ही उसकी कमाई है और भक्ति की खुशी में ही सदैव मस्त रहता है :

गुरमुखि होवै साधसंगु होरतु संगि कुसंगि न रचै।
गुरमुखि पंथु सुहेलड़ा बारह पंथ न खेचल खचै।
गुरमुखि वरन अवरन होइ रंग सुरंगु तंबोल परचै।
गुरमुखि दरसनु देखणा छिअ दरसन परसण न सरचै।
गुरमुखि निहचल मति है दूजै भाइ लुभाइ न पचै।
गुरमुखि सबदु कमावणा पैरी पै रहरासि न हचै।
गुरमुखि भाइ भगति चहमचै ॥१॥

गुरमुख के अन्य लक्षण बयान करते हुए दूसरी पउड़ी में बताया है कि उसके मन में दुविधापन कभी नहीं आता। वह अपना आपा 'हउं' गंवा कर जीवन-मुक्त हो जाता है। उसके हृदय में क्रोध आदि नहीं होता है। वह गुरु के उपदेश को धारण करके विकारी शक्तियों के

कठिन किले को जीत लेता है। वह अपने आप को संगत की चरण-धूल बना लेता है। इस संसार को नश्वर समझते हुए एक मेहमान की तरह पूजनीक होकर रहता है। गुरसिक्खों की सेवा ही उसके लिए मुख्य होती है और गुरसिक्ख उसके पिता, माता, भाई और मित्र की तरह होते हैं। बुरी मति, द्वंद आदि को दूर करते हुए गुरु-शबद के साथ सुरति तथा मन को परिपक्व रूप में जोड़ लेता है और झूठ, कुबुद्धि आदि सभी बुरी आदतों तथा खोटे कामों को छोड़ देता है:

गुरमुखि इकु अराधणा इकु मन होइ न होइ दुचिता।
गुरमुखि आपु गवाइआ जीवनु मुकति न तामस पिता।
गुर उपदेसु अवेसु करि सणु दूता विखड़ा गडु जिता।
पैरी पै पा खाकु होइ पाहुनड़ा जगि होइ अथिता।
गुरमुखि सेवा गुरसिखा गुरसिख मा पिउ भाई मिता।
दुरमति दुबिधा दूरि करि गुरमति सबद सुरति मनु सिता।
छडि कुफकडु कूडु कुधिता ॥२॥

तीसरी पउड़ी में सहचारियों भाव संगी-साथियों के दृष्टांत के द्वारा गुरमुख के बारे में व्याख्या करते हुए लिखा है कि जैसे चारों वर्ण अपना कुल-धर्म निभाते हैं, दर्शन तथा शास्त्रों की मति लेने वाले अपने-अपने दर्शन के अनुसार कर्म करते हैं, नौकर केवल अपने मालिक को ही सत्कार देता है, व्यापारी व्यापार करते हुए अपने वर्ग में ही व्यापार करते हैं, किसान केवल अपने खेतों को बोते हैं। कारखाने के कारीगर साथी कारीगर के साथ प्यार-भावना रखते हैं, इसी तरह गुरमुख भी केवल गुरसिक्ख की संगत करते हैं:

अपणे अपणे वरन विचि चारि वरन कुल धरम धरंदे।
छिअ दरसन छिअ सासत्रा गुर गुरमति खटु करम करंदे।
अपणे अपणे साहिबै चाकर जाइ जुहार जुड़ंदे।
अपणे अपणे वणज विचि वापारी वापार मचंदे।
अपणे अपणे खेत विचि बीउ सभै किरसाणि बीजंदे।
कारीगरि कारीगरा कारिखाने विचि जाइ मिलंदे।
साधसंगति गुरसिख पुजंदे ॥३॥

सहचारियों के दृष्टांत के द्वारा गुरसिक्ख तथा संगत की महिमा की और आगे व्याख्या करते हुए चौथी पउड़ी में वर्णन है कि जैसे नशेड़ी नशेड़ियों में और सोफी (नशों के सेवन से परहेज करने वाला) सोफियों के संग में खुश रहता है, जूआ खेलने वाला जुआरियों तक, विकारी बुरे लोगों तक पहुंच रखता है; जैसे चोर की चोरों के साथ सांझ और जैसे ठग, ठगों के साथ मिलकर ठगते हैं; जिस प्रकार मश्करी करने वाले मश्करों के साथ तथा चुगली करने वाले चुगलखोरों के साथ, जो तैरना नहीं जानते वे न तैर सकने वालों के साथ मिल कर चलते हैं; जैसे दुखी लोग अपने जैसे दुखियों के साथ मिल कर अपना दुख रोते हैं इसी प्रकार गुरमुख गुरसिक्खों की संगत में रहते हैं :

अमली रचनि अमलीआ सोफी सोफी मेलु करंदे।
जूआरी जूआरीआ वेकरमी वेकरम रचंदे।
चोरा चोरा पिरहड़ी ठग ठग मिलि देस ठगंदे।
मसकरिआ मिलि मसकरे चुगला चुगल उमाहि मिलंदे।
मनतारू मनतारूआं तारू तारू तार तरंदे।
दुखिआरे दुखिआरिआं मिलि मिलि अपणे दुख रुवंदे।
साधसंगति गुरसिखु वसंदे ॥४॥

अपने व्यवसायों के कारण, संसार में बहुत प्रकार के लोग रहते हैं। मनुष्य अपने व्यवसाय

के नाम से जाना जाता है और वह इसमें ही प्रफुल्लित होने की लोचा रखता है, परंतु गुरमुख का इनसे अंतर है। पांचवीं पउड़ी में इनकी चर्चा करते हुए उल्लेख हुआ है कि अपने आप को कोई पंडित, कोई ज्योतिषि, कोई प्रधान, चौधरी आदि कहलवाता है; कोई बजाज (कपड़ा बेचने वाला), कोई सराफ, कोई जौहरी (हीरों का व्यापार करने वाला) कहलवाता है। कोई पंसारी, कोई प्रचून बेचने वाला कहलवाता है, कोई दलाली (**trading**) करके कमाता है। इसी प्रकार संसार में अपने कामों के कारण हजारों-लाखों जातियों के नाम गिनाये जाते हैं परंतु गुरसिक्ख साधसंगति में मिलकर आशाओं-निराशाओं से ऊपर उठ जाता है और अपनी सुरति की लिव गुरु-शबद में लगा कर 'अलखु' (प्रभु) का थाह अथवा हुकम प्राप्त करता है :

कोई पंडितु जोतिकी को पाधा को वैदु सदाए।
कोई राजा राउ को को महता चउधरी अखाए।
कोई बजाजु सराफु को को जउहरी जड़ाउ जड़ाए।
पासारी परचूनीआ कोई दलाली किरसि कमाए।
जाति सनात सहंस लख किरति विरति करि नाउ गणाए।
साधसंगति गुरसिखि मिलि आसा विचि निरासु वलाए।
सबदु सुरति लिव अलखु लखाए ॥५॥

छठी पउड़ी के अनुसार धार्मिक साधनाओं के कारण भी संसार में कई तरह के पंथ (लोग) मिलते हैं परंतु गुरमुख उनसे न्यारा है, जैसे जती-सती, लम्बी आयु वाले योगी, साधक, सिध, नाथ आदि गुरु तथा चेले, कई प्रकार के देवी-देवतागण, ऋषि, मुनि, भैरउ, खेतरपाल (भूत जाति के लोग), गण, गंधर्व (स्वर्ग के गवैये), अप्सरा (सुंदर स्त्रियां), किन्नर, जच्छ, राक्षस, दैत्य आदि हैं। ये सभी अपने आप को एक दूसरे से ऊंचा समझते हुए हउमै के अंदर रहते हैं। दूसरी ओर गुरमुख सतिसंगत में रहकर आनंद लेते हैं तथा एक-मन, एक-चित्त होकर गुरु की मति लेकर आपा-भाव (हउमै) गंवा कर खुश रहते हैं :

जती सती चिरु जीवणे साधिक सिध नाथ गुर चेले।
देवी देव रिखीसुरा भैरउ खेत्रपाल बहु मेले।
गण गंधरब अपछरा किंनर जछ चलित बहु खेले।
राखस दानों दैत लख अंदरि पूजा भाउ दुहेले।
हउमै अंदरि सभ को गुरमुखि साधसंगति रस केले।
इक मन इकु अराधणा गुरमति आपु गवाइ सुहेले।
चलणु जाणि पए सिरि तेले ॥६॥

संसार में लोग कई प्रकार के कर्मकांड कर रहे हैं। कोई जत-सत निभा रहा है, कोई संयमी (भूखा रहने वाला) है, कोई यज्ञ, कठिन तप, दान-पुन्य कर रहा है, कोई अलग-अलग रिद्धियां-सिद्धियां कर रहा है, कोई नव निधियों के लिए कई प्रकार के तंत्र, मंत्र, नाटक आदि का पाखंड कर उनमें फंसा पड़ा है, कोई पूजक, कुंभक, चेचक (श्वास चढ़ाना, रोकना तथा उतारना) कर्म कर रहा है; नेती-पोती (निवाली) भोइ अंगम कर्म कर रहा है; कोई विभिन्न प्रकार के आसन लगा कर हठ निगह के कौतुक किये जा रहा है। कई पारस, मणि, रासायनों के द्वारा करामातों के काले अंधकार में फंसे हुए हैं। कोई वर-श्राप की शक्ति प्राप्त करने के लिए अग्नि-पूजा, व्रत आदि कर रहा है, परंतु सतसंगति में केवल गुरु-शबद में जुड़ने के बिना कोई अन्य बात नहीं होती :

जत सत संजम होम जग जपु तपु दान पुंन बहुतेरे।

रिधि सिधि निधि पाखंड बहु तंत्र मंत्र नाटक अगलेरे।
वीराराधण जोगणी मढ़ी मसाण विडाण घनेरे।
पूरक कुंभक रेचका निवली करम भुइअंगम घेरे।
सिधासण परचे घणे हठ निग्रह कउतक लख हेरे।
पारस मणी रसाइणा करामात कालख आन्हेरे।
पूजा वरत उपारणे वर सराप सिव सकति लवेरे।
साधसंगति गुर सबद विणु थाउ न पाइनि भले भलेरे।
कूड़ इक गंढी सउ फेरे ॥७॥

समाज में धार्मिक और सामाजिक तौर पर मनुष्य कई प्रकार के शगुनों-अपशगुनों के वहम-भ्रम में फंसा हुआ है। दुविधा में फंसे कई प्रकार के लोग मिलते हैं परंतु गुरमुख ऐसे वहमों-भ्रमों में नहीं फंसता। आठवीं पउड़ी में शगुनों-अपशगुनों की व्यर्थता और गुरमुखता की अर्थपूर्णता की बात कही गई है कि कई मनुष्य शगुनों-अपशगुनों, नौ ग्रहों और बारह राशियों में विश्वास रखते हैं। स्त्रियों ने टोनों, औंसियों तथा निंदा-चुगलियों का पसारा किया हुआ है। कई गधे के हिनहिनाने, बिल्लियों की म्याऊं-म्याऊं तथा रास्ता काटने, कुत्ते के भौंकने, चीलों की चीं-चीं, सोनचिड़िया या मैना की आवाजों और गीदड़ के हौंकने तथा वावरोले अथवा गोलचक्री हवा को अशुभ मानते हैं। कई स्त्रियां एवं पुरुष पानी, अग्नि को स्वप्न में देखने, छींकने और हिचकी लेने को अच्छा या बुरा समझते हैं। इसी प्रकार थितियों/तिथियों, दिनों, वारों, भद्रा के संशय, चारों दिशाओं आदि संबंधी हजारों भ्रमों में लोग फंसे हुए हैं। वेश्या कई प्रकार के छल-कपट करके अपने पति को अपने नेक होने का विश्वास बंधाती है। उपर्युक्त सभी प्रकार के भ्रम तथा कर्मकांड अर्थहीन हैं परंतु दूसरी ओर गुरमुखता का सुख मनुष्य का पार उतारा अथवा कल्याण कर देता है :

सउण सगुन वीचारणे नउ ग्रिह बारह रासि वीचारा।
कामण टूणे अउसीआ कणसोई पासार पसारा।
गदहु कुते बिलीआ इल मलाली गिदड़ छारा।
नारि पुरखु पाणी अगनि छिक पद हिडकी वरतारा।
थिति वार भद्रा भरम दिसासूल सहसा सैसारा।
वलछल करि विसवास लख बहु चुखी किउ रवै भतारा।
गुरमुखि सुख फलु पार उतारा ॥८॥

गुरमुखि का जो मार्ग होता है उसकी विशेषता यह है कि यह भ्रम तथा छल-कपट से रहित तथा पावन एवं पवित्र होता है। गुरमुख-मार्ग की पवित्रता के बारे में पांचवीं वार की नौवीं पउड़ी में व्याख्या की गई है कि नदियां तथा नाले आदि गंगा नदी के साथ मिल कर पवित्र गंगोतरी बन जाते हैं, आठ धातुएं पारस के साथ मिलकर सोना बन जाती हैं, चंदन वृक्ष की सुगंध से समस्त वन सुगंधित हो जाता है। छः ऋतुओं, बारह महीनों को बनाने वाला सूरज एक ही है, अन्य कोई नहीं। चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), छः दर्शन, योगियों के बारह पंथ सभी घूमते फिरते हैं परंतु गुरमुख की विचारधारा सतसंगति है। गुरमुख के मार्ग पर चलने से सभी प्रकार की दुविधा समाप्त हो जाती है तथा केवल मन-चित्त के साथ परमात्मा की आराधना की जाती है। गुरमुख अन्य किसी भ्रम-जाल में नहीं फंसता :

नदीआ नाले वाहड़े गंगि संगि गंगोदक होई।
असट धातु इक धातु होइ पारस परसै कंचनु सोई।
चंदन वासु वणासपति अफल सफल कर चंदनु

गोई।
छिअ रुति बारह माह करि सुझै सुझ न दूजा कोई।
चारि वरनि छिअ दरसना बारह वाट भवै सभु लोई।
गुरमुखि दरसनु साधसंगु गुरमुखि मारगि दुबिधा खोई।
इक मनि इकु अराधनि ओई ॥९॥

गुरमुख के लिए उसका मार्ग जीवन में कुल धर्म के रिश्तों से ऊंचा होता है। पारिवारिक रिश्तों में प्रमुख ननिहाल, ददिहाल तथा ससुराल के रिश्ते होते हैं। इनके अतिरिक्त कुल धर्म में विभिन्न तरह की कूड़ी रीतियों व रिवाजों, तथाकथित आचारों में कई लोग भटकते फिरते हैं। इसके अतिरिक्त कुल धर्म निभाने वालों में कई जनेऊ तथा सूतकों-पातकों के समय बिछौनों का काम करते हैं। इसी तरह कई जठेरों में विश्वास करते हैं, सतियों और सौंतनों का अलग धर्म पर विश्वास है, कई तालाबों तथा तलईया की पूजा करते हैं परंतु वे सब लोग सतिसंगत और गुरु-शबद की सोझी के बिना जन्म-मरण के चक्र में पड़े हुए हैं, जबकि गुरु-कृपा के पात्र गुरमुख उससे ऊंचे हैं, हीरों के हार में पिरोये हुओं की तरह हैं :

नानक दादक साहुरै विरतीसुर लगाइत होए।
जंमणि भदणि मंगणै मरणै परणे करदे ढोए।
रीती रूड़ी कुल धरम चजु अचार वीचार विखोए।
करि करतूति कुसूत विचि पाइ दुलीचे गैण चंदोए।
जोध जठेरे मंनीअनि सतीआं सउत टोभड़ी टोए।
साधसंगति गुर सबद विणु मरि मरि जंमनि दई विगोए।
गुरमुखि हीरे हारि परोए ॥१०॥

मनुष्य संसार में धन-दौलत, राज-भाग, ताकत के लिए मारा-मारी करता फिरता है। देश के अंदर राजमुखी सर्वाधिक ताकतवर होता है परंतु ग्यारहवीं पउड़ी के अनुसार गुरमुख उससे भी बड़ा होता है। इसकी व्याख्या करते हुए इस प्रकार बयान किया गया है कि लश्कर के अंदर सर्वाधिक सत्कार लेने वाले शहजादे राज-कुंवर होते हैं, वे बादशाह के आगे होते हैं। उनके पीछे शेष वजीर, सेनापति और पैदल सेना होती है। उनके पीछे मुजरे होते हैं। कई खिदमतगार बादशाह से मोहरें लेकर तारीफ करते नहीं थकते परंतु इन सभी की दरगाह अंदर खवारी ही होती है, क्योंकि वहां तो सहारा उनको मिलता है जो सेवा-भावना के साथ अच्छी कार करते हैं। पातशाहों के पातशाह का सदका गुरु की कृपा के द्वारा गुरमुख सभी जगह बरतता है और वे हर समय सुहेले भाव सखी रहते हैं :

लसकर अंदरि लाडुले पातिसाहा जाए साहजादे।
पातिसाह अगै चड़नि पिछै सभ उमराउ पिआदे।
बणि बणि आवणि ताइफे ओइ सहजादे साद मुरादे।
खिजमतिगार वडीरीअनि दरगह होनि खुआर कुवादे।
अगै ढोई से लहनि सेवा अंदरि कार कुसादे।
पातिसाहां पातिसाहु सो गुरमुखि वरतै गुर परसादे।
साह सुहेले आदि जुगादे ॥११॥

गुरमुख की प्रतिभा बहुत बड़ी है। इसकी व्याख्या बारहवीं पउड़ी से भली-भांति स्पष्ट हो जाती है। इसमें बताया गया है कि जैसे अंधकार में लाखों तारे टिमटिमाते हैं परंतु सूर्य के सामने सभी धीमे पड़ जाते हैं, जंगल में जब शेर दहाड़ता है तो शेष जानवर भाग जाते हैं, कोई भी खड़ा नहीं रहता; जैसे गरड़ को देख कर लाखों विषैले बिसियर नाग आदि सभी भाग कर

बिलों में घुस जाते हैं; जैसे बाज को देखकर पक्षियों को उसके नजदीक जाने का साहस नहीं होता, उनको छुपने के लिए स्थान नहीं मिलता परंतु जग में अच्छा एवं निरोग विचार यही है कि सतिसंगत में बैठकर की गई गूढ़ विचार से खोटी मति दूर हो जाती है, सतिगुरों के उपदेश से दुविधा दूर हो जाती है तथा विकार समाप्त हो जाते हैं। इस ज्ञान वाली बात को केवल गुरमुख ही जानते हैं और वे आगे से औरों को समझाने के भी सक्षम हो जाते हैं :

तारे लख अन्हेर विचि चढ़िऐ सुझि न सुझै कोई।
सीहि बुके मिरगावली भंनी जाए न आइ खड़ोई।
बिसीअर गरड़ै डिठिआ खुडी वड़िदे लख पलोई।
पंखेरू साहबाज देखि ढुकि न हंघनि मिलै न ढोई।
चार वीचार संसार विचि साधसंगति मिलि दुरमति खोई।
सतिगुर सचा पातिसाहु दुबिधा मारि मवासा गोई।
गुरमुखि जाता जाणु जणोई ॥१२॥

श्री गुरु नानक देव जी ने निरंकारी हुक्मानुसार जिस निर्मल धर्म की स्थापना की इसको गुरमुख गाडी-राह कहा जाता है। गुरमुख गाडी-राह की स्थापना उद्देश्यपूर्ण थी और इसकी अलग विशेषताओं का जिक्र करते हुए कहा गया है कि सतिगुर सच्चे पातशाह भाव श्री गुरु नानक देव जी ने गुरमुखों के चलने के लिए सुगम मार्ग की स्थापना की। उन्होंने पांच विकारों रूपी भूतों को वश में करके खोटी मति की द्वैत भावना का नामो-निशान ही समाप्त कर दिया। इस गाडी-राह पर चलने वाले गुरसिक्ख गुरु के शबद को सुरति में रखकर लिव लगाते हैं जिस कारण यमों का मसूलिया नजदीक नहीं आता। सच्चे रास्ते से भूले-भटके एवं विमुख हुए लोग योगियों के बारह पंथों के नियमों पर चलकर ख्वार हो रहे हैं परंतु जो गुरसिक्ख बनकर साधसंगत में आने लग जाता है, ज्ञान उसके लिए सतिसंगत सचखंड का रूप बन जाता है। सतिसंगत में प्रभु का भय, भाउ (प्रेम) तथा भक्ति-भाव का उपदेश मिलता है और नाम-दान, स्नान के गुण दृढ़ होते हैं। इन गुणों के कारण ही वह कमल की तरह जल से निर्लेप रहता है। इस तरह गुरमुख गाडी-राह पर चलने वाले आपा-भाव को समाप्त करके सहज पद प्राप्त कर लेते हैं परंतु इस अवस्था के बारे में किसी को पता नहीं देते :

सतिगुर सचा पातिसाहु गुरमुखि गाडी राहु चलाइआ।
पंजि दूति करि भूत वसि दुरमति दूजा भाउ मिटाइआ।
सबद सुरति लिवि चलणा जमु जागाती नेड़ि न आइआ।
बेमुखि बारह वाट करि साधसंगति सचु खंडु वसाइआ।
भाउ भगति कउ मंत्रु दे नामु दानु इसनानु द्रिड़ाइआ।
जिउ जल अंदरि कमल है माइआ विचि उदासु रहाइआ।
आपु गवाइ न आपु गणाइआ ॥१३॥

गुरमुख सदैव आनंद में खिला रहता है। जैसे संसार में राजा के नौकर-चाकर राजा की महिमा के बारे में दुहाई देते रहते हैं; समाज में बच्चे के जन्म के समय की खुशी में गीत गाते तथा ननिहाल-ददिहाल बधाइयां लेते हैं; विवाह के समय दोनों ओर से सिठणियां दी जाती हैं और बाजे बजाये जाते हैं, जैसे मृत्यु के समय रोने, पीटने, वैणों और अलाहणियों की ऊंची आवाजें आती हैं परंतु सतिसंगत में सदैव ही

सच्चा आनंद बना रहता है जिस कारण गुरमुख सतिसंगत में ही जुड़ते हैं तथा शबद में अपनी सुरति जोड़ कर खुशी और गमी दोनों अवस्थाओं से दूर रहते हैं। गुरमुख की आत्मा वेदों-कतेबों में खचित नहीं होती तथा मरने से निर्लेप रहती है। वे संसार की सब आशाओं में निराश अथवा निर्लेप रहते हैं। १४वीं पउड़ी में उपर्युक्त संबंधी वर्णन इस प्रकार हुआ है :

राजा परजा होइ कै चाकर कूकर देसि दुहाई।
जंमदिआ रुणिझुंझणा नानक दादक होइ वधाई।
वीवाहा नो सिठणीआ दुही वली दुइ तूर वजाई।
रोवणु पिटणु मुइआ नो वैणु अलाहणि धुम धुमाई।
साधसंगति सचु सोहिला गुरमुखि साधसंगति लिव लाई।
बेद कतेबहु बाहरा जंमणि मरणि अलिपतु रहाई।
आसा विचि निरासु वलाई ॥१४॥

१५वीं पउड़ी में गुरमुख और मनमुख की दशा एक साथ बयान की है। इसमें बताया है कि गुरमुख अपने गुरमति गाडी-राह पर चलकर बहुत सुखी होते हैं तथा मनमुख अन्य स्थानों पर भटकते एवं ख्वार होते रहते हैं। गुरमुख की संगत दूसरे सिक्ख को भी पार उतारती है परंतु मन तथा मति के पीछे चलने वाले चिंता, फिक्रों तथा भ्रमों के भवजल में ही खचित हो जाते हैं। गुरमुख की संगत तथा उपदेश द्वारा जिज्ञासु जीवन-मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। दूसरी ओर मनमुख जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहता है। गुरमुख अपनी सच्ची व निर्मल किरत करके सुख-फल प्राप्त करता है और मनमुख को फल दुखों के रूप में मिलता है। गुरमुख निरंकार के घर बंधन-मुक्त होकर जाते हैं। दूसरी ओर मनमुख यमराज के दंड भुगतते हैं। गुरमुख आपा-भाव गंवाकर शुभ गुणों वाले हो जाते हैं तथा मनमुख अहंकार एवं हउमै की अग्नि में जलते रहते हैं। इस प्रकार प्रभु की बंदगी में बहुत चुनिंदा व्यक्ति ही लगते हैं:

गुरमुखि पंथु सुहेलड़ा मनमुख बारह वाट फिरंदे।
गुरमुखि पारि लंघाइदा मनमुख भवजल विचि डुबंदे।
गुरमुखि जीवन मुकति करि मनमुख फिरि फिरि जनमि मरंदे।
गुरमुखि सुख फल पाइदे मनमुखि दुख फलु दुख लहंदे।
गुरमुखि दरगह सुरख रू मनमुखि जम पुरि डंडु सहंदे।
गुरमुखि आपु गवाइआ मनमुखि हउमै अगनि जलंदे।
बंदी अंदरि विरले बंदे ॥१५॥

सुहागिन स्त्री अच्छे भाग्यों वाली मानी जाती है। १६वीं पउड़ी में एक गुरसिक्ख की तुलना सच्ची सुहागिन के साथ की गई है। इसमें बताया गया है कि जैसे एक स्त्री माता-पिता के घर में माता-पिता द्वारा बहुत लाड-प्यार के साथ पली, अच्छी तथा प्रिय होती है, जैसे वह भाइयों की अच्छी बहिन होती है तथा ननिहला-ददिहाल परिवारों में सुख प्राप्त करती है, माता-पिता लाखों रुपये व्यय करके विवाह करते हैं, आभूषण तथा दहेज में भारी साजो-सामान देते हैं, ससुराल में वह स्त्री अपने गुणों के कारण अच्छा सत्कार प्राप्त करती है तथा सौभाग्यशाली मानी जाती है, जिस प्रकार वह पति के संग-साथ में मौज मनाती है तथा सुख लेती है, छत्तीस प्रकार के भोजन खाती है और आभूषणों के साथ श्रृंगारी रहती है, ज्ञानी लोगों के अनुसार जिस प्रकार स्त्री 'अरध सरीरी' है और इसके साथ ही आदमी भी मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार गुरमुख व्यक्ति भी पतिव्रत स्त्री की तरह ही आत्मिक सुख लेते हैं और हर जगह शोभा पाते हैं :

पेवकड़ै घरि लाडुली माऊ पीऊ खरी पिआरी।
विचि भिरावां भैनड़ी नानक दादक सपरवारी।
लखां खरच विआहीऐ गहणे दाजु साजु अति भारी।
साहुरड़ै घरि मंनीऐ सणखती परवार सधारी।
सुख माणै पिरु सेजड़ी छतीह भोजन सदा सीगारी।
लोक वेद गुणु गिआन विचि अरध सरीरी मोख दुआरी।
गुरमुखि सुख फल निहचउ नारी ॥१६॥

जैसे १६वीं पउड़ी में सुहागिन के उदाहरण से गुरमुख के जीवन को सत्कारयोग्य बताया है वैसे ही १७वीं पउड़ी में वेश्या का दृष्टांत देकर मनमुख की दशा को भी बयान करते हुए बताया गया है कि जैसे बहुत मित्रों वाली, वेश्या सभी बुरे पाप कमाती है, वह लोक तथा समाज की रीति से उलट जाकर काम करने वाली अपनी सभी रिश्तेदारियों जैसे ननिहाल, ददिहाल, ससुराल आदि की बदनामी कराती है; जैसे वह स्वयं तो विषय-विकार करते हुए काम-नदी में डूबी होती है, साथ-संग करने वाले को भी डुबो देती है' जैसे वह विष को मीठा जहर समझ कर खाये-पचाये जाती है, जैसे शिकारी अंडहेड़े के साथ मृगों को फंसाता है तथा जैसे दीये की लाट पतंगे को आकर्षित करती है, वेश्या भी हार-श्रृंगार करके पुरुष को अपनी तरफ खींचती है, यह पाप करके वह लोक तथा परलोक में मुंह काला कराती है, इसी प्रकार की दशा मनमुख की है। वह भी अन्य दुष्टों की संगत में रहकर मुंह काला कराता, स्वयं डूबता तथा औरों को डुबोता है। जैसे वेश्या का बच्चा पिता की तरफ से बेनाम ही रहता है वैसे ही मनमुख व्यक्ति की भी कोई जगह नहीं मानी जाती :

जिउ बहु मिती वेसुआ सभि कुलखण पाप कमावै।
लोकहु देसहु बाहरी तिहु पखां नो अउलंगु लावै।
डुबी डोबै होरना महुरा मिठा होइ पचावै।
घंडा हेड़ा मिरग जिउ दीपक होइ पतंग जलावै।
दुही सराई जरद रू पथर बेड़ी पूर डुबावै।
मनमुख मनु अठ खंड होइ दुसटा संगति भरमि भुलावै।
वेसुआ पुतु निनाउ सदावै ॥१७॥

१८वीं पउड़ी में सतिसंगत तथा गुरु-शबद से विहीन व्यक्ति के बचपन, जवानी और वृद्धावस्था में (भटकते हुए मानव-जन्म का वक्त हाथ न आने के बारे में) व्याख्या की गई है। भाई गुरदास जी वर्णन करते हैं कि बचपन के दिनों में मनुष्य को कोई समझ नहीं होती। जब युवा होता है तो वह पराये तन की सुंदरता, पराये धन-दौलत और पराये की निंदा-चुगली में रुचियां लेने लग जाता है। वृद्धावस्था में वह परिवार, बेटियों, बेटों, पौत्रों-पोतियों के बड़े मोह-जाल में फंस जाता है। फिर आगे जाकर वह बलहीन हो जाता है। मति कम हो जाती है, रात के समय बड़बड़ा कर उठता है तथा लोग उसको 'सत्तरिया-बत्तरिया' कहना आरंभ कर देते हैं। फिर शरीर की स्थिति यह हो जाती है कि आंखों से दीखता नहीं, कानों से सुनता नहीं, हाथ-पैर जवाब दे जाते हैं भाव पिंगलों जैसा हो जाता है। उसका शरीर तो थक जाता है परंतु मन अभी भी दसों ओर भागा फिरता है। वह सतिसंगत तथा गुरु-शबद की सोझी के बिना यह मानव-जन्म, सोझी का समय भी गंवा लेता है और पुन: योनियों के चक्र की भटकना में पड़ जाता है :

सुधि न होवै बाल बुधि बालक लीला विचि विहावै।
भर जोबनि भरमाईऐ पर तन धन पर निंद लुभावै।
बिरधि होआ जंजाल विचि महां जालु परवारु

फहावै।
बल हीणा मति हीणु होइ नाउ बहतरिआ बरड़ावै।
अंन्हा बोला पिंगला तनु थका मनु दह दिसु धावै।
साधसंगति गुर सबद विणु लख चउरासीह जूनि भवावै।
अउसरु चूका हथि न आवै ॥१८॥

हंस को पक्षियों में सबसे उत्तम माना जाता है। दूसरी ओर बगुले की उसकी फितरत के कारण निंदा की गई है। गुरबाणी में गुरमुख को हंस और मनमुख को बगुले के रूप में भी बयान किया गया है। दोनों के लक्षण भिन्न-भिन्न हैं। गुरमुख और मनमुख की तुलना अन्य दृष्टांतों से भी की जाती है।

कोयल और कौए, गाय और कुत्ते, वृक्ष, पानी और अग्नि के साथ गुरमुख और मनमुख की तुलना हुई है। १९वीं पउड़ी में इसका जिक्र करते हुए कहा गया है कि जैसे हंस मान सरोवर को नहीं छोड़ता और बगुला बार-बार तालाब पर ही जाता है इसी प्रकार से गुरमुख सतिसंगत में टिके रहते हैं और मनमुख जगह-जगह टक्करें मारते रहते हैं। कोयल केवल आम के वृक्ष पर बैठती है और कौआ हरेक वृक्ष पर उड़ता फिरता है भाव गुरमुख को टिकाव है, मनमुख भटकाव में ही रहता है। कुत्तियों के झुंड नहीं होते और गायें दूध देती, वंश बढ़ाती हैं। वृक्ष सफल है क्योंकि वह निहचल है परंतु मन दहदिस भागा फिरता है। अग्नि का स्वभाव गर्म है और वह ऊंची ऊपर उठती है। जल का स्वभाव शीतल है और वह गहराई की ओर जाता है। मनमुख अग्नि की तरह है और गुरमुख का स्वभाव जल जैसा है। समूचा भाव यह हुआ कि गुरमुख सद्गुण धारण करके उत्तम है और मनमुख विकारों में अपना आपा गंवा लेता है। 'मैं-मेरी' की खोटी आदत से पराजय ही पल्ले पड़ती है :

हंसु न छड्डै मानसर बगुला बहु छपड़ फिरि आवै।
कोइल बोलै अंब वणि वणि वणि काउ कुथाउ सुखावै।
वग न होवनि कुतीआं गाईं गोरसु वंसु वधावै।
सफल बिरख निहचल मती निहफल माणस दह दिसि धावै।
अगि तती जलु सीअला सिरु उचा नीवां दिखलावै।
गुरमुखि आपु गवाइआ मनमुखु मूरखि आपु गणावै।
दूजा भाउ कुदाउ हरावै ॥१९॥

विकार मनुष्य को चिपके हुए हैं। रुचिकर बात यह है कि कई जीवों को एक-एक रोग होता है जिससे उनका नाश हो जाता है जैसे हाथी को काम, मृग को नाद (आवाज), मछली को स्वाद (जीभ का), पतंगे को सुंदरता देखने का, भंवरे को वासना का रोग लगा हुआ है, परंतु मनुष्य को तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पांचों रोग लगे हुए हैं जो उसको कबाड़ा कर देते हैं। इन रोगों के अतिरिक्त डायन रूप आसा-मनसा और हर्ष-शोक के रोग चिपके हुए हैं। मनमुख इनमें घिरा हुआ है परंतु सतिगुरु पातशाह के बताये गाडी-राह पर केवल गुरमुख ही चलते हैं। इस रास्ते पर चलने से सब रोग, विकार भाग जाते हैं। इस तरह गुरमुख जीवन का लाभ प्राप्त करके अपने निज स्वरूप में टिक जाते हैं :

गज म्रिग मीन पतंग अलि इकतु इकतु रोगि पंचदे।
माणस देही पंजि रोग पंजे दूत कुसूतु करंदे।
आसा मनसा डाइणी हरख सोग बहु रोग वधंदे।
मनमुख दूजै भाइ लगि भंभलभूसे खाइ भवंदे।
सतिगुर सचा पातसाह गुरमुखि गाडी राहु चलंदे।

साधसंगति मिलि चलणा भजि गए ठग चोर डरंदे।
लै लाहा निजि घरि निबहंदे ॥२०॥

क्योंकि गुरमुख सतिगुरु की कृपा का सदका ही गुरमुख बनता है, इसलिए २१वीं पउड़ी में सतिगुरु की स्तुति की गई है। जैसे मांझी सब को नदी पार करा देता है, एक देश के भीतर एक बादशाह ही सारे देश को चलाता है; जैसे मोहल्ले में एक प्रहरी ही सारे मोहल्ले की रक्षा करता है शेष सभी धनवान, निर्धन उसके कारण निश्चिंत होकर सो जाते हैं; जैसे विवाह में दूल्हा ही सर्वाधिक आदर-सत्कार प्राप्त करता है; देश की प्रजा में कई धर्मों तथा जातियों के लोग आते हैं परंतु राजा एक ही होता है, इसी प्रकार से सतिगुरु सच्चा पातशाह एक ही होता है। उसकी सतिसंगत है जहां गुरसिक्ख को नीसाण भाव गुरसिक्ख होने का प्रमाण-पत्र मिलता है जिसके साथ वह संसार भवजल को पार कर जाते हैं। भाई गुरदास जी कहते हैं कि जो पुरख सतिगुरु जी का सहारा लेते हैं मैं उन पर बलिहार जाता हूं :

बेड़ी चाड़ि लंघाइदा बाहले पूर माणस मोहाणा।
आगू इकु निबाहिदा लसकर संग साह सुलताणा।
फिरै महलै पाहरू होइ निचिंद सवनि परधाणा।
लाड़ा इकु वीवाहीऐ बाहले जाञीं करि मिहमाणा।
पातिसाहु इकु मुलक विचि होरु प्रजा हिंदू मुसलमाणा।
सतिगुरु सचा पातिसाहु साधसंगति गुरु सबदु नीसाणा।
सतिगुर परणै तिन कुरबाणा ॥२१॥५॥

पांचवीं वार के संबंध में सार रूप में कहा जा सकता है कि इस वार में गुरमुख के ऊंचेपन को दर्शाया गया है जो लोक और परलोक में सदैव ही उत्तम स्थान बनाये रखता है।

कविता

शरद के दोहे

तारांकित नीलाम्बरा, चन्द्रमुखी अभिराम।
नयन-विलोभन आ गई, शरद शर्वरी वाम।१।
निर्मल नभ निष्पंक भू, स्वच्छ सरित्-सर-नीर।
न अति ऊष्ण न अति शीतल, बहता मंद समीर।२।
पंक रहित भूतल हुआ, मुक्त गगन घन भार।
शस्य-श्यामला धरा ने, पहना हीरक हार।३।
कांस पुष्प से धवल भू, चंद्र प्रभा से रात।
पके धान स्वर्णाभ हैं, स्वर्णिम शरद प्रभात।४।
घनावरण लो हट गया, निर्मल है आकाश।
रवि-शशि भू पर कर रहे, अब निर्बाध प्रकाश।५।
हुए अकिंचन श्याम घन, लुटा निखिल जल कोष।
शस्य-सलिल-सम्पन्न भू, हुई उन्हें परितोष।६।
बखर जोत वो भूमि को, करें शस्य सम्पन्न।
पके धान काटें कृषक, लाएं घर नव अन्न।७।
प्रति पदार्थ में प्रकृति के, पावनता परिव्याप्त।
मलिन मनुज मन को हुआ, किन्तु न कुछ भी प्राप्त।८।
नवचेतना कर रही, मानव का जयघोष।
मरी निशाचरता कहां, अक्षय उसका कोष।९।
पुतकर चूने से हुए, धवल धाम अभिराम।
कुटिया की आशा जगी, मिला हाथ को काम।१०।
जगर-मगर दीपावली, डगर-डगर उल्लास।
नगर-नगर घर-घर हुआ, फुलझड़ियों का हास।११।

-डॉ. दादूराम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा बाग, भैरवगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३७

आध्यात्मिक चिंतक एवं सिद्ध-हस्त कवि - कवि रामदास

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विद्या-दरबार में बिना किसी भेदभाव के मात्र विद्वता एवं काव्य-प्रतिभा के आधार पर प्रवेश मिलता था। यही कारण था कि दरबारी कवियों में से अनेक ऐसे थे जो बहुत ही सामान्य पृष्ठभूमि से आये थे। इन कवि-विद्वानों ने मात्र अपनी प्रतिभा के बल पर दशमेश पिता की कृपा प्राप्त की थी। स्वयं महान विद्वान और कवि होने के कारण दशमेश पिता श्रेष्ठ विद्वानों एवं कवियों की गहरी पहचान रखते थे। आपकी सूक्ष्म दृष्टि ने कई प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों को सम्मान प्रदान किया था।

ऐसे ही एक कवि थे--रामदास। कवि रामदास एक अत्यंत ही सामान्य परिवार से संबंध रखते थे, परन्तु उत्कृष्ट प्रतिभावान होने के कारण उन्हें दशमेश पिता के दरबारी कवि बनने का मान प्राप्त हुआ।

बाबा सुमेर सिंघ और ज्ञानी गिआन सिंघ ने कवि रामदास को दशमेश पिता की कवि-सूची में स्थान दिया है। कवि रामदास के जीवन का एक प्रसंग सिक्ख इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण है। कवि ने लालदास 'दरियाई' की जमात के साथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के संग दक्षिण की यात्रा की थी। कवि रामदास दशमेश पिता के साथ-साथ दक्षिण में 'अबिचल नगर' (हजूर साहिब) तक गया था।

श्री हजूर साहिब की यात्रा करने के कारण आपको 'हजूरिया' कहा जाने लगा और इतिहास में आप कवि 'रामदास हजूरिया' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कवि रामदास की रचना बहुत कम मात्रा में उपलब्ध है। प्रो. प्यारा सिंघ पदम ने इनकी एक 'काफी' उद्धृत की है, जिससे स्पष्ट होता है कि ये उच्च कोटि के कवि थे। निश्चित रूप से कवि रामदास ने बहुत-सा काव्य रचा होगा जो संभवत: अनंदपुर साहिब के युद्ध के समय नष्ट हो गया होगा।

कवि रामदास की उपलब्ध एक-मात्र 'काफी' निम्नवत् है :

ने छलि देख जांदा बाला जोबन,
नर फटेसें तलीआं।
जिनहां हरि दा नाम न चेतिआ,
से अधवाटे खलीआं।
उचड़ी माड़ी तूं कढि कसीदा,
छाडि वतन दीआं गलीआं।
इकनी छैलीं जोबन छलिआ,
इक जोबन दीआं छलीआं।
झिलमिलि झिलमिलि झिलमिल झलके,
जिउं चंबे दीआं कलीआं।
रामदास धंन भाग तिनहां दे,
जो हरि सेती रलीआं।

'काफी' से अंदाजा लगाया जा सकता है कि कवि रामदास की भाषा लहिंदी पंजाबी है। कदाचित् वे पश्चिमी पंजाब के मुलतान-साहीवाल इलाके से संबंधित रहे होंगे। आत्मा को स्त्री या प्रेमिका के रूप में और परमात्मा को पति या

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१

प्रेमी के रूप में चित्रित करके 'प्रेम-भक्ति' का निरूपण करना कवि रामदास के गहन एवं सूक्ष्म आध्यात्मिक अनुभव को प्रकट करता है। यही नहीं, कवि रामदास ने जिस प्रकार अलंकारों का प्रयोग किया है, खास तौर से "झिलमिलि झिलमिलि झिलमिल झलके" का अनुप्रास अलंकार, यह सिद्ध करता है कि कवि रामदास उच्च कोटि के कवि थे। इस प्रकार उनकी रचना उच्च आध्यात्मिक अनुभव एवं श्रेष्ठ काव्य-कला का नमूना है।

प्रत्येक दिन को वन-महोत्सव बनाना होगा! *(पृष्ठ ४५ का शेष)*

मनुष्य ने ध्वनि-प्रदूषण को जन्म दिया है।

इन सबका प्रभाव भी मनुष्य के लिए हानिकारक ही है। जिस जल को वो पीता है, रोज हर काम के लिए इस्तेमाल करता है, उसने उसे भी प्रदूषित करके कई बीमारियों को न्योता दिया है, जैसे डायरिया, जौंडिस तथा कई अन्य, जिनके आम आदमी तो नाम भी नहीं जानता।

जिस वायु में वो प्रतिदिन सांस लेता है, जिसके सहारे वो जीता है उसने तो उसे भी प्रदूषित करके मौत का द्वार खोल दिया है। ध्वनि-प्रदूषण के कारण मनुष्य की श्रवण-शक्ति पर गहरा प्रभाव पड़ता है और दूसरी ओर वो तनाव का भी कारण बनता है।

मनुष्य इन सबके लिए दोषी है। वही संयम से प्रकृति को, खुद को बचा सकता है। जिस प्रकार साधारण मनुष्य गुंडों तथा हिंसक वृत्ति के धारक लोगों से भयभीत होता है उसी प्रकार वह प्रदूषित वातावरण से भी आतंकित रहता है। चिंता की बात तो यह है कि लालची तथा लापरवाह मनुष्य शुद्ध वातावरण का भक्षक बन गया है।

यदि हम चाहते हैं कि पर्यावरण हमें आतंकित न करे तो हमें पर्यावरण को बचाने के लिए कड़े कदम उठाने होंगे, पेड़ों की कटाई को रोक कर अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे; वन-महोत्सव को सिर्फ एक दिन या एक सप्ताह मनाकर नहीं भूलना होगा बल्कि प्रत्येक दिन को वन-महोत्व बनाना होगा। कारखानों से निकलने वाले धूएं को चिमनियों में फिल्टर करके बाहर छोड़ना चाहिए। खेतों में केमिकल्स का प्रयोग कम से कम करना चाहिए। हम वातावरण की अमूल्य सम्पदा की कम से कम बर्बादी होने दें। सोच-समझकर कदम उठाने चाहिएं। थोड़ी दूर जाने के लिए वाहन की जगह पैदल या साइकिल का प्रयोग करना चाहिए जिससे कि हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहेगा और हमारा पर्यावरण भी साफ-स्वच्छ रहेगा। सरकार को भी पर्यावरण साफ रखने के लिए कुछ कड़े कदम उठाने होंगे, जैसे पब्लिक वाहन सी. एन. जी. जैसे कम प्रदूषण करने वाले पदार्थों पर चलें। सभी कारखानों को अपनी सारी गंदगी को पहले ही ट्रीट कर बाहर फेंकना चाहिए ताकि किसी पर इसका कोई दुष्प्रभाव न पड़े। हम मानते हैं कि मनुष्य ने अपने कार्यों द्वारा बुद्धिमानता का परिचय न देकर मूर्खता की है, परंतु यदि कोई गलती करके उसका सुधार करे तो उसे भूला नहीं कहते।

वातावरण में फैले प्रदूषण जैसी बीमारी को हमें जड़ से उखाड़ फेंकना होगा ताकि जिस निर्मल वातावरण का निर्माण स्वयं ईश्वर ने किया है वो वैसे का वैसा ही रहे। हम सभी को एक ही संकल्प लेना चाहिए कि पेड़ लगाएं, पर्यावरण बचाएं और खुद को व आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित बनाएं।

ख़बरनामा

कशमीर में सिक्खों को धमकियां देना शरारती तत्वों का काम : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर। कशमीर में सिक्खों की जान-माल की सुरक्षा विश्वसनीय बनाए जाने सम्बंधी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ के नेतृत्व में शिरोमणि कमेटी के सदस्य स. रजिंदर सिंघ महिता, स. करनैल सिंघ पंजोली, बीबी किरनजोत कौर तथा सचिव स. दलमेघ सिंघ पर आधारित पांच-सदस्यीय शिष्टमंडल ने श्रीनगर में जम्मू-कशमीर के मुख्यमंत्री जनाब उमर अब्दुल्ला तथा अन्य राजनैतिक जत्थेबंदियों के प्रतिनिधियों से मिलकर विचारें कीं।

बातचीत का ब्यौरा देते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि मुख्यमंत्री जनाब उमर अब्दुल्ला से बातचीत के दौरान उनसे कशमीर में बसते सिक्खों की जान-माल की सुरक्षा विश्वसनीय बनाए जाने, सिक्ख नौजवानों को रोजगार मुहैया करवाए जाने तथा कशमीर में अल्प संख्या में होने के कारण वहां सिक्खों का 'अल्पसंख्यक कमीशन' गठित किए जाने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि यह भी मांग रखी गई कि सिक्ख परिवारों की कई बच्चियां दूर-दराज के क्षेत्रों में नौकरी करती हैं और उन्हें अपनी ड्यूटी पर जाने के लिए कई बसें आदि बदलनी पड़ती हैं, उनका तबादला उनके घरों के पास किया जाए ताकि वे दहशत भरे माहौल में अनावश्यक रूप से परेशान न हों। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने इस सम्बंधी उन्हें पूर्ण विश्वास दिलाया है। शिष्टमंडल ने कशमीर घाटी की मुस्लिम राजनैतिक जत्थेबंदियां--हुरियत कानफ्रंस (जी) के मुखी सैयद अली शाह गिलानी तथा हुरियत कानफ्रंस (एम.) के मुखी उमर फारूक मीरवाईज को भी मिलकर सिक्ख भाईचारे में पाई जा रही दहशत को दूर करने के लिए बातचीत की। इन जत्थेबंदियों के नुमाइंदों ने शिष्टमंडल को विश्वास दिलाया कि यह सब कुछ शरारती तत्वों की शरारत है, किसी मुस्लिम जत्थेबंदी द्वारा सिक्खों को धमकी दिए जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इन नुमाइंदों ने यह भी विश्वास दिलाया कि गुरुद्वारों एवं मस्जिदों के प्रबंधकों की तालमेल कमेटियां गठित कर आपसी प्यार को और भी गहरा किया जाएगा।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लेह लद्दाख में राहत सामग्री बांटी गई

अमृतसर। लेह लद्दाख में बादल फटने से आई भयानक बाढ़ के कारण पीड़ित लोगों की सहायता के लिए सिक्ख जगत की सिरमौर जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लगभग चालीस लाख रुपए की राहत सामग्री भेजी गई, जिसे शिरोमणि कमेटी के सदस्य तथा कृषिमंत्री पंजाब सरकार स. सुच्चा सिंघ लंगाह के नेतृत्व में शिरोमणि कमेटी के उच्चधिकारियों द्वारा वितरित किया गया। चावल, दाल, कंबल तथा गर्म कपड़ों आदि वाली राहत सामग्री बांटते हुए स. लंगाह तथा शिरोमणि कमेटी के सचिव स. जोगिंदर सिंघ ने बताया कि भारी मात्रा में

राहत सामग्री पीड़ित क्षेत्र में सभी वर्ग-संप्रदाय के लोगों को एक समान बांट कर शिरोमणि कमेटी ने 'सरबत्त का भला' चाहने वाली भावना का प्रगटावा किया है। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के अपर सचिव स. रूप सिंघ तथा स. सतबीर सिंघ भी उपस्थित थे।

सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड की मीटिंग में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड की मीटिंग गत १८ अगस्त को कलगीधर निवास सेक्टर २७-बी चंडीगढ़ में प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, चेयरमैन, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड की अध्यक्षता में हुई। मीटिंग में यह फैसला किया गया कि २०१४ में आ रही कामागाटामारू साके की शताब्दी सम्बंधी एक पुस्तक सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड द्वारा लिखवाई जाए तथा २०१४ में इस शताब्दी को मनाने के लिए शिरोमणि गु: प्र: कमेटी से निवेदन भी किया गया है। मीटिंग में भारत सरकार द्वारा 'नेशनल कमीशन फार हायर ऐजूकेशन एण्ड रीसर्च २०१०' बिल को पास करने के लिए किए जा रहे यत्नों का विरोध किया गया, क्योंकि यह बिल राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यकों की धर्म-भाषा एवं सभ्याचारक पक्ष से गैर-संवैधानिक है तथा लोगों के मौलिक अधिकारों पर हमला है। मीटिंग में इस बिल के विरोध में भारत के प्रधानमंत्री को पत्र लिखे जाने के लिए शिरोमणि गु: प्र: कमेटी को आग्रह किया गया। अन्य निर्णयों के अलावा भाई कान्ह सिंघ नाभा के १५०-वर्षीय जन्म दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम करने तथा सिक्ख कौम के महान जरनैल स. हरी सिंघ नलुआ सम्बंधी काव्य-वृत्तांत का संपादन करके छापने का फैसला भी लिया गया। मीटिंग में डॉ. किरपाल सिंघ चंडीगढ़, डॉ. दलबीर सिंघ, डॉ. प्रिथीपाल सिंघ (सदस्यगण), सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड के उपसचिव स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा, स. वरियाम सिंघ निदेशक श्री गुरु ग्रंथ साहिब खोज केंद्र, स. सिमरजीत सिंघ संपादक गुरमति प्रकाश-गुरमति ज्ञान तथा रीसर्च स्कालर स. चमकौर सिंघ उपस्थित थे।

श्री गुरु रामदास मेडिकल कालेज की छात्रा पंजाब में प्रथम स्थान पर आई

अमृतसर। बाबा फरीद यूनीवर्सिटी द्वारा जारी एम. बी. बी. एस. के पहले प्रोफेशन के परिणाम में "श्री गुरु रामदास इंसटीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज एंड रीसर्च, श्री अमृतसर" की छात्रा नीतू सिद्धू द्वारा ६०० में से ४८२ अंक प्राप्त करके पंजाब भर में प्रथम स्थान हासिल किया गया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने नीतू सिद्धू को मुबारकवाद देते हुए गोल्ड मेडल से सम्मानित किए जाने का ऐलान किया है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१०-२०१०